जीवन ज्योति

मिश्रीलाल आर्य

जीवन-ज्योति

॥ ओ३म् ॥

जीवन-ज्योति

निवेदक

मिश्रीलाल आर्य

सम्पादक एवं प्रकाशक :
आनन्दकुमार आर्य

सर्वाधिकार सुरक्षित :
आनन्दकुमार आर्य

प्राप्तिस्थान :
१. टाण्डा, जनपद-फैजाबाद
उत्तरप्रदेश, भारतवर्ष

२. ७७/१ ए, पार्क स्ट्रीट
कलकत्ता - ७०० ०१६
पश्चिम बंगाल, भारतवर्ष

प्रथम संस्करण : १९९१

मूल्य : पच्चीस रुपये

आभार :
राजेन्द्रकुमार आर्य
डा. नरेन्द्रकुमार आर्य
विजयप्रकाश आर्य
प्रदीप जायसवाल
सन्तप्रसाद आर्य

मुद्रक : कैप्स माइक्रोग्राफिकस् प्रा. लि.
८/२ किरण शंकर राय रोड
कलकत्ता - ७०० ००१
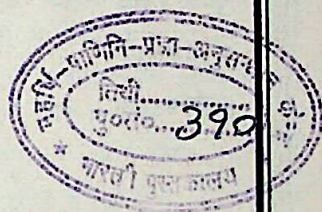
समर्पण

समस्त आर्यजनों को

स्व. मिश्रीलालजी आर्य : एक संक्षिप्त परिचय

पिता — स्व. गयाप्रसादजी आर्य

जन्मस्थान — टाण्डा, फैजाबाद, उत्तरप्रदेश

जन्मतिथि — क्वार सुदी तेरह, वि. सं. १९६०

पुण्य तिथि — पौष सुदी ग्यारह, वि. सं. २०४७

कार्यकलाप :

धार्मिक क्षेत्र —
- यज्ञ में अपार निष्ठा, स्थान-स्थान पर यज्ञशाला का निर्माण आर्यसमाज की स्थापना
- वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार की वीड़ा
- बाल-विवाह, छूआ-छूत, मृतकभोज आदि कुप्रथाओं का प्रवल विरोध
- शिक्षा के माध्यम से धर्म शिक्षा

सामाजिक क्षेत्र —
- निर्धन विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग एवं आश्रय
- सन्नयासिओं, महात्माओं, विद्वानों, का आदर
- आर्यसमाज के टाण्डा के विगत पाँच दशको से अधिक समय तक प्रधान

राजनैतिक क्षेत्र —
- स्वदेश-प्रेम, स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय योगदान
- जेल की यात्रा

शैक्षणिक क्षेत्र — शिक्षा से प्रेम,

सम्बन्धित संस्थाये :

- आर्यकन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, टाण्डा (फैजाबाद) — संस्थापक एवं प्रबन्धक
- दयानन्द बाल-विद्या मन्दिर टाण्डा — प्रबन्धक
- होवर्ट त्रिलोकनाथ इन्टरकालेज टाण्डा — संस्थापक सदस्य
- त्रिलोकनाथ महाविद्यालयटाण्डा — संस्थापक सदस्य
- जनता जूनियर हाईस्कूल टाण्डा — संस्थापक सदस्य
- कामता प्रसाद सुन्दरलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साकेत (फैजाबाद) — सस्थापक सदस्य
- श्री रामनारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय, फूलपुर, टाण्डा — कार्यवाहक प्रबन्धक
- गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम, रजौर, टाण्डा — मुख्याधिष्ठाता

श्रद्धा-निवेदन

पूज्यवर पिताजी के निधन के अभी ६ मास ही तो हुये हैं, सभी कुछ आँखों के सामने ही है । प्राण प्रलयन की उस घड़ी में उनके पास तो मेरी माताजी ही उपस्थित थीं जो धैर्य की प्रतिमा बनी सारी भावनाओं एवं स्मृतियों को अपने हृदय में संजोये व्यथित थीं । वियोग की उस वेला में उनकी सन्तानें भी तो स्थान की दूरी के कारण उनके अन्तिम दर्शन का सुयोग प्राप्त नहीं कर सकीं । इतनी शीघ्रता से अकस्मात यह सब कुछ हो जायेगा उसकी लेशमात्र भी आशंका नहीं थी अन्यथा पिताजी को एक पल के लिये भी छोड़ा नहीं जाता । १६ दिसम्बर १९९० को ही तो पिताजी को कलकत्ता के प्रसिद्ध चिकित्सक डा. मनीक्षेत्री से चेकअप कराके माताजी के साथ टाण्डा के लिये भेजा था और १४ दिसम्बर को पिताजी ने अपने कनिष्ठ पुत्र डा. नरेन्द्र को लन्दन के लिये दमदम हवाई अड्डे पर विदाई दी थी । दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने हेतु पिताजी ने ही तो मुझे आज्ञा दी थी कि सम्मेलन में अवश्य भाग लो, मैं जाने योग्य होता तो मैं भी अवश्य चलता । उनका आदेश शिरोधार्यकर मैं अपने परिवार तथा बहन के साथ २३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली आर्य सम्मेलन में सर्वात्मना सम्मिलित होकर पर्यटन की इच्छा से २६ दिसम्बर को जयपुर पहुँचा । २८ दिसम्वर को पिताजी की चिन्ताजनक अवस्था की सूचना टाण्डा से बाबू हरीरामजी द्वारा कलकत्ता और वहां से श्री सत्यप्रकाश एवं श्री विजयप्रकाश आर्य के माध्यम से दिल्ली में श्री ओमप्रकाश आर्य को प्राप्त हुई और उन्होने तत्काल हमें जयपुर में सूचित कर दिया । टाण्डा पहुँचने के लिये उचित साधन दिल्ली होकर ही उपलब्ध था अतः हमलोग सायम् २ बजे जयपुर बस स्टेशन पहुंच गये, वहीं पर समाचार प्राप्त हुआ कि पिताजी नहीं रहे । इस दुःखद समाचार से मैं स्तब्ध रह गया और जीवन में प्रथम बार प्रतीत हुआ कि मैं असहाय हो गया हूँ । पल भर बाद चेतना जाग्रत हुई और पैतृक परम्परा से प्राप्त आत्मबल के द्वारा मैंने अपनी मनःस्थिति को संभाला तथा उसके सहारे अपनी पत्नी बहन तथा बच्चों को सान्त्वना देता हुआ दिल्ली की कड़कती ठण्ड की अर्धरात्रि में प्रिय ओमप्रकाश के कीर्तिनगर स्थित निवास पर पहुंचा । पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार हमलोग हवाई जहाज से २८ को मध्याह्न १ बजे लखनऊ पहुंचे और वहां से प्राइवेट टैक्सी के माध्यम से टाण्डा सायं

६ बजे पहुंच गये । वहाँ के कारुणिक दृश्य का वर्णन तो मैं अन्यत्र करूंगा, किन्तु उपस्थित जनसमुदाय जिसमें कुटुम्ब, सम्बन्धी, स्वजन, बाल, वृद्ध, युवा, हिन्दू, मुस्लिम एवं सिक्ख सभी सम्मिलित थे और उस मनीषी, निश्छल, सत्यवादी सबके सुख-दुःख में सम्मिलित होने वाले दीन दुखियों के हितैषी, कर्मवीर, पथप्रदर्शक, अपने प्रिय नेता प्रधानजी को मौन प्रणाम कर रहे थे। पिताजी का पार्थिव शरीर वर्फ की सिल्लियों पर रखा हुआ था जिसमें लेशमात्र भी किसी प्रकार की विकृति परिलक्षित नहीं थी । मुख पर वही शान्ति, वही प्रभा विद्यमान थी मानो वह चिरनिद्रा में विश्राम कर रहे हों ।

३० दिसम्वर मध्यान्ह पूज्य पिताजी के पार्थिव शरीर को राजकीय अधिकारियों ने तोपों की गड़गड़ाहट के बीच तथा विशाल जनसमुदाय के साथ हम सभी ने विंदाई दी । वैदिक मन्त्रोच्चार पूर्वक वैदिक रीत्यनुसार अन्त्येष्टि का सम्पूर्ण कार्यक्रम पं. विश्वमित्र शास्त्री एवं पं. देवनारायण पाठक के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । स्थान दूरी की विवशता से मेरे दोनों लघुभ्राता प्रिय राजेन्द्र एवं नरेन्द्र उपस्थित नहीं हो सके अतः मुझे अकेले ही पूज्य पिताजी के पार्थिव शरीर को इस विश्वास के साथ अग्नि देनी पड़ी कि पिताजी मात्र अपनी सन्तानों के ही तो पिता नहीं थे, टाण्डा नगरी की प्रत्येक सन्तान उन्हें अपना पिता मानती थी, सभी को उनसे प्रेम था, आत्मीयता थी ।

पिताजी ने अपने जीवन काल में ही अपना जीवन परिचय टाण्डा के आर्य विद्वान पं. देवनारायण पाठक से लिपिबद्ध करवाया था उसको पूर्णता प्रदान कर पुस्तक रूप में छपवाने का दायित्व पिताजी ने मुझे ८ दिसम्बर को सौंपा था । उनकी अभिलाषा थी कि पुस्तक का प्रकाशन शीघ्र हो । मैंने पिताजी को आश्वस्त भी किया था कि उनके आदेश का पालन यथा शीघ्र होगा किन्तु २८ दिसम्बर को ही पूज्य पिताजी का देहावसान हो गया और हम सभी को उनका वियोग स्वीकार करना पड़ा । ईश्वरीय विधान के समक्ष हम सभी नतमस्तक हैं ।

'जीवन ज्योति' को प्रभविष्णु बनाने हेतु मैंने पिताजी के जीवन से सम्बन्धित अनेक लोगों को इस अनुरोध के साथ पत्र लिखा है कि वे हमें पिताजी के जीवन सम्बन्धी अपने अनुभूत; प्रेरक प्रसंगों को संस्मरणों के रूप में लिखकर भेजें । इस पुस्तक के प्रकाशन होने तक जितने भी संस्मरण मुझे प्राप्त हुये हैं उनको कुछ आवश्यक संशोधन के साथ प्रकाशित किया गया है। जिन महानुभावों के संस्मरण बाद में प्राप्त होंगे वह सभी धरोहर रूप·

में सुरक्षित रहेंगे और यथासम्भव अन्यत्र प्रकाशित किये जायेंगे । मैं सभी के प्रति आभारी हूं जिन्होंने अपना स्नेहपूर्ण सहयोग हमें प्रदान किया है ।

पाठक महानुभावों से विनम्र निवेदन के साथ अनुरोध है कि इस पुस्तक के प्रत्येक अंश को भाषा एवं व्याकरण की दृष्टि से न पढ़कर स्नेह एवं श्रद्धा से पढ़ेंगे तो निश्चय ही उन्हें सन्तोष होगा तथा पिताजी की भावना को आदर प्राप्त होगा जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अपने जीवन के कार्यों को जीवन ज्योति के नाम से प्रकाशित करने की मनःस्थिति बनायी थी । उनका उद्देश्य था कि उनके जीवनादर्श से वर्तमान तथा आगे आने वाली पीढ़ी लाभ उठा सकें तथा उस मार्ग का अनुसरण कर सके जिसके लिये वह जीवन-पर्यन्त संघर्ष, करते रहे हैं । अपने जीवन में वे कितने उत्साही,सिद्धान्तों के प्रति किस सीमा तक कट्टर एवं निष्ठावान, सर्वदा सत्य को ग्रहण करने वाले कर्मशील व्यक्तित्व के धनी थे इससे सभी अवगत हैं । उनके संपूर्ण प्रेरणाप्रद जीवन की घटनाओं का उल्लेख इस पुस्तक में आपको उपलब्ध होगा ।

इस पुस्तक के संपूर्ण भाग को आर्यजगत्‌के मूर्धन्य विद्वान् डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी ने ध्यान से पढ़ा है, उनका सुझाव सराहनीय है । जीवनज्योति को प्रकाशन के योग्य बनाने में कलकत्ता के आर्य सिद्धान्तों के विद्वान् शिक्षाशास्त्री डा.श्रीकान्त उपाध्याय जी ने अपना अमूल्य समय देकर पूर्ण मनोयोग एवं निरीक्षण के साथ इसकी त्रुटियों को यथासम्भव ठीक करने का अथक प्रयास कियाहै, उनका सहयोग एवं परामर्श श्रद्धा के योग्य है और मैं हृदय से उनके प्रति आभारी हूं ।

इस पुस्तक के प्रकाशन से पूजनीया माताजी को अवश्यमेव सन्तोष प्राप्त होगा । इस पुस्तक को उनके प्रति समर्पित करना उचित था किन्तु पिताजी की इच्छा के अनुसार उन सभी धर्मप्रेमी कर्मशील आर्यजनों को सादर समर्पित है जो जनसमुदाय को प्रेरणा प्रदान करेंगे ।

आप सभी महानुभावों का अपार स्नेह, सहयोग और सौजन्य ही मेरा जीवन-संबल है । इसी आशा और अक्षुण्ण विश्वास के साथ यह लघु जीवन ज्योति पुस्तक आप के कर कमलों में सादर समर्पित है ।

आपका

आनन्द कुमार आर्य

प्रदानं प्रच्छनं गृहमुपगते सम्भ्राम विधिः
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि चाप्युपकृतेः ।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभव साराः परकथाः
सतां केनोद्दिष्टं विषममसि धाराब्रत मिदम् ॥

गुप्तदान, घर आये हुए का आदर करना, उपकार करके चुप रहना, दूसरों द्वारा किए गये उपकार को सभा में कहना, सम्पत्ति रहने हुए गर्व न करना, दूसरों के कथा प्रसंग में उसके परभाव अथवा निन्दा का भाव न दिखाना आदि कठोर तलवार की धार पर चलना रुप असिधारा व्रत सज्जनों को किसने कहा है।

●

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानं
सर्वो जनः सुजनता मुपयाति तस्य ।
कृत्स्ना च भूर्भवति सन्नधिरत्न पूर्णा
यस्यास्पिूर्व सुकृतं विपुलं न रस्य ॥

जिस मनुष्य ने पूर्व जन्म में अत्यधिक पुण्य किया है, उसके लिए भयंकर बन भी राजधानी बन जाता है, समस्त लोग सज्जन हो जाते हैं। सारी पृथ्वी खजानों और रत्नों से भरी पूरी हो जाती हैं।

आत्म-निवेदन

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से आज मैं अपनी जीवन लीला के ८७वें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूँ । प्रभु ने मुझे सर्वेश्वर्यों से सम्पन्न बना रखा है । मेरा समस्त परिवार मेरे अनुरूप है । मेरे पुत्र, मेरे जीवन की लम्बी यात्रा में घटित घटनाओं एवं समस्यात्मक परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण संस्मरण-रूप में लिखने का अनुरोध करते आ रहे हैं । मेरे कनिष्ठ पुत्र प्रियवर डा. नरेन्द्रकुमार का विशेष आग्रह है कि आप अब विलम्ब न करके अपना जीवन परिचय लिखना अथवा लिखवाना प्रारम्भ कर दें जिसे मैं प्रकाशित करा दूं। आज नरेन्द्र के इच्छानुसार मैं भी अनुभव कर रहा हूं कि अपने जीवन में कृत कर्मों का एक संक्षिप्त विवरण लिख दूं जो मेरे परिवार एवं स्वजनों तथा समाज के लिये एक धरोहर बने । दीर्घायु तथा जरावस्था के कारण यह कार्य बिना सहयोगी के पूर्ण होना संभव नहीं था । अतएव मेरा ध्यान श्रद्धेय आचार्य पं. देवनारायण पाठक, एम. ए. बी. एड की तरफ गया जो मेरे जीवन के निकट एवं प्रिय सहयोगियों में हैं । उन्होनें मेरे आग्रह को सहर्ष स्वीकार कर लिया, और मेरे विचारों को मेरे अनुरूप लिपिबद्ध करने का कठिन कार्य उनेके द्वारा सम्पन्न होना संभव प्रतीत होने लगा । ईश्वर श्रद्धेय पाठकजी को दीर्घायु एवं सुन्दर स्वास्थ्य तथा बुद्धि प्रदान करें जिससे मेरी मनोकामना की पूर्ति में उन्हें सफलता प्राप्त हो सके ।

पाठकजी के प्रयास से, मेरे, पारिवारिक गृहस्थ जीवन एवं वंश परम्परा का उल्लेख प्रथम अध्याय में, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक कर्म क्षेत्र का वर्णन क्रमशः द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अध्याय में संभव हो सका है ।

मैं अभी ८६वें वर्ष में प्रवेश कर चुका हू । मैंने, अपनी स्मरण शक्ति एवं डायरी में नोट की हुई घटनाओं और तिथियों को सही रूप में प्रस्तुत करने का यथा संभव प्रयास किया है, और इस पुस्तिका में आज तक के वर्णन अंकित हैं ।

मेरी इस 'आत्म कथा' को प्रकाशित करने का अभिप्राय आगे आने वाली पीढ़ियों एवं परिवार को प्रेरणा प्रदान करना है । यदि लोग उन आदर्शों, कर्तव्यों से प्रेरणा ले सकेंगे और उसका अनुसरण करेंगे तो मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूंगा ।

इस पुस्तिका को क्रम बद्ध करके छपवाने का भार अपने ज्येष्ठ पुत्र आनन्द कुमार को सौंप रहा हूँ । इच्छा तो है कि इसका प्रकाशन मेरे जीवन में हो जाय, किन्तु यदि संभव नहीं हो सका, तब भी मुझे संतोष एवं विश्वास है कि मेरे पीछे भी यह मेरी इच्छा के अनुरूप ही होगा ।

इन्हीं शब्दों के साथ मेरी यह आत्म कथा सर्वात्मना सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ आप सबके समक्ष प्रस्तुत है ।

इति

मिश्रीलाल

टाण्डा, फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)
दिनांक : ६ दिसम्बर सन् १९९०

विषयानुक्रमणी

वंशानुक्रम

अध्याय – १

वंशानुक्रम

आज मुझे अपने पूर्वजों को स्मरण करने में जो आनन्दानुभव हो रहा है उसको शब्दों में व्यक्त करने में मैं स्वयं को असमर्थ पा रहा हूँ । अपने वंश क्रम में अपने पितामह स्वर्गीय श्री रग्घूरामजी साहु के जीवन परिचय के कुछ संस्मरण मस्तिष्क में हैं अस्तु मैं अपने वंश-वृक्ष का वर्णन उन्हीं देवस्वरूप पूज्य पितामह से ही प्रारम्भ करना समीचीन समझता हूं ।

स्व.रग्घूराम एक उदार, दानशील धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । पौराणिक परम्पराओं में उनका विश्वास था, वे परम शैव सनातनी थे । उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी, व्यापार में वह निपुण थे। अपने पुरुषार्थ से उन्होंने ग्राम पखनापुर को क्रय करके नानकशाही गद्दी (उदासीन आश्रम हज्जापुर-टाण्डा) के महन्त श्री शंकरदास को संकल्प किया था । समाज में उन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त थी, लोग उनको आदर और स्नेह की दृष्टि से देखते थे। पूजनीया दादीजी के विषय में कुछ भी स्मरण नहीं आ रहा है इसलिये यह कमी इस वंश -इतिहास की रहेगी । उन दिनों टाण्डा का मुख्य व्यवसाय कोरे कपड़े पर छपाई का था जिसे छींट कहा जाता था और वह माल, मुख्यतः नेपाल राज्य जो भारतवर्ष के उत्तर में स्थित एकमात्र हिन्दू-राष्ट्र है वहाँ जाता था, जहां उस माल की पर्याप्त खपत थी । व्यापार की सुविधा हेतु रग्घूरामजी ने नेपाल गंज में निजी दूकान भी खरीद ली थी, और सुचारु रूप से कारोबार चल रहा था ।

स्व. रग्घूरामजी के चार पुत्ररत्न थे –

१. श्री भगवान दास २. श्री रामदास ३. श्री नारायण दास तथा ४. श्री गयाप्रसाद ।

पितामह श्री रग्घूरामजी के निधन के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र एवं मेरे ताऊ श्री भगवानदास परिवार से पृथक हो गये । उनके दो पुत्र थे १. श्री महावीर प्रसाद साहु २. श्री महादेव प्रसाद साहु । मेरी ताई,

श्रीमती महादेवीजी कुशल गृहिणी, धार्मिक विचारों में आस्था रखने वाली नारी थीं। रघूरामजी के बाकी तीन पुत्र एक साथ रहते एवं व्यापार करते थे और तीनों उस समय के आर्यसमाज के ख्याति प्राप्त परम विद्वान् वेदज्ञ पं. तुलसीरामजी से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए थे तथा सन् १९१० ई. में आर्यसमाज मंदिर, टाण्डा के निर्माण हेतु तत्कालीन आर्यसमाज के मंत्री महाशय श्री बच्चूलालजी को एक सहस्र रुपये प्रदान किये थे । यही मेरठ निवासी पं. तुलसीरामजी आगे चलकर स्वामी तुलसीराम के नाम से विख्यात हुए थे।

श्री रामदासजी के तीन पुत्र थे १. श्री परमेश्वर दयाल उर्फ ओरीलाल २. श्री रूपचन्द ३. दीपचन्द आर्य ।

(१) स्व. श्री परमेश्वर दयाल के दो पुत्र-प्रथम श्री बृजमोहन उर्फ बिरजू बाबू जिनका स्वर्गवास ६0 वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से हो गया, उनके चार पुत्र हैं । द्वितीय श्री वीरेन्द्रकुमार उर्फ बिल्लू बाबू के कोई पुत्र नहीं है, एक पुत्री थी, जिसने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की थी उसके विवाह की तैयारी हो रही थी, किन्तु कालचक्र ने अपनी लीला दिखलाई और वह पुत्री कालगति को प्राप्त हो गई । एक मात्र पुत्रीके वियोग का प्रभाव निश्चित रूप से वीरेन्द्रजी पर पड़ा किन्तु उनमें ईश्वर तथा वेद के प्रति अगाध निष्ठा है और वे उसके अनुरूप आचरण करते हुए आर्य समाज के कार्यों में रुचि लेते हैं । वर्तमान में आर्यसमाज टाण्डा के उप प्रधान तथा दयानन्द बाल विद्या मन्दिर टाण्डा के अध्यक्ष हैं । उन दोनों भाइयों का परिवार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है तथा व्यापार में अच्छा स्थान प्राप्त है ।

(२) स्व. श्री रूपचन्दजी की समयान्तर से प्रथम पत्नी के इन्तकाल के पश्चात् दूसरी शादी हुई थी । दोनों से सन्तानें हैं और सभी अपना-अपना व्यापार, तथा जीवकोपार्जन कर रहे हैं । उनके तीन पुत्र श्री प्यारेलाल, श्री प्रकाश तथा श्री विजय प्रकाश हैं ।

(३) श्री दीपचन्दजी जिनका निधन कुछ समयपूर्व हो गया, सरल विचार के आर्य पुरुष थे । ईश्वर भक्ति तथा महर्षि दयानन्द के विचारों में अटूट प्रेम और श्रद्धा रखते थे । उनका भी दो विवाह हुआ था प्रथम पत्नी से ही सन्तानें हैं, उसकी मृत्यु के पश्चात् दूसरी शादी उन्होंने की थी, वह भी उनके समक्ष ही दिवंगत हो गयी थीं । उनके चार पुत्र, श्री प्रेमचन्द्र,

श्री मामचन्द्र, श्री त्रिलोकचन्द्र तथा श्री कैलाशचन्द्र । श्री त्रिलोकचन्द्र युवावस्था में ही वैराग्य धारण कर लिये बाकी उनके तीनों पुत्र, कानपुर में व्यापार करते हुये अपने परिवार को सुख के साथ चला रहे हैं ।

मेरे तीसरे ताऊ स्वर्गीय श्री नारायणदासजी के तीन पुत्र श्री सूर्यबलीजी, श्री गणेशलालजी तथा श्री मेवालालजी थे और तीनों ही स्वर्गवासी हैं ।

(१) श्री सूर्यबलीजी के दो पुत्र-प्रथम श्री विश्वनाथ प्रसाद (अविवाहित) जिनका निधन कुछ दिनों पूर्व हो गया । द्वितीय श्री महेन्द्र कुमारजी हैं जो अपने परिवार के साथ टाण्डा में निवास करते हैं । आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेते हैं तथा सामाजिक कार्यों में अपनी परवाह न करके तत्परता से लोगों के दुःख-दर्द में सम्मिलित होते हैं ।

(२) स्वर्गीय श्री गणेशलालजी के एक पुत्र श्री हरिनाथजी तथा उनके दो पुत्र प्रथम अशोक कुमार द्वितीय अभय कुमार हैं । अशोक कुमार एक योग्य, उत्साही, परिश्रमी युवक हैं जिन्होंने पूरे परिवार को संभाल कर रखा है तथा अपना व्यापार करते हैं। अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग हैं ।

(३) स्वर्गीय श्री मेवालाल के एक ही पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार थे, जिनका विवाह भी हुआ था, किन्तु ईश्वर के विधान के समक्ष किसी का वंश नहीं, और आज उनका वंश समाप्त प्राय है ।

(४) पूज्य पितामह श्री रग्घूरामजी के चतुर्थ पुत्र रत्न थे मेरे पूज्य पिता श्री गयाप्रसाद आर्य । आप प्रकृति से कट्टर, निष्ठावान, कर्मशील व्यक्ति थे, व्यापार में निपुण तथा ईमानदारी से अपना व्यवसाय करते हुये सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रुचि रखते थे । आर्यसमाज में श्री पं. तुलसीरामजी द्वारा प्रविष्ट हुये थे और उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा रचित अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन किया था और उनमें अटूट आस्था रखते थे । परस्पर के वार्तालापों में आप सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न अंशों का उद्धरण जो कि उन्हें कंठस्थ था, प्रस्तुत किया करते थे । वह अपना मार्ग दर्शक ऋषि दयानन्द को ही मानते थे । परिवार को बड़े ही संयम और धर्मानुकूल रीति से चलाने में सतर्क रहते थे । उनका विवाह-संस्कार श्रीमती झिनका देवी के साथ टाण्डा से ६ मील की दूरी पर स्थित फूलपुर ग्राम के सम्पन्न परिवार में हुआ था । मेरी पूज्या माताजी सरल,उदार प्रकृति की कुशल गृहिणी थीं, धर्म में उनकी अगाध आस्था थी तथा पिताजी के धार्मिक कार्यों में पूर्ण सहयोग

देती थीं । पिताजी को, आर्यसमाजी होने के कारण तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के कठोर उत्पीड़न को सहन करना पड़ा था। विशेष उल्लेखनीय है कि टाण्डा नगर में सर्वप्रथम मेरे पूज्य पिता श्री गयप्रसादजी ने ही अपने पिता श्री रघूरामजी का अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया था जिसके कारण जाति के आधार पर गठित समाज ने हमारे परिवार को बिरादरी से पृथक् कर दिया था । ऐसी-ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आप वैदिक सिद्धान्तों से जुड़े रहे और विरादरी की परवाह किये बिना आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द सम्मत वैदिक विचारों से पृथक नहीं हुये । पिता जी को उर्दु भाषा का अच्छा ज्ञान था, उर्दू भाषा में लिखित सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन उनकी दिनचर्या थी । उन्हें आयुर्वेद में बहुत विश्वास था, उन्होंने अनेक वैद्यक ग्रन्थों का अध्ययन किया था जिनमें चरक संहिता, सुश्रुत,वाग्भट्ट,माधव-निदान मुख्य हैं और उनके यह सारे ग्रन्थ आज भी परिवार में उपलब्ध हैं । पूज्य पिताजी का स्वर्गवास पूर्ण आयु प्राप्तकर मेरे विवाह के लगभग ६ वर्ष पश्चात् हुआ और उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुई थी ।

अपने माता-पिता से हम लोग पाँच सन्तान हुए –

१- श्री जियालाल आर्य २- श्रीमती मंगलादेवी
३- श्री मिश्रीलाल आर्य ४- श्रीमती शान्तिदेवी और
५- श्री हीरालाल आर्य

स्वर्गीय श्री जियालाल आर्य एवं उनके परिवार का संक्षिप्तवृत्तान्त

श्री जियालालजी हम सबके जेष्ठ भ्राता थे । आपका स्वभाव सरल, उदार एवं स्नेह शील था । आपके आचार-विचार में आर्यत्व था । व्यापार में निपुण थे तथा बड़ी लगन से उसका संचालन करते थे । उनका देहावसान ५४ वर्ष की आयु में २६ जून १९७५ को हो गया, उनका अत्येष्टिसंस्कार वैदिकरीत्यनुसार सम्पन्न हुआ था । उनका विवाह गाजीपुर में श्रीमती कमलेश्वरी देवी से हुआ था । दोनों का दाम्पत्य-जीवन सुखी था । मेरी भाभी का स्वभाव सरल था, पूरे परिवार की देख-रेख में उनकी रुचि थी । उनका स्वर्गवास कुछ समय पूर्व ९१ वर्ष की आयु में दिनांक १० फरवरी १९५३ को हुआ। उल्लेखनीय है कि भ्राताजी तथा भाभीजी का अन्त्येष्टि संस्कार आचार्य पं. देवनारायण पाठक के आचार्यत्व में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ । पितातुल्य

भ्राताजी को दो पुत्र और चार पुत्रियां प्राप्त हुईं जिनका विवरण इस प्रकार है –

१. श्री पन्नालाल आर्य २. श्री धर्मदेव आर्य ३. श्रीमती ज्ञानवती ४. श्रीमती शीला देवी ५. श्रीमती सत्यवती देवी ६. श्रीमती कृष्णा देवी ।

श्रीमती ज्ञानवती देवी अपने भाई बहनों में सबसे बड़ी थीं । उनका विवाह संस्कार देसरी (बिहार) में श्री हरिनारायण जायसवाल के साथ हुआ था, किन्तु उनकी जीवन लीला असमय में समाप्त हो गई । उनके एक ही पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका लालन-पालन टाण्डा में हुआ और उस बालक का नाम प्रकाशचन्द्र रखा गया जो प्रभु कृपा से आज एक योग्य होमियोपैथ डाक्टर है तथा अपने परिवार के साथ इलाहाबाद में रह रहे हैं । उनकी वहां पर अच्छी प्रैक्टिस है, गुण, कर्म, स्वभाव से उदार एवं सुशील है तथा सच्चे आर्य हैं ।

श्री पन्नालालजी की आयु वर्तमान में ६५ वर्ष की है उनका विवाह श्रीमती उर्मिला देवी से दिलदारनगर में हुआ । दोनों का दाम्पत्य-जीवन सुखी है उनके तीन पुत्र प्रिय मनोजकुमार, पंकज कुमार, संजय कुमार तथा दो पुत्रियां श्रीमती मृदुला तथा कु. वीना हैं । पूरा परिवार आर्य है तथा सभी अनुष्ठान वैदिक रीति से सम्पन्न होते हैं । वे अपना व्यापार करते हुये जीवकोपार्जन कर रहे हैं ।

श्री धर्मदेव की आयु ६0 वर्ष है । विवाह संस्कार फैजाबाद में श्रीमती स्नेहलता के साथ हुआ जो शिक्षित हैं और वर्तमान में शिक्षिका का काम कर रही हैं । उनको चार पुत्र हुए जिनमें प्रथम पुत्र का छोटी उम्र में निधन हो गया । भ्राताजी की दो कन्याओं श्रीमती शीला देवी तथा श्रीमती सत्यवती देवी अपने-अपने परिवार के साथ सुखी हैं । उनकी सबसे छोटी पुत्री कृष्णा देवी सुदीर्घ काल से टाण्डा में वैधव्य जीवन व्यतीत कर रही हैं उनकी दो पुत्रियां कु. सविता आर्या बी. ए. तथा कुमारी नमिता आर्या बी. ए. उनके साथ रहती हैं ।

श्रीमती मंगला देवी मेरी बड़ी बहन थीं जिनका निधन असमय में हो गया था । उनकी एक मात्र सन्तान सुशीला देवी हैं जिनका पालन-पोषण हमारे परिवार में हुआ तथा उनका विवाह-संस्कार बहराईच के एक लब्ध

प्रतिष्ठ आर्य परिवार में बाबू श्री मनोहरलाल वर्मा के साथ सम्पन्न हुआ। प्रिय मनोहरलालजी उत्तम विचार वाले कट्टर आर्यसमाजी हैं, उनका जीवन एक आदर्श जीवन है और उसी अनुरूप उन्होंने अपने परिवार को ढाला है। आयुर्वेद में उनके अनुभव तथा ज्ञान से जनता जनार्दन को बहुत लाभ मिलता है उनका व्यवसाय भी औषधियों का हैं जो स्वदेशी दवाखाना के नाम से बहराईच नगर में प्रसिद्ध है । मुझमें उनका अगाध प्रेम है तथा वर्मा जी मुझे अति प्रिय हैं ।

अपने माता-पिता की सन्तानों में क्रमानुसार मेरा तृतीय स्थान है, किन्तु, मुझें इस प्रसंग में अपने विषय में वर्णन करना अन्त में समीचीन प्रतीत होता है ।

श्रीमती शान्ति देवी और उनका परिवार

बहन शान्ति मेरे से छोटी है, स्वभाव से सरल, सुशील एवं कर्तव्य-परायण नारी हैं । उनका विवाह-संस्कार बलिया निवासी रईस बाबू बासुदेव प्रसाद के साथ हुआ था । दोनों का दाम्पत्य-जीवन सुखमय था । वासुदेव बाबू का निधन पांच वर्ष पूर्व हो चुका है । आपका परिवार धार्मिक विचारों में आस्था रखने वालों में है । इनके चार पुत्र और दो पुत्रियां हैं। सभी विवाहित हैं, सभी व्यवसाय में निपुण हैं, आपस में प्रेम और भ्रातृत्व की भावना भरी हुई है । श्री रामेश्वर प्रसाद उर्फ हरीश जी सबसे बड़े पुत्र हैं, उनका आचार-विचार आर्यत्व से परिपूर्ण है । द्वितीय श्री द्वारिका प्रसाद उर्फ भीम जी अव्वल दर्जे के व्यापारी हैं । तृतीय पुत्र श्री जगन्नाथ प्रसाद इन्जीनियरिंग पास हैं, और कारखाना खोलकर निजी काम करते हैं । चतुर्थ पुत्र श्री बद्रीनारायण एम. बी. बी. एस. डाक्टर हैं । दोनों पुत्रियाँ श्रीमती निर्मला एवं श्रीमती नर्वदा विवाहित हैं, दोनों के पति श्री छेदीलाल गुप्ता और श्री कृष्णदेव आर्य योग्य डाक्टर हैं । इस प्रकार बहन शान्ति का सम्पूर्ण परिवार दूध-पूत से सम्पन्न है ।

श्री हीरालाल आर्य एवं उनका परिवार

श्री हीरालाल आर्य मेरे कनिष्ठ सहोदर हैं । उनका जन्म आषाढ़ बदी पंचमी दिन सोमवार सम्बत् १९७० वि. में हुआ था । आपका अध्ययन गुरुकुल हरपुजान (बिहार) में हुआ था । आपका स्वभाव सरल है । सत्संग तथा वैदिक

सिद्धान्तों में निष्ठा है । आर्य विचारों के पोषक एवं ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति के समर्थक एवं अनुयायी हैं । आपका जीवन व्यवसायिक है । प्रायः कलकत्ता में पूरे परिवार के साथ निवास करते हैं, टाण्डा भी आते जाते रहते हैं । उनका विवाह चुनार (मिर्जापुर) में श्रीमती चम्पादेवी के साथ सम्पन्न हुआ था। आपको चार पुत्र एवं एक पुत्री है जो इस प्रकार हैं –

१. श्री वशिष्ट मुनि २. श्री देवेन्द्र कुमार ३. श्री राघवेन्द्र कुमार ४. श्री राजकुमार एवं पुत्री ५. श्रीमती सरोजनी देवी ।

सभी पुत्र व्यवसायी हैं, पुत्री सीतापुर में सम्पन्न परिवार में विवाहित है ।

इस प्रकार अपने पूज्य पिता स्व. श्री गयाप्रसादजी की सन्तानों का संक्षिप्त विवरण मैंने प्रस्तुत किया । मैं अपने को परम भाग्यशाली मानता हूं जो आज इतने बड़े परिवार का दर्शन पा रहा हूं । परमात्मा यह भरा-पूरा सुखी परिवार इसी प्रकार से जीवन पर्यन्त दिखाता रहे, यही मेरी मनोकामना है ।

मेरा जीवन और मेरा परिवार

इस समय प्रभु कृपा से मैं अपनी जीवन लीला के ८८ वें वर्ष में प्रविष्ट कर चुका हूं । मेरा जन्म सं. १९६० वि. आश्विन शुक्ला त्रयोदशी दिन सोमवार (सायम् चार बजे) को टाण्डा नगर में हुआ था । मेरा अध्ययन हिन्दी और उर्दू भाषा के माध्यम से हुआ और मैंने सन् १९१६ ई. में मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की । टाण्डा में शिक्षा ग्रहण का साधन सीमित होने के कारण मेरी शिक्षा अधिक नहीं हो सकी, किन्तु शिक्षा के प्रति प्रेम, लगाव और उसमें रुचि बराबर बनी रही ।

जब मातृभूमि दासता की श्रृंखला में जकड़ी पड़ी थी, मेरा जन्म भी उसी काल में हुआ था । मेरे जीवन पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा मेरे पिता पहले से ही देश-भक्त थे, परिवार में बराबर देश-चिन्तन की चर्चाएं होती रहती थीं, परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता की प्रवृत्ति मुझमें बचपन में ही उत्पन्न हो गई, और इसमें मेरी रुचि निरन्तर बढ़ती गई । सन् १९१६ में शिक्षा समाप्त होने के उपरान्त सन् १९१७ में देश की परतंत्रता के विरुद्ध

हृदय में क्रान्ति-भाव व क्रान्तिकारी विचार उत्पन्न हो गया, और मैं राजनीति में प्रविष्ट हो गया । पिताजी आर्यसमाजी थे ही इसी लिये महर्षि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों से प्रेम तथा उसमें निष्ठा होना स्वाभाविक था । मैंने सन् १९१७-१८ में ऋषि कृत अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन किया तथा अपने जीवन को उसके अनुरूप ढालने का व्रत लिया ।

मैं अपने जीवन के धार्मिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक कार्य क्षेत्र की विस्तृत व्याख्या आगे के अध्यायों में करूँगा ।

मेरा व्यावसायिक जीवन :

मेरे जीवन का एक पक्ष व्यवसाय से सम्बन्धित हैं जो संक्षेप में इस प्रकारहै —

मेरा जन्म टाण्डा नगर के एक उच्च व्यापारी परिवार में हुआ, पिताजी निष्ठावान धार्मिक, ईमानदार, वचन के धनी व्यवसायी थे ।छीट की छपाई का व्यवसाय पारिवारिक था । छीट नेपाल के पहाड़ की जनता एवं आसाम प्रदेश में पहनने में काम आती थी । अध्ययन की समाप्ति पर मैं अपने घर के व्यवसाय में भी पूरी तल्लीनता से रुचि लेता था तथा अपने व्यापारियों के यहां विराटनगर, नेपालगंज, बुटल, काठमांडू, दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, तिनसुकिया, डिब्रूगढ़ आदि नगरों में छोटी उमर से ही आता-जाता था । इससे जहां आर्थिक लाभ होता था वहीं पर जान-पहचान तथा ज्ञान में भी वृद्धि होती थी । मेरे व्यावसायिक जीवन का यह क्रम सन् १९७१ ई. तक चलता रहा ।

गृहस्थ जीवन में प्रवेश

मेरा विवाह-सम्बन्ध आर्य जगत् के विद्वान् उपदेशक पं. सहदेव शर्मा के माध्यम से, मोतिहारी, जिला चम्पारण (बिहार) निवासी एक प्रतिष्ठित जमींदार, समाज सेवी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं आर्य नेता बाबू श्री जगन्नाथ प्रसाद चौधरी की कनिष्ठा बहन के साथ होना निश्चित हुआ । चौधरीजी का परिवार भी आर्य समाजी और ऋषि दयानन्द में पूर्ण निष्ठा रखनेवाला था । सन् १९३२ में मेरा विवाह-संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार बिना किसी प्रकार के दहेज के पूज्य पं. गणेशदत्त शास्त्री के पौरोहित्य में रामप्यारी देवी

के साथ सम्पन्न हुआ । तत्कालीन एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं, वह इस प्रकार है — मेरे विवाह के समय ही ब्रिटिश प्रशासन का आदेश हुआ था कि मैं टाण्डा में एक माह आवास नहीं कर सकता और उसी समय जगन्नाथजी चौधरी को आदेश था कि वह मोतिहारी छोड़कर कहीं बाहर नहीं जा सकते । अस्तु मैं अपनी बहन शान्ति देवी के घर बलिया चला गया और बारात को मेरे बिना टाण्डा से लेकर पिताजी मोतिहारी पहुंचे। विवाह के पश्चात् मैं पुनः बलिया लौट गया और बारात पिताजी के साथ टाण्डा चली गयी । मैं बलिया से आसाम के विभिन्न स्थानों पर अपने व्यवसाय के निमित्त यात्रा करके निर्वासन अवधि की समाप्ति के पश्चात् टाण्डा पहुंचा।

टाण्डा पहुंचने के पश्चात् मैं आर्यसमाज एवं देश की सेवा में पूर्ववत् भाग लेता रहा । मेरा गृहस्थ-जीवन भी अत्यन्त सुखदायी एवं आदर्शमय रहा । मेरा घर सभी प्रकार के सुख साधनों से सम्पन्न था जैसा किसी संस्कृत के कवि ने कहा है —

अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च ।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी चविद्या,
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥ (विदुरनीति)

अर्थात् हे राजन् संसार के छः सुख हैं —

१. धन की प्राप्ति का सातत्य
२. सदा स्वस्थ रहना
३/४. प्रिय एवं मधुर बोलने वाली पत्नी
५. आज्ञाकारी पुत्र
६. लक्ष्य को सफल बनाने वाली विद्या

परम पिता परमात्मा की कृपा से मुझे गृहस्थ जीवन में सब कुछ की प्राप्ति हुई है । परिवार में अच्छा व्यंवसाय था, जिससे धन पर्याप्त था । मेरा स्वास्थ्य उत्तम था । मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी प्रिय तथा मधुरभाषिणी नारी हैं । मेरे पुत्र आज्ञाकारी हैं तथा परिवार का प्रेम और स्नेह मुझे प्राप्त है । मैं अपने लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्ण सफल रहा हूं ।

मेरी धर्मपत्नी का व्यक्तित्व एवं उनकी दिनचर्या

मेरी पत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी, शिक्षिता, सुसंस्कृत, सुशील, मृदुभाषी एवं कर्तव्यपरायणा नारी हैं । वे आदर्श आर्य नारी हैं । उनका गृहस्थ, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यावहारिक जीवन अत्यन्त मधुर, विनम्र, स्नेहयुक्त तथा त्यागमय है और नारी जाति के लिये अनुकरणीय है । आर्य परिवार की पुत्री होने के कारण आर्यसंस्कारों को अपने में धारण की हुई हैं । धार्मिक-संस्कारों के प्रति उनमें अगाध श्रद्धा है । राष्ट्रीय भावना भी उनमें कूट-कूट कर भरी है जिसका श्रेय उनकी जन्मस्थली बिहार प्रान्त को जाता है जिसने डा. बाबू राजेन्द्र प्रसाद जैसे रत्न भारत को दिये,जो भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति हुये तथा कुंअर सिंह ने तो अपना सर्वस्व भारत माँ की स्वतंत्रता के लिये समर्पित कर दिया था । मेरी पत्नी का हर प्रकार का सहयोग मुझे राष्ट्रीय, सामाजिक एवं आर्यसमाज संचालन में, मिला तथा उनका स्वयं का सक्रिय योगदान सराहनीय है । नारी जागरण, नारी उत्थान, नारी शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बहुत प्रयास किया है । वह "महिला आर्य समाज" की बहुत दिनों तक प्रधाना भी रही हैं ।

हमारा दाम्पत्य जीवन सुखमय रहा है । नित्य सन्ध्योपासना एवं दैनिक यज्ञ हमारे जीवन के प्रधान कर्म रहे हैं । प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर, ईश्वराराधना में लग जाते हैं । मैं नियमित रूप से प्रातः भ्रमण, अपने निवास से अपने बगीचे तक करता हूं उससे मेरा स्वास्थ्य ठीक रहता है, मन प्रसन्न रहता है । यज्ञ और भजन के उपरान्त वह मेरे अल्पाहार की व्यवस्था करती हैं । गृहस्थी के समस्त कार्यों का संचालन प्रायः स्वयं करती हैं । घर पर आये हुए मेहमानों, स्वजनों, साधु-सन्यासियों, महात्माओं एवं विद्वानों का आतिथ्य सत्कार करने में उनकी अगाध श्रद्धा है । रुचिकर भोजन तथा तरह-तरह के व्यंजन बनाना उनका शौक है । गरीबों के लिये उनके हृदय में दया है, बराबर अपने सामर्थ्य के अनुसार लोगों की सहायता करती रहती हैं । परिवार में सभी के प्रति अगाध प्रेम रखती हैं । परिवार में किसी भी प्रकार के कष्ट में स्वयं धैर्य रखती हैं तथा दूसरों को भी आश्वासन देती रहती हैं । इस प्रकार ऐसी जीवन-संगिनी को पाकर मैं अपने जीवन को धन्य मानता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हम दोनों का यह साथ चिरस्थायी बना रहे ।

मेरी सन्तानों का परिचय –

परम पिताजगदीश्वर की असीम कृपा से मेरे तीन पुत्र और दो पुत्रियां, इस प्रकार हैं –

१, श्री आनन्द कुमार आर्य
२. श्री राजेन्द्रकुमार आर्य
३. डा. नरेन्द्रकुमार
४. श्रीमती विद्योत्तमा देवी
५. श्रीमती राजकुमारी गुप्ता

मेरे सभी बच्चे मेरे अनुरूप हैं, सब आर्य सिद्धान्त के पोषक हैं । सब में मेरे प्रति श्रद्धा-भक्ति विद्यमान है, हम दोनों पति-पत्नी के प्रति सभी आज्ञाकारी हैं ।

मेरे ज्येष्ठ पुत्र आनन्द कुमार हैं, उन्होंने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की है, स्वभाव से सरल एवं मृदुभाषी हैं, अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहते हैं, तथा उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निभाने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं । हमारा व्यवसाय कलकत्ता महानगरी में भी है जिसे अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् आनन्दजी देखते हैं । उनका विवाह पटना निवासी श्री वृजनन्दनलाल उर्फ पूरन बाबू रईस की पुत्री श्रीमती मीना देवी के साथ ७ मार्च १९६४ को पं. गंगाधर शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ था । श्री पूरन बाबू पटना के व्यवसायी हैं, स्वभाव से सरल, हृदय से निर्मल तथा अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहने वाले व्यक्ति हैं । इनका पटना में एक उच्च स्तर का नर्सिंग होम है तथा औषधियों का व्यापार भी करते हैं। उनकी पत्नी श्रीमती रामादेवी एक सुशील, कर्त्तव्यपरायण गृहिणी हैं, पूरे परिवार की देख-भाल एवं उसका संचालन स्वयं करती हैं । उनके तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियां हैं, सभी में परस्पर प्रेम है । मेरे जीवन की एक घटना का उल्लेख करना यहां आवश्यक है वह इस प्रकार है – मुझे जून सन १९६४ ई. में पता चला कि मैं मधुमेह से पीड़ित हो गया हूँ । टाण्डा में चिकित्सा का उचित साधन नहीं होने के कारण मैं क्षय रोग से भी ग्रसित हो गया और स्थिति बिगड़ गई थी, उस अवस्था में, मैं, साथ में आनन्द, राजेन्द्र पटना गये। आनन्द बाबू बहू की विदाई कराके टाण्डा वापस गये और मैं, राजेन्द्र के साथ

वहां रूक गया तथा काफी समय पूरन बाबू के ही बंगले पर रहा, वहां अच्छे-अच्छे डाक्टरों से निदान हुआ । उन लोगों ने विशेषकर मेरी समधिन जी ने मेरी देख-रेख और सेवा-शुश्रूषा की सर्वथा समुचित सुव्यवस्था की जिसकी यहाँ प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता । यहां तक कि मुझे लाभ होने पर पूरन बाबू स्वयं मुझें टाण्डा पहुंचाने आये। विधि का विधान है कि मैं दुबारा सन् १९६६ में फिर से भयंकर रूप से रुग्ण हो गया और पुनः मैं पटना ले जाया गया, उस समय तो मेरे जीवन का अन्त ही नजर आ रहा था किन्तु पूरन बाबू के सारे परिवार ने मेरी सेवा करके मुझे जीवन दान दिया । इसके पश्चात् मैं बराबर पटना में इलाज में रहा । मेरी दोनों आँखों का ऑपरेशन भी पटना में ही हुआ । इस तरह मैं पूरन बाबू जैसा सम्बन्धी पाकर धन्य हूं, ईश्वर पूरन बाबू, उनकी स्त्री तथा उनके बच्चों को सुखी रखे, उनके परिवार के प्रति मेरी यही शुभ कामना एवं आशीर्वाद है ।

आनन्द बाबू जिनका उपनाम नन्दू बाबू है, उनकी पत्नी सौभाग्यवती मीना शिक्षित, सुशीला एवं गुणवती हैं । गृहस्थी के कार्यों में निपुण हैं, बच्चों की देखभाल तथा पढ़ाई-लिखाई में सजग रहती हैं, साथ ही सामाजिक विचारों की नारी हैं । नारी जागृति, नारी-उत्थान के लिये तथा दीन, दुखियों की सेवा में, लायन्स क्लब के माध्यम से सक्रिय भाग लेती हैं । दोनों का दाम्पत्य-जीवन सुखमय एवं आदर्श का है । आप दोनों को, प्रभु ने, दो पुत्र रत्न और दो पुत्रियां, प्रदान की हैं । उनके सभी बच्चे कलकत्ता के उच्च विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

मेरी प्रथम पौत्री का नाम मीता है उसने बी. काम. तक शिक्षा प्राप्त की है, अध्ययन में तीव्र बुद्धि वाली, सरल स्वभाव की मृदुभाषिणी लड़की है । उसका विवाह-संस्कार बड़ौदा (गुजरात) निवासी एक सम्पन्न-प्रतिष्ठित परिवार में उद्योगपति श्री चन्दूलाल जायसवाल के ज्येष्ठ पुत्र श्री जयेन्द्र जायसवाल के साथ कलकत्ता में पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार ३० एप्रिल १९८७ को सम्पन्न हुआ था । मैं उस विवाह में आशीर्वाद देने हेतु टाण्डा से कलकत्ता आया था, यह मेरा सौभाग्य ही था । शादी का सारा आयोजन बहुत ही सुन्दर रूप से हुआ था जिसे देखकर मेरा हृदय गद्गद् हो गया । बिटिया मीता को दो सन्तानें (कन्या) हुई हैं । प्रथम कन्या की सुन्दरता एवं हंसमुख स्वभाव के कारण उसका नाम लोगों ने खुशबू रखा । दूसरी कन्या भी वैसी ही सुन्दर है उसका नाम मोहिनी रखा गया । मुझे, ईश्वर ने दोनों प्रपौत्रियों को आशीर्वाद देने का अवसर प्रदान किया जिसके लिये मैं अपने को कृतार्थ समझता हूं ।

दूसरी पौत्री चि. ममता एक सुन्दर बालिका है । वह मृदुभाषिणी उत्तम स्वभाव वाली तथा गुणवती है । उसने बी. ए. आनर्स तक की उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की है । गृह-कार्यों में तथा सत्कार करने में पूरी रुचि लेती है । वह मुझे बहुत प्रिय है । मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि उसकी शादी मेरे सामने हो जाय, आगे प्रभु की इच्छा ।

नन्दू बाबू की तीसरी सन्तान मेरा पौत्र मनीष, सुन्दर एवं आज्ञाकारी है, अभी ग्यारहवीं कक्षा में अध्ययन कर रहा है, पढ़ने में तेज है, ईश्वर उसे बुद्धि तथा दीर्घायु प्रदान करें, जिससे भविष्य में वह अपने परिवार की मर्यादा का पालन करता हुआ अपने पूर्वजों परिजनो के नाम कों उजागर करे।

उनकी सन्तानों में अन्तिम सन्तान मेरा पौत्र अमिताभ है जो कि बहुत सरल स्वभाव का चंचल बालक है । अपनी मातृभूमि टाण्डा से उसे बहुत प्यार है । छुट्टियों में टाण्डा आता है तो मेरे पास काफी समय बैठता है, मेरा हाथ पकड़कर बगीचा घुमाने ले जाता है । मुझसे बहुत प्रेम रखता है, अभी कलकत्ता में नवीं कक्षा में अध्ययन कर रहा है । ईश्वर, उसे दीर्घायु करें तथा धन-धान्य से परिपूर्ण रखें ।

इस तरह मेरे प्रति सम्पूर्ण परिवार में स्नेह और प्यार है । आनन्द बाबू समय-समय पर तथा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर टाण्डा आते रहते हैं । मेरे अस्वस्थ होने का समाचार पाते ही तुरन्त मेरे पास आ जाते हैं और मेरी सेवा-शुश्रूषा तथा स्वास्थ्य सुधार में लग जाते हैं । वह अपने व्यवसाय से अधिक समाज के कार्यों में रुचि लेते हैं । कलकत्ता महानगरी में बड़ाबाजार में स्थित आर्यसमाज की भूमि जिसका मूल्य आज एक करोड़ रुपये के लगभग लोग बताते हैं उसे आततायियों से खाली कराने का श्रेय मेरे पुत्र आनन्द को है । इसके अतिरिक्त आर्य समाज कलकत्ता की शताब्दी में उनका सक्रिय सहयोग, डायमण्ड हार्वर रोड में डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल का निर्माण एवं उसकी स्थापना आनन्द बाबू की कार्यदक्षता के द्योतक हैं । आजकल वह प्रान्तीय स्तर की शिरोमणि "आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल" के महामंत्री हैं तथा सभा के भवन का नवनिर्माण करा रहे हैं । यह सब देखकर मेरा हृदय अति प्रसन्न एवं गद्गद् है । आर्यसमाज तथा उसके सिद्धान्तों में निष्ठा उनके अन्दर कूट-कूट कर भरी है, उनकी क्षमता तथा कार्यशैली को देखकर मुझे पूर्ण विश्वास एवं संतोष है कि मेरे परिवार के द्वारा आर्यसमाज का कार्य मेरें अनुरूप, भविष्य में भी होता रहेगा । ईश्वर आनन्द बाबू को दीर्घायु प्रदान करें, प्रभु से यही कामना है तथा मेरा आशीर्वाद सतत् उनके साथ है ।

मेरे द्वितीय पुत्र राजेन्द्र कुमार हैं । इनका स्वभाव सरल है तथा ये स्पष्टवादी हैं । इन्होंने बी.काम. एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की है किन्तु वकालत नहीं करके अपना व्यवसाय करते हैं तथा दक्षिण भारत में स्थित सालेम नगर में पारिवारिक व्यापार को संभालते हैं । सालेम में हिन्दी भाषी कम हैं किन्तु राजेन्द्र का प्रेम सबसे है और वहां पर अपनी दुकान पर ही आर्यसमाज का साप्ताहिक सत्संग लगाते हैं । आर्यसमाज के सिद्धान्तों में पूरी निष्ठा है और उसके अनुसार अपने परिवार का संचालन करते हैं। आर्यसमाज टाण्डा के प्रत्येक वार्षिकोत्सव पर सालेम से धन एकत्र करके टाण्डा भेजते हैं जिससे उत्सव के सम्पन्न होने में बहुत सहायता मिलती है। उनका विवाह-संस्कार टाण्डा से १२ किलोमीटर की दूरी पर फूलपुर निवासी स्व. श्री रामनारायण की पुत्री कु. नीला देवी के साथ कलकत्ता में ४ मार्च १९६६ को पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रमाकान्त शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ था । सौभाग्यवती नीला ने टाण्डा के आर्यकन्या इन्टर कालेज से शिक्षा प्राप्त की है । वह सौम्य स्वभाव वाली गृहिणी हैं । उसके पांच भाई और एक बहन है । सौभाग्य से उसकी माता जी का आशीर्वाद उसे प्राप्त है । उसके पांच भाई श्री सीताराम आर्य, श्री हरीराम आर्य, श्री राधेश्याम आर्य, श्री श्रीराम आर्य और श्री मनीराम आर्य हैं । सभी पूर्ण आर्य विचार के कट्टर आर्यसमाजी हैं ।

श्री सीताराम आर्य, आर्यसमाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता एवं आर्य समाज कलकत्ता, १९, विधान सरणी के प्रधान पद को सुशोभित कर चुके हैं । व्यवसाय के क्षेत्र में उन्होंने बहुत उन्नति की है तथा उनके प्रतिष्ठान नार्थ इण्डिया आटोमोवाइल्स को व्यावसायिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है । सीतारामजी बंगाल, उड़ीसा के बहुत सारी आर्य-संस्थाओं के प्रधान एवं अध्यक्ष हैं । टाण्डा आर्य कन्या इण्टर कालेज की प्रबन्ध समिति के भी अध्यक्ष हैं । उन्होंने अपने ग्राम फूलपुर में अपने पिता की स्मृति में — "श्री रामनारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय" सरकार से मान्यता प्राप्त, खोलकर उस क्षेत्र की जनता के लिए बहुत उपकार का काम किया है । ये आर्य संस्थाओं को खुल कर दान देते हैं । उनके ही अनुरूप उनके सभी भ्राता अपने व्यवसाय के साथ-साथ समाज के कार्यों को प्राथमिकता देते हैं । सारा परिवार कलकत्ता दिल्ली और फूलपुर में निवास करता है । सभी में प्रेम है । श्री हरीराम जी अकबरपुर स्थित व्यवसाय देखते हैं, मुझसे बराबर प्रेम तथा सम्पर्क रखते हैं । मुझे उनसे बहुत सहयोग मिलता है तथा मेरे दुःख-सुख में सदैव सम्मिलित होते हैं ।

श्री श्रीरामज़ी व श्री मनीरामजी भी मुझसे बहुत प्रेम रखते हैं तथा बराबर टाण्डा आते रहते हैं और आने पर मुझसे बराबर मिलते हैं ।

राजेन्द्र बाबू सपरिवार सालेम में रहते हैं । उनके एक पुत्र तथा दोपुत्रियां हैं सभी की शिक्षा-दीक्षा सालेम में ही हो रहीं है, उनके नाम इस प्रकार हैं –

कु. संगीता आर्या राजेन्द्र की सबसे बड़ी लड़की है स्वभाव से मृदु, हँसमुख तथा प्रिय है अध्ययन में तीव्र बुद्धिवाली है तथा बी. काम. तक शिक्षा प्राप्त करके गृहकार्य में दक्षता प्राप्त कर रही है ।

राजेन्द्र बाबू की दूसरी सन्तान उनका पुत्र सतीश कुमार मेरा सबसे बड़ा पौत्र है । वह अभी हायर सेकेन्ड्री फाइनल में अध्ययन कर रहा है। पढ़ने में रूचि लेता है तथा अभी वर्तमान में अपने पिता के काम में भी हाथ बँटाता है । स्वभाव से सज्जन है, सबका आदर करता है तथा सभी से प्रेम रखता है ।

उनकी तीसरी सन्तान कु. एकता है जो बहुत ही मधुर भाषिणी है अध्ययन में मन लगाती है किन्तु शरीर से कमजोर है । स्कूल की छुट्टियों होने पर मुझसे मिलने सभी आते हैं, तथा सभी को मुझसे प्रेम है ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि चि. राजेन्द्र उनकी पत्नी एवं तीनों बच्चे स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहकर अपना जीवीकोपार्जन करें तथा दीर्घायु को प्राप्त करें।

मेरे तृतीय पुत्र डा. नरेन्द्र कुमार हैं । उन्होंनें एम.बी.बी.एस. लखनऊ सें, एम.एस. पटना से विश्व प्रसिद्ध हड्डी के सर्जन डा. बी. मुखोपाध्याय के निर्देशन में तथा एफ. आर.सी.एस. लन्दन से पास किया है ।वह हड्डी के कुशल सर्जन हैं । सन् १९७४ में नरेन्द्र इंगलैंड गये वहां हॉस्पिटल में नौकरी करते थे तथा एफ. आर. सी. एस. की तैयारी भी करते थे । उनका विवाह-संस्कार कलकत्ता निवासी प्रतिष्ठित सम्पन्न परिवार में बाबू श्री तपसीप्रसाद जायसवाल की तृतीय पुत्री कु. शमा के साथ पूर्ण वैदिक रीति से प. उमाकान्त उपाध्याय के आचार्यत्व में फेब्रुअरी १९७३ में सम्पन्न हुआ था । तपसी बाबू का निधन हृदयगति रुक जाने के कारण हो गया। नरेन्द्र कुमार अपने परिवार के साथ यू. के. में रहते हैं । प्रायः प्रतिवर्ष भारत आते हैं तथा हमारे पास रहते हैं, उनकी श्रद्धाभक्ति मां-बाप के प्रति 'सरहनीय है। आपकई वर्ष सऊदी अरब

में भी प्रैक्टिस कर चुके हैं । अब वर्तमान में अपना निजी मकान खरीदकर इंगलैंड के शहर मटन कोल्डफील्ड (वैस्ट मिड्लैण्ड) में स्थायी रूप से परिवार के साथ निवास करते हैं, उनका दाम्पत्य-जीवन सुखमय है ।

मेरे जीवन से सम्बन्धित उस घटना का उल्लेख करना समीचीन प्रतीत होता है जब मैं १९६९ में भयंकर रूप से बीमार था और इलाज के लिये पटना ले जाया गया था उस समय नरेन्द्र का एम.बी.बी.एस. के अध्ययन का अन्तिम वर्ष चल रहा था किन्तु पढ़ाई की परवाह न करके वह पटना आ गया और एक माह से अधिक मेरी सेवा में रात-दिन लगा रहा उससे मेरे उपचार में जो मदद मिली और जिसके कारण मुझे उस समय जीवनदान मिला उसके लिए रोम-रोम से उसे हार्दिक आशीर्वाद है तथा मुझे लगता हैं कि मेरी सेवा-शुश्रूषा करके वह अपने पितृ-ऋण से पिता की ओर से सर्वथा उऋण हो गया । मेरी हार्दिक इच्छा है कि डा. नरेन्द्र कुमार भारत में रहकर यहां की जनता की सेवा करें, भारत में योग्य डाक्टरों की कमी है उनके यहां रहने से हम लोगों को भी प्रसन्नता होगी । डा. नरेन्द्र को तीन पुत्रियां हैं।

कु. प्रियंका का जन्म कलकत्ता में हुआ था । बहुत ही सौम्य स्वभाव की सुन्दर बालिका है वह कई वर्ष तक कलकत्ता में रहकर पढ़ी है अभी सन् १९८७ से लगातार इंग्लैंड में रह रही है ।

कु. नवीनता तथा कु. श्रद्धा का जन्म यू. के. में हुआ, मेरी पत्नी कु. नवीनता के जन्म के समय नरेन्द्र के पास इंगलैंड गई थीं । अपनी मां से उनको बहुत प्रेम है ।

चि. नरेन्द्र के तीनों बच्चे बहुत प्रिय हैं । इधर तीन वर्षों से चि. शमा एवं बच्चे भारत नहीं आये किन्तु इस अवधि में नरेन्द्र तीनाबार - चि. मीना की शादी में, दूसरे चि. आनन्द कुमार के पेट के आपरेशन में बम्बई तथा तीसरे अभी १९९० में आकर मेरे पास एक माह रहे । परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि डा. नरेन्द्र एवं उनके परिवार को दीर्घायु करे और सभी प्रकार के ऐश्वर्य से परिपूर्ण रखे तथा जहां भी रहें जनता जनार्दन की सेवा करते हुये अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहें ।

मेरी पुत्रियों में श्रीमती विद्योत्तमा देवी बड़ी हैं उसका विवाह-संस्कार कलकत्ता निवासी प्रतिष्ठित बाबू श्री गंगा प्रसाद साव के तृतीय पुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद के साथ १६ जून १९६२ को टाण्डा में वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ

था । दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखी है । मेरे दामाद राजेन्द्र बाबू बहुत ही सीधे-सादे सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं, निजी जमीन में कलकत्ता में उनका कारखाना है। वह अपने परिवार के साथ कलकत्ता में रहकर जीवन यापन कर रहे हैं । चि. विद्योत्तमा गृह-कार्य में दक्ष है, अपनी गृहस्थी को ठीक से चला रहीं हैं, मुझसे, उसे बहुत प्रेम है । उसके ३ पुत्रियां एवं एक पुत्र है, सभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

मेरी प्रथम नतिनी कु. रश्मि सौम्य स्वभाव की सुन्दर कन्या है, उसने बी. काम. तक शिक्षा प्राप्त की है । गृह-कार्य में दक्ष है मुझे उसकी शादी की चिन्ता है देखें ईश्वर मेरी जिन्दगी में वह दिन दिखाता है या नहीं ? वैसी लड़की जिस घर में जायेगी वही घर सुखी रहेगा । मेरा आशीर्वाद उसके साथ है ।

दूसरी नतिनी कु. ऋनि उसका उपनाम डाली है सीधी-सादी लड़की है । वह वचपन से मेरे पास ही रहती है । उसका अध्ययन टाण्डा, लखनऊ हुआ है, मेरी इच्छा थी कि वह डाक्टर वनती किन्तु ईश्वर को मंजूर नहीं था और वह डाक्टर तो नहीं वन सकी किन्तु मेरी अभिलाषा है कि वह अपने जीवन में कुछ वन जाती । लखनऊ से बी.ए. करके कम्प्यूटर का कोर्स सीख रही है । ईश्वर उसे सद्बुद्धि प्रदान करें, जिससे वह अपने जीवन को सार्थक वना सके ।

तृतीय नतिनी कु. सोनी मृदुभाषिणी है तथा अध्ययन में विशेष रुचि रखती है । बी. काम. करके कम्प्यूटर का कोस कलकत्ता में कर रही है । वह एक जिम्मेदार लड़की है, वह अपने जीवन में सफल रहेगी ऐसा मेरा विश्वास है ।

चि. विद्योत्तमा का एक पुत्र और मेरा एक मात्र नाती चि. सौरभ कुमार सीधा-सादा चंचल प्रवृत्ति का बालक है, अभी कक्षा आठ में अध्ययन कर रहा है ।

ईश्वर, विद्योत्तमा तथा उसके परिवार को दीर्घायु करें तथा सभी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहें । मेरा सभी को आशीर्वाद है ।

मेरी अन्तिम सन्तान श्रीमती राजकुमारी है । उसने एम.ए. तक लखनऊ विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है । बहुत ही भोली-भाली निश्छल स्वभाव

की महिला है, उसमें अभी बाल-बुद्धि जैसी बुद्धि है, पूरे परिवार से उसको प्रेम है । सबके दुःख-सुख में सम्मिलित होती है । उसका विवाह संस्कार जौनपुर निवासी अलंकार के प्रमुख व्यवसायी सम्मानित परिवार में बाबू राधेश्याम गुप्त के द्वितीय पुत्र डा. रमेशचन्द्र गुप्त एम.बी.बी.एस. एम.एस. (आर्थोपेडिक) के साथ २५ फरवरी १९७० को वैदिक रीत्यनुसार टाण्डा में सम्पन्न हुआ था । हमारा सारा परिवार इस शादी से अति प्रसन्न था, किन्तु विधि का विधान, तथा उस लड़की का भाग्य जिसे पारिवारिक सुख नहीं प्राप्त हुआ, जिससे हमारा सारा परिवार दुःखी है । मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वे मेरे दामाद डा. रमेश को सुबुद्धि प्रदान करें, जिससे मैं अपने एकमात्र इस दुःख से शान्ति प्राप्त कर सकूं । मेरा आशीर्वाद उन दोनों के सुखी-जीवन के साथ है । चि. राजकुमारी टाण्डा के समीप रहती है अतः हमलोगों के सुख-दुःख में तुरन्त उपस्थित हो जाती है और हम लोगों को उससे बहुत सहारा मिलता है । अपनी माताजी का वह विशेष ध्यान रखती है ।

इस तरह मेरी सभी सन्तानें मेरे अनुरूप हैं और सभी का हम पति-पत्नी के प्रतिपरम स्नेह एवं श्रद्धा है । हम लोगों की समस्त शुभ-कामनाएं एवं आशीर्वाद अपने पुत्रों तथा पुत्रियों एवं उनके परिवार के साथ है । परमात्मा मेरे सभी बच्चों को दूध-पूत से सम्पन्न रखे तथा सभी शतायु हों, यही मेरी हार्दिक कामना है ।

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा है कि आज ८८ वर्ष की आयु में भी मैं नित्य सन्ध्योपासना, यज्ञ करता हूं तथा समाचार-पत्र आदि पढ़ लेता हूं, अभी भी आर्य समाज तथा स्कूल के कार्य में अपने को व्यस्त रखता हूं, और मेरा सौभाग्य है कि मेरी धर्म पत्नी जी मेरे जीवन में अपना पूर्ण योगदान करती चली आ रहीं हैं । इन शब्दों से पूर्ण शान्ति एवं विश्वास के साथ मैं अपने जीवन के प्रथम अध्याय को यहीं पर समाप्त करता हूं ।

धार्मिक-कार्यक्षेत्र

अध्याय - २

धार्मिक-कार्यक्षेत्र

प्रथम अध्याय में प्रसंगवश मेरे जीवन की धार्मिक मान्यताओं का वर्णन हुआ है, उसके अनुसार मेरे पितामह श्री रग्घूरामजी तथा मेरे पिताश्री गयाप्रसाद जी कट्टर आर्यसमाजी थे और उन्हें उस समय की जातीय, सामाजिक व्यवस्था की विषम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, किन्तु पिताजी अडिग रहे, और उनके वैदिक संस्कारों का प्रभाव हमारे पूरे परिवार पर छा गया । परिवार में सन्ध्योपसना, यज्ञ, ऋषि दयानन्द प्रणीत संस्कारविधि के अनुसार नित्य होता था तथा अन्य संस्कार समय-समय पर वैदिक विद्वानों के द्वारा सम्पन्न होते थे । मेरी आस्था बाल्यकाल से ही कर्मकाण्ड में थी । ईश्वर की महती कृपा से आज ८८ वर्ष की आयु में भी उसी निष्ठा एवं विश्वास के साथ मेरी पत्नी और मैं, नित्य सन्ध्योपासना और यज्ञ करते आ रहे हैं । परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है इस कर्म को नित्य करने की शक्ति प्रभु मेरे जीवन पर्यन्त मुझको प्रदान करता रहे । कर्मकाण्ड के प्रति आस्था मेरे सम्पूर्ण परिवार की धरोहर है ।

मेरे धार्मिक कार्यों की जननी आर्यसमाज है । आर्यसमाज जैसी पावन संस्था जिसके सिद्धान्तों ने मेरे जीवन को प्रभावित किया है तथा दिशा प्रदान की है, वह आर्यसमाज क्या है ? तथा उसकी क्या मान्यतायें हैं ? इसकी विवेचना संक्षेप में करना आवश्यक है जो कि मेरे मतानुसार इस भाँति है —

आर्यसमाज न धर्म है और न सम्प्रदाय । आर्यसमाज मतमतान्तरों से परे वेदानुकूल मानव धर्म के मूल एवं सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करनेवाली एक क्रान्ति है, एक आन्दोलन है, जिसका मूल स्रोत वेद है । वेद सृष्टि के आदि में चार ऋषियों के हृदयाकाश में प्रकाशित ईश्वर प्रदत्त शाश्वत-ज्ञान है । "वेद" सनातन हैं । जिस प्रकार भौतिक बाह्य जगत् को सूर्य प्रकाशित करता हैं उसी प्रकार मानव के आध्यात्मिक जीवन को वेद

प्रकाशित करते है, जैसे सूर्य के अस्त हो जाने पर संसार अंधकारयुक्त हो जाता है उसी प्रकार वेद से विमुख होने पर मानव अज्ञान के अँधेरे में लुप्त हो रहा था, सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही थी, अविद्या, अन्याय का ताण्डव नृत्य को रहा था । प्रमाद, आलस्य एवं स्वार्थ का बोलबाला था, जिसका परिणाम भयंकर विध्वंसकारी महाभारत का युद्ध हुआ ।

'महाभारत' युद्ध के पश्चात् विश्व में जो विघटनकारी तत्व उत्पन्न हुये उनमें पुराणों का प्रमुख स्थान है और उससे असंख्य मतवादों ने जन्म लिया। संसार में भेदभाव, रागद्वेष, संकीर्णता, घृणा, अस्पृश्यता, अन्याय, दुर्व्यवहार, चरित्रहीनता एवं मनोविकार उत्पन्न होना, धर्म के बिगड़े रूप का ही फल है । वैदिक ऋषियों ने जहां मानवजाति के विकास एवं उत्थान के मूलाधार 'वर्णाश्रम व्यवस्था' का आधार गुण, कर्म और स्वभाव को माना था वहां इन मतवादियों ने जन्म को आधार मान लिया और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र जन्म से माने जाने लगे । अस्तु मानव समाज में ऊंचनीच अस्पृश्यता आदि दोष उत्पन्न हो गये तथा समाज कुरीतियों से पीड़ित हो गया। सम्पूर्ण देश राजा-महराजों, रियासतों में बंटा हुआ था, सभी में आपसी मतभेद चरमसीमा पर था जिसका लाभ ब्रिटिश अंग्रेजी सरकार ने उठाया तथा व्यापार की दृष्टि से भारत में पदार्पण करके सम्पूर्ण भारत के शासक बन बैठे । अंग्रेजों ने भी हमारी बची खुची संस्कृति और सभ्यता को जी भर के रौंदा, क्रूरता तथा बर्बरतापूर्ण ढंग से शासन किया । ऐसी विकट स्थिति में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ । इन्हीं कुरीतियों एवं अवैदिक मान्यताओं को समाप्त करने और जन-जन में वैदिक ज्ञान-गंगा को उसके विशुद्ध रूप में प्रवाहित करने के लिये ऋषि ने, आज से लगभग ११६ वर्ष पूर्व-चैत्र शुक्ला पंचमी सम्वत् १९३२ वि. शनिवार तदनुसार १० एप्रिल १८७५ ई. को बम्बई नगर के गिरगांव मुहल्ले में डा. माणिकराव जी की वाटिका में सायं ५ बजे यज्ञोपरान्त आर्य समाज नामक संस्था को स्थापित किया ।

महर्षि ने आर्यसमाज के उद्देश्य एवं सिद्धान्त किसी देशकाल विशेष के लिये नहीं बनाये । वह एक दूरदर्शी महात्मा थे, उनके मस्तिष्क में सम्पूर्ण जगत् के मानव मात्र के कल्याण की परिकल्पना थी उन्होंने कृण्वन्तो-विश्वमार्यम् का उद्घोष दिया सम्पूर्ण जगत को आर्य यानी श्रेष्ठ बनाओ । इस तरह आर्यसमाज एक विश्वजनीन एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना, तथा संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना । आर्यसमाज की

दृष्टि से समन्वय । केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये । आर्यसमाज के नियम एवं सिद्धान्त आज के भौतिक विज्ञान के युग में भी अकाट्य हैं । आर्यसमाज विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, रूढ़िवादिता, जातिवाद एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिये कृत-संकल्प है ।

आर्य समाज टाण्डा : एक परिचय

आर्य-समाज टाण्डा (फैजाबाद) को स्थापित हुये ९८ वर्ष हो गये हैं और इसका स्वयं का अपना एक इतिहास है । इस अवधि में, इस समाज के द्वारा, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो अद्भुत एवं उल्लेखनीय कार्य हुये हैं, उस पर प्रकाश डालने के लिये अलग से एक ग्रन्थ लिखे जाने की आवश्यकता है, किन्तु यहां पर मैं आर्य समाज टाण्डा का एक लघु परिचय अपनी स्मृति के अनुसार देना समीचीन समझता हूं ।

आर्य समाज टाण्डा के प्रारम्भिक इतिहास के पृष्ठों में मेरे ताऊ स्व. श्री रामदासजी आर्य का नाम अपने सुकृत्यों के लिये अमर रहेगा जिन्होंने एक हजार की धनराशि देकर सन् १८१० ई. में आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया था । उनकी प्रेरणा के स्रोत थे पं. तुलसीराम तथा भजनोपदेशक श्री भजनानन्द । उन्हीं विद्वानों के उपदेशों से प्रभावित होकर स्व. महाशय बच्चूलालजी आर्यसमाज में प्रविष्ट हुये थे और उन सबकी प्रेरणा एवं कर्मठता का फल है आर्यसमाज टाण्डा, जिनके महान उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता आर्यसमाज की उन महान् विभूतियों का संक्षिप्त वर्णन अगले पृष्ठों में करूंगा ।

आर्य समाज टाण्डा द्वारा मानव के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं । पर्वों को उनकी महत्ता एवं मर्यादा के अनुरूप मनाया जाता है जिनमें-रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन, विजयादशमी, दीपावली, होलिकोत्सव तथा शिवरात्रि (बोधरात्रि) प्रमुख हैं, तथा प्रीतिभोज का आयोजन किया जाता है जिसका व्यापक प्रभाव जन-समाज पर पड़ता है । समाज में व्याप्त कुरीतियों का खण्डन एवं वैदिक परम्परा का दिग्दर्शन कराना इस समाज का मुख्य कार्य है । शुद्धि-आन्दोलन का कार्य इस समाज की प्राथमिकता है, अनेकों लोग शुद्ध होकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुये हैं तथा आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का

प्रचार-प्रसार कर रहे हैं ।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज टाण्डा द्वारा नारी-जागरण एवं नारी उत्थान के लिये किया गया कार्य आर्यजगत् के लिये अनुकरणीय है । टाण्डा में लगभग ४५ वर्ष पूर्व कन्याओं के लिये एक पाठशाला की स्थापना हुई थी, जोकि आज इन्टरमीडियेट कालेज के रूप में विद्यमान है और जिसमें आज २७00 कन्याएँ जिनमें हिन्दू-मुस्लिम तथा सिक्ख समुदाय सभी सम्मिलित हैं, शिक्षा ग्रहण कर रही हैं । टाण्डा नगर को, कन्याओं के इस विद्यालय का श्रेय आर्यसमाज को ही है-जिसकी विशेपता है कि यह कालेज आर्य सिद्धान्तों के अनुकूल नित्य प्रार्थना, साप्ताहिक सामूहिक यज्ञ तथा सत्संग एवं धार्मिक शिक्षा के साथ निरन्तर देश एवं मानव जाति की सेवा में अग्रसर है । विद्यालय का अनुशासन एवं परीक्षाफल समूचे प्रदेश में अपना स्थान रखता है । इस विद्यालय को स्थापित करने एवं उसका संचालन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है, तथा प्रारम्भ से आज तक सभी बन्धुओं एवं विद्यालय परिवार के सहयोग से उसका प्रबन्ध-कार्य देखता चला आ रहा हूं । एक तरफ जहां बालिकाओं के उत्थान के लिये आर्यसमाज प्रयत्नशील है वहीं दूसरी तरफ नन्हें-मुन्ने बालकों के लिये आर्य समाज मंदिर परिसर में ही दयानन्द बाल-विद्या मंदिर के नाम से एक विद्यालय मेरी ही देख-रेख में, चल रहा है । इसके अतिरिक्त टाण्डा से ५ किलोमीटर दूरी पर वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल रजौर स्थित है जिसके मुख्याधिष्ठाता (व्यवस्थापक) के रूप में मैं लगभग २५ वर्षों से उस संस्था से जुड़ा रहा और अभी तीन वर्ष पूर्व अपने स्वास्थ्य के कारण उससे मुक्त हुआ हूं । इस तरह शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज टाण्डा की देन इतिहास के पन्नों में अविस्मरणीय रहेगी ।

आर्यसमाज टाण्डा द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार निरन्तर हो रहा है, साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से आर्यसमाज मंदिर में होता है। वार्षिकोत्सव अपने निश्चित समय से प्रतिवर्ष होता आ रहा है जिसकी ख्याति दूर-दूर तक हुई । आर्यसमाज टाण्डा का सौभाग्य है कि उसे प्रारम्भ से श्री बच्चूलालजी, श्री कन्हैयालाल चौधरी जैसे अध्ययनशील वाक् पटुता के धनी एवं कर्मठ मन्त्री प्राप्त हुये थे और वर्तमान में भी श्री विज्ञमित्र शास्त्री जैसे विद्वान आर्यसमाज टाण्डा के मंत्री हैं जिनकी देख-रेख में आर्यसमाज के सारे कार्यक्रम पूरी गति के साथ सुचारु रूप से चल रहे हैं । टाण्डा नगर के निवासी आर्यसमाज के प्रति श्रद्धावान हैं । समाज के अधिकारी एवं सदस्यों में सामंजस्य है तथा समाज के सभी कार्यों के प्रति सबमें पूरी श्रद्धा एवं भक्ति

है । सभी के प्रेम एवं सहयोग के आधार पर मैं आर्य समाज टाण्डा के विभिन्न पदों पर रहते हुये लगभग ५० वर्षों से निरन्तर प्रधान पद का कार्यभार संभाल रहा हूं ।

दिवंगत विभूतियां — एक संस्मरण

आर्यसमाज टाण्डा की दिवंगत विभूतियों का संस्मरण उसके उज्ज्वल इतिहास में सुरक्षित एवं स्मरणीय रहेगा और जिनपर हमें गर्व है, उनका योगदान इस समाज की धरोहर है । मैं संक्षेप में उन विभूतियों का वर्णन करना उचित समझता हूं ।

आर्यसमाज टाण्डा के प्रारम्भिक इतिहास के पृष्ठों में मेरे ताऊ स्व. श्री रामदासजी आर्य का नाम अपने सुकृत्यों के लिये अमर रहेगा जिन्होंने उस समय एक सहस्र की धनराशि देकर आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया था ।

तत्कालीन आर्य जगत के विद्वानों में पं. तुलसीरामजी तथा भजनोपदेशक श्री भजनानन्दजी की प्रेरणा का ही फल है टाण्डा का आर्यसमाज, जिनके उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता ।

स्वर्गीय महाशय बच्चूलाल जी भी पूज्य पंडित तुलसीराम जी द्वारा प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुये थे । महाशयजी एक त्यागी, तपस्वी स्वाध्यायी एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे । उनके अथक परिश्रम से उनके नेतृत्व में आर्यसमाज टाण्डा की सर्वांगीण प्रगति हुई है, आर्यसमाज मंदिर का निर्माण उन्हीं की देन है । आप सच्चे आर्य नेता के साथ बाइबिल, कुरान, पुराण और वेदान्त के अच्छे ज्ञाता थे । उनकी वाकपटुता भी प्रसिद्ध थी और एक अच्छे प्रचारक का काम करते थे । वह एक सफल व्यवसायी होते हुये भी आर्यसमाज के प्रति समर्पित थे । आपके त्याग व तपस्या का सच्चा प्रतीक वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल, रजौर है जिसका निर्माण बच्चूलालजी ने अपनी भूमि पर अपनी धनराशि से करवाया था जोकि आज भी चल रहा है तथा आपके परिवार के लोग इस संस्था के प्रति निष्ठावान् हैं । महाशय जी की अमर कृतियां सदैव आर्यसमाज टाण्डा के लोगों को प्रेरणा प्रदान करती रहेंगी ।

स्वर्गीय श्री कन्हैयालालजी चौधरी आर्यसमाज टाण्डा के प्राण थे । उनका अगाध अध्ययन, उनकी वाक्पटुता उनकी विद्वत्ता तथा उसको

जनसाधारण के बीच हृदयंगम कराने की कुशलता को कैसे भुलाया जा सकता है ? उन्होंने अपने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज की सेवा की है तथा एक लम्बे समय तक आर्यसमाज टाण्डा के मंत्री पद को सुशोभित कर चुके हैं ।

आर्यसमाज टाण्डा को, स्व. पं. रामप्रसादजी उर्फ शीलू महाराज तथा उनके परिवार का सदैव सहयोग प्राप्त रहा । वह पौराणिक ब्राह्मण होते हुये भी आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति पूरे निष्ठावान् थे तथा कर्मकाण्ड के अच्छे ज्ञाता थे । परिवारों में यज्ञ, विवाह आदि अनुष्ठान आपके द्वारा सम्पन्न होते थे । आपके दो पुत्र श्री ब्रह्मदेव और श्री विश्वदेव गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन से शिक्षा प्राप्त किये थे जिनमें श्री विश्वदेवजी को वेद, ईश्वर और महर्षि दयानन्द पर अपार श्रद्धा एवं भक्ति थी । स्वभाव से वे सरल एवं उदार थे । आपने निरन्तर उपदेश तथा यज्ञादि से जीवनपर्यन्त आर्यसमाज तथा आर्यजनों की सेवा की है ।

स्वर्गीय श्री सुखमंगलजी कर्मठ आर्यसमाजी तथा सक्रिय कार्यकर्ता थे। उनका पूरा परिवार आर्यसमाज में निष्ठा रखता है। उनके पुत्र स्वर्गीय श्री केदारनाथजी आर्यसमाज के परम भक्त थे । उनके चारों पुत्र श्री वीरेन्द्रजी, श्री देवेन्द्रकुमारजी (चानूबाबू) श्री नरेन्द्रजी एवं श्री सुरेन्द्रजी तथा उन सबका पूरा परिवार आज भी आर्यसमाज के सिद्धान्तों में विश्वास रखता है और उसके अनुसार आचरण करते हुये आर्यसमाज की सेवा में तन, मन तथा धन से सहयोग करता है, उनके परिवार पर आर्यसमाज टाण्डा को गर्व है।

स्वर्गीय श्री जवाहरलाल पहलवान एवं उनका समस्त परिवार ऋषिभक्त एवं कट्टर आर्यसमाजी है तथा समाज के समस्त कार्यों में पूरा सहयोग देता है ।

आर्यसमाज टाण्डा को श्री रामयशजी तथा श्री रामलखनजी जैसे आदर्श भ्राताओं के आशीर्वाद का सौभाग्य प्राप्त है । श्री रामयशजी स्थायी रुप से कलकत्ता में निवास करते थे, किन्तु उनका प्रेमपूर्ण व्यवहार टाण्डा समाज से निरन्तर बना रहा तथा प्रायः वार्षिकोत्सव के समय टाण्डा पधारते थे। कलकत्ता में भी वह कर्मठ आर्य-सेनानी के रुप में समाज की सेवा में सदा तत्पर रहते थे, बहुत वर्षों तक उन्होंने आर्यसमाज कलकत्ता के कोषाध्यक्ष पद का भार बहुत ही उतरदायित्व से निभाया था । उनकी पत्नी तथा सभी पुत्र पक्के आर्यसमाजी हैं तथा समाज के कार्यों में सक्रिय भाग लेते हैं । उनके

लघुभ्राता श्री रामलखनजी उदार प्रवृत्ति तथा सौम्य स्वभाव के धनी, कर्मठ आर्यसमाजी एवं कार्यकर्त्ता थे । वे विद्वानों तथा संन्यासियों का आदर-सत्कार करते थे । आर्यसमाज तथा उससे सम्बन्धित संस्थाओं के प्रति प्रेम रखते थे तथा उसके विभिन्न पदों पर रहकर अपने जीवन पर्यन्त उसकी सेवा में तत्पर रहते थे । उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दरीदेवी आज भी आपके समस्त आदर्शों का पालन करते हुये आर्यसमाज की सेवा में सदैव लगी रहती हैं । यज्ञ में विशेष श्रद्धा रखती हैं । विद्वानों के आदर-सत्कार में उनकी रूचि प्रशंसनीय है । वह एक धर्मप्रेमी, ईश्वरभक्त एवं स्वाध्याशील आर्यदेवी हैं । उनका एकमात्र पुत्र चि. ज्योतिप्रकाश भी अपने माता-पिता के पदचिन्हों पर चलने वाला एक कर्मठ बालक है ।

पं. महादेव प्रसादजी, महाशय यशोदानन्दनजी, श्री जवाहर पहलवान के भ्राता श्री हीरालालजी, श्री रामचन्द्र आर्य, श्री लालजी, श्री रामआसरे जी लेखपाल, श्री बेनीमाधवजी, पं. बद्रीप्रसाद मिश्र (स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती) मुबारकपुर, श्री रामलालजी आर्य आदि प्रमुख विभूतियां थीं जिनका संस्मरण मेरे मानस पटल पर सदेव छाया रहता है । इसके अतिरिक्त जिन दिवंगत आर्य बंधुओं का स्मरण नहीं हो रहा है उनके प्रति तथा समस्त आर्य विभूतियों के प्रति मैं नतमस्तक हूं तथा अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं ।

आर्यसमाज टाण्डा के वर्तमान कर्णधार

वर्तमान में, आर्य समाज टाण्डा के प्रमुख सदस्यों में श्री विज्ञमित्र जी शास्त्री, श्री जगदीश नारायण सिंह, श्री रामकर्णजी वैद्य, श्री शम्भूनाथ आर्य, श्री लक्ष्मीशंकर गुप्त, श्री बीरेन्द्रकुमार आर्य (बिल्लूबाबू) श्री देवेन्द्रकुमार आर्य (चानूबाबू), श्री रामदेव आर्य (मुनीमजी) श्री घनश्यामजी आर्य, श्री रामबहोर जी, श्री विश्वनाथ, श्री जगदीश प्रसाद वैद्य, श्री ओमप्रकाश (साहू स्टूडियो) श्री कृष्णकुमार आर्य (मिट्ठू बाबू) श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री मनोजकुमार आर्य, श्री मास्टर भगौतीप्रसादजी आदि हैं जिनपर आर्यसमाज टाण्डा को गर्व है। श्री विज्ञमित्र शास्त्री आर्य समाज टाण्डा के मन्त्री पद का भार संभालते हुये आचार्य पद का दायित्व भी संभाल रहे हैं । आप पूज्यपाद स्वामी त्यागानन्द सरस्वती संस्थापक नि:शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के सुयोग्य शिष्यों में हैं । आपके सानिध्य में कई कार्यकर्ता तैय्यार हुये हैं जो आर्यसमाज का कार्य कर रहे हैं । पं. देवनारायण पाठक जैसे कर्मशील, कर्तव्यपरायण कर्मठ आर्यसमाजी विद्वान् का सानिध्य आर्यसमाज टाण्डा को प्राप्त है ।

अपने जीवन के शेष भाग में आर्यसमाज के वर्तमान आर्य बन्धुओं से मैं पूर्ण सन्तोष अनुभव करता हूं एवं आशान्वित हूं कि आर्यसमाज टाण्डा इनके हाथों में सुरक्षित हे तथा उसकी गतिविधियां और प्रचार कार्य पूर्ववत् चलता रहेगा । प्रायः सभी मेरे पुत्रवत् हैं, प्रभु सबको वह शक्ति प्रदान करे जिससे वह सदैव आर्यसमाज की सेवा करते हुये अपने कर्तव्य का पालन कर सकें। इन शब्दों के साथ सभी को मेरा आशीर्वाद ।

महिला आर्य समाज टाण्डा

आर्य समाज टाण्डा के अन्तर्गत महिला आर्यसमाज पूर्ण रूप से सक्रिय है । इसकी स्थापना आर्य समाज टाण्डा की हीरकजयन्ती सन् १९६५ के पश्चात् हुई थी, तबसे निरन्तर नारी जाति के उत्थान एवं जागरण हेतु स्त्री आर्य समाज, इस क्षेत्र में कार्यरत है । प्रत्येक रविवार को सायं इसका साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से होता है । सत्संग में अच्छी उपस्थिति होती है । वर्तमान में मेरी पत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी प्रधाना हैं तथा स्वर्गीय श्री रामलखन जी की पत्नी श्रीमती सुन्दरी देवी महिला समाज की मंत्राणी हैं। आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में प्रत्येक वर्ष एक न एक विदुषी महिला को अवश्य आमंत्रित किया जाता हे तथा महिला सम्मेलन का आयोजन निश्चित रूप से होता है, जिसमें डा. प्रज्ञा देवी, डा. सावित्री देवी शर्मा, डा. पुष्पावती, डा. सविता देवी, श्रीमती वेदवती, डा. शान्तिदेवबाला आदि आर्य जगत् की महान विभूतियां टाण्डा पधार कर अपने उपदेशों से इस क्षेत्र की नारी जाति को उद्बोधित करती हैं ।

मानव समाज में नारी जाति के प्रति अन्याय, अत्याचार, असमानता का व्यवहार देखकर महर्षि दयानन्द अत्यन्त दुःखी थे । उन्होंने सभी मतवादों पर प्रहार किया, तथा वेद और मनुस्मृति के अनुरूप नारी जाति एवं दलित जनों का उद्धार करके उन्हें समाज में उचित अधिकार दिलाया तथा सम्मानित किया । महर्षि ने मनुस्मृति के ब्रह्मवाक्य को साकार कर दिखाया :

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः । "

अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है उन्हें सम्मान दिया जाता है वहां देवताओं का, सज्जनों का निवास होता है ।

इस तरह महर्षि के उपकारों को नारी जगत् कभी भी नहीं भुला सकता। टाण्डा का महिला आर्यसमाज उन आदर्शों पर अक्षरशः चल रहा है, उससे मुझे पूर्ण सन्तोष है, तथा आशा है कि भविष्य में भी इसी तरह इसका संचालन होता रहेगा ।

राजनैतिक-कार्यक्षेत्र

अध्याय — ३

राजनैतिक - कार्यक्षेत्र

मेरे जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध राजनीति से रहा है । टाण्डा में शिक्षा का साधन सीमित था जिससे अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, जो उपलब्ध था, वहां तक शिक्षा प्राप्त करके राजनीति में प्रविष्ट हो गया । उस समय भारतीयों का एक मात्र लक्ष्य भारत से अंग्रेजी शासन को हटाना था । देश प्रेम की इस भावना से ओतप्रोत सभी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जुट गये, जिसमें आर्यसमाज की मुख्य भूमिका थी ।

आर्यसमाज की स्थापना उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् १८७५ ई. में बम्बई महानगरी में हो चुकी थी । महर्षि ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में मनुस्मृति के इस श्लोक को उद्धृत किया है, जिससे देश की राजनीति के प्रति स्वामी जी की रुचि तथा पीड़ा का बोध होता है —

सर्वं परवशं दुःखं
सर्वामात्मवशं सुखम् ।
एतद्विद्यात् समासेन
लक्षणं सुखदुःखयो : ॥

अर्थात् पराधीनता सबसे बड़ा दुःख और स्वाधीनता सबसे बड़ा सुख है। ऋषि ने यहां तक कहा कि विदेशी राज्य, किसी देश की जनता को पुत्र तुल्य भी रखे, तो भी अपने देश के राज्य की तुलना नहीं कर सकता। स्वामीजी के इन विचारों ने मुझमें देश-स्वतंत्रता की भावना को और भी शक्ति प्रदान किया, और मैं क्रांति की ओर अग्रसर हो गया ।

भारत, सदियों से मुस्लिम और अंग्रेजी प्रशासन के कुचक्र से पीड़ित था। दोनों सभ्यताओं ने भारत की प्राचीन संस्कृति एवं उसकी मर्यादा को प्रायः नष्ट कर दिया था । महर्षि दयानन्द ने भारतीयों को देश-प्रेम की भावना से जगा दिया था जिसका परिणाम हुआ कि सर्वत्र अंग्रेजों और ब्रिटिश प्रशासन

के प्रति क्रोध एवं प्रतिशोध की भावना जाग उठी । देश की स्वतंत्रता हेतु, भारत मां के लाल, ललनायें, हिन्दू, मुसलमान तथा सिक्ख नर-नारी बाल वृद्ध युवक, सन्त-महात्मा, विद्वान एवं किसान सभी स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपनी बलि देनें को उत्सुक हो गये । सम्पूर्ण भारत में स्वतंत्रता का स्वर गूँज उठा।

ए. ओ. ह्यूम नामक एक अंग्रेज के सौजन्य से सन् १८८५ ई. में कांग्रेस की स्थापना हुई थी प्रारम्भ में इस संस्था की नीति ब्रिटिश शासकों के प्रति सहयोग, ईमानदारी और विश्वास पर आधारित थी किन्तु जब अँग्रेज शासकों की दुर्नीति और धूर्तता समझ में आयी तब से उसके नेता गण सम्पूर्ण भारत मे आन्दोलनों, सत्याग्रहों एवं अन्य साधनों से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये प्रयत्न शील हो उठे तथा कांग्रेस का नेतृत्व जबसे महात्मा गांधी पं. जवाहरलाल, मौलाना आजाद, सरदार बल्लभभाई पटेल आदि कर्मठ नेताओं ने संभाला और तब से जो क्रान्ति आई उससे सारा देश जागृत एवं सुसंगठित हो गया। उन्हीं दिनों सन् १९१९ ई. में जलियाँवाला बाग की हिंसात्मक घटना हुई जिसने मेरे मस्तिष्क एवं हृदय को बहुत प्रभावित किया और मैंने अमृतसर, लाहौर आदि स्थानों पर हो रहे कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लिया और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रत्यक्ष रूप से कार्य करने लगा । टाण्डा नगरी में महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडू, श्री पुरूषोत्तमदास टण्डन, आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य कृपलानी आदि भारत की महान विभूतियां सन् १९२० से १९२८ तक बराबर आते रहे । मेरे प्रयास से सन् १९२८ में गांधीजी का भाषण आर्यसमाज टाण्डा में हुआ था ।

कारावास का दण्ड

सन् १९२५ से १९३० तक की अवधि में देश हित और आर्य समाज के कार्यों में पूर्ण निष्ठा और लगन से जुट गया । सम्पूर्ण स्वतंत्रता के आन्दोलन में आर्य समाज की मुख्य भूमिका रही है और यह ऐतिहासिक तथ्य है कि ७५ प्रतिशत स्वतंत्रता सेनानी आर्यसमाजी थे । आर्यसमाज ने अपनी पूरी शक्ति देश की स्वतंत्रता के लिये समर्पित कर दिया था । ब्रिटिश प्रशासन की दृष्टि में आर्यसमाज सबसे बड़ा शत्रु था तथा आर्यसमाजी प्रत्यक्ष रूप से बागी समझे जाते थे । आर्यसमाजियों पर शासन के भयंकर प्रहार हो रहे थे, छापे डाले जाते थे और गिरफ्तारियां हो रही थीं । सन् १९३० में मद्य-निषेध आन्दोलन चल रहा था । अस्तु, उसी आरोप में सरकार ने मुझे बन्दी बनाकर धारा ४ के अन्तर्गत २३ सितम्बर १९३० ई. को जेल भेज दिया और मुझे ६ मास

का कारावास तथा एक सौ रूपये का दण्ड भुगतना पड़ा। श्री सीताराम वर्मा (ग्राम फतेहपुर) श्री लल्लन बाबू (टाण्डा) और मौलवी मो. वशीर (पुन्थर) आदि मेरे तत्कालीन कारावास के साथी थे । मुझे प्रथम, फैजाबाद कारागार में, बाद में गोण्डा कारागार में स्थानान्तरित कर दिया गया । कारावास की अवधि समाप्त करके मैं टाण्डा आ गया और पूरे जोश से आर्यसमाज तथा देश सेवा के कार्यों में जुटा रहा । अंग्रेजी सरकार एवं प्रशासन का व्यवहार दिन-प्रतिदिन कठोर एवं क्रूर ही होता गया ।

किन्तु, दीर्घकालीन स्वतंत्रतासंग्राम के पश्चात् १५ अगस्त सन् १९४७ ई. को भारत स्वतंत्र हुआ । यह स्वतंत्रता असंख्य बलिदानों के फलस्वरूप देश के विभाजन के साथ प्राप्त हुई तथा इसके पूर्व जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे हुये जिसकी भयंकरता अवर्णनीय है । देश के दो टुकड़े हो जाने से हिन्दु-मुसलमान में सद्भाव नहीं रह सका जिसका परिणाम आज भी देशवासियों को भुगतना पड़ रहा है । मेरी दृष्टि में धर्म और राजनीति का घनिष्ठ सम्बन्ध है । धर्म के अभाव में राजनीति अन्धी है और राजनीति के अभाव में धर्म लंगड़ा है । अतः राष्ट्र को सार्वजनीन-धर्मप्रेरित राजनीति की आवश्यकता है । धर्म का अर्थ है धारण करने की शक्ति । जिस मान्यता से हमारा वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हो, उस आधार पर राजनीति की नींव होनी चाहिये थी, और उसके द्वारा लोकतान्त्रिक व्यवस्था का परिचालन। किन्तु देश का दुर्भाग्य है कि ऐसा न होकर धर्मनिरपेक्ष राजनीति की व्यवस्था के अनुसार भारतवर्ष का शासन लोकतंत्रात्मक प्रणाली से प्रारम्भ हुआ, जिससे सर्वत्र सम्प्रदाय का प्रभुत्व बढ़ा और सम्प्रदायवादियों को ही शासन से बल मिला । राजनैतिक नेताओं ने अपनी-अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये जातिवाद, आरक्षण, भाषा-विवाद, मन्दिर-मस्जिद के झगड़ों को बनाये रखा । परिणामस्वरूप देश के नर-नारी आपस में एक दूसरे के शत्रु बने, मित्र नहीं बन सके । जिन राष्ट्र के भक्तों ने राष्ट्रीयता की बात की उन्हें साम्प्रदायिक होने की संज्ञा दी गयी ।

देश की स्वतंत्रता के पूर्व महात्मा गांधी, आचार्य विनोवा भावे सहित अनेकों राजनैतिक नेताओं ने देश में गोमाता पर हो रहे अत्याचार को बंद करने का वचन दिया था किन्तु खेद है कि आज भी गोहत्या होती है । समूचे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी तथा सभी जाति के लोगों के लिये सामान्य विधि-व्यवस्था शासन का मुख्य कर्तव्य होगा । आजका वर्तमान शासन साम्प्रदायिकता के चंगुल में फंसा हुआ है उसे कर्तव्य बोध नहीं है तथा हर

प्रान्त जाति के नाम पर अलग-अलग राज्य चाहता है जिसका भयंकर रूप कश्मीर, पजांब आदि राज्यों में परिलक्षित है, सर्वत्र अशान्ति की लहर दौड़ रही है ।

देश की वर्तमान गर्हित राजनीति से मैं अपने को मुक्त समझता हूं, ऐसी राजनीति से मेरा कोई लगाव नहीं है । ऐसी परिस्थिति में धर्म में आस्था रखने के नाते देश से तो अलग नहीं हो सकता । अस्तु ईश्वर से प्रार्थना है कि वर्तमान देश के कर्णधारों को ईश्वर सद्बुद्धि प्रदान करें ताकि यह भारत ऋषि, मुनियों, राम, कृष्ण एवं धर्मात्माओं के उपदेशों तथा आदर्शों पर चलकर भारत की संस्कृति, सभ्यता को जीवित एवं सुरक्षित रख सके ।

शिक्षा से सम्पर्क

अध्याय – ४

शिक्षा से सम्पर्क

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का परमोत्कृष्ट साधन है। देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और उसकी सभ्यता, संस्कृति एवं शिक्षा-प्रणाली नष्ट प्राय थी। अंग्रेजों का भारत के इतिहास को दूषित तथा मौलिकता से परे करने का कुचक्र चल ही रहा था कि महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। ऋषि का ध्यान चतुर्दिक गया और उन्होंने सभी का अध्ययन-मनन किया। महर्षि ने देश की राजनीति को प्रभावित किया और भारत का प्रत्येक नर-नारी बाल-वृद्ध-युवा जागृत हो गया। स्वामीजी ने देश के अस्त-व्यस्त सामाजिक ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव किया जिसका मुख्य साधन शिक्षा ही हो सकती थी। अतः उन्हौंने आर्यसमाज के दस नियमों में चौथा नियम अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये का प्रतिपादन किया।

शिक्षा के प्रति मेरा प्रेम या लगाव मेरे बाल्यकाल से ही था और टाण्डा में साधन उपलब्ध नहीं होने के कारण मैं उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सका था, इसका उल्ले़ख मैं प्रथम अध्याय में कर चुका हूं। मैं अधिक शिक्षित न होते हुये भी शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में विशेष रूचि रखता था और आगे जाकर मैंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं उसके विस्तार के माध्यम से जनसेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और जीवन पर्यन्त उसकी उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहा।

मैंने अपने जीवन के लगभग पच्चास वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करना समीचीन समझता हूँ। मैं अपने क्षेत्र की निम्नलिखित शिक्षा-संस्थाओं से संस्थापक, प्रबन्धक एवं सदस्य रूप में सम्बन्धित और इस वृद्धावस्था में भी अपनी शक्ति के अनुसार कार्यरत हूं।

१. आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाण्डा (फैजाबाद) संस्थापक एवं प्रबन्धक

२.	दयानन्द बाल विद्या मन्दिर, टाण्डा (फैजाबाद)		प्रबन्धक
३.	होवर्ट त्रिलोकनाथ इन्टरकालेज, टाण्डा	—	संस्थापक सदस्य
४.	त्रिलोकनाथ महाविद्यालय, टाण्डा	—	संस्थापक सदस्य
५.	जनता जूनियर हाईस्कूल, टाण्डा	—	संस्थापक सदस्य
६.	श्री रामनारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय, फूलपुर (टाण्डा)	—	कार्यवाहक प्रबन्धक
७.	कामता प्रसाद सुन्दरलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साकेत (फैजाबाद)	—	संस्थापक सदस्य
८.	गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम रजोर, टाण्डा	—	मुख्याधिष्ठाता ।

किसी राष्ट्र और किसी संस्था का इतिहास उस धरोहर होता है और इतिहास अपने को दोहराता रहता है, इसी उद्देश्य से प्रस्तुत है उपरोक्त शिक्षण संस्थाओं का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण —

आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाण्डा (फैजाबाद)

अंग्रेजी शासन की क्रूरता से, मेरे टाण्डा-निर्वासन की अवधि में, हृदय एवं मस्तिष्क ने जिस चिन्तन को अधिक प्रश्रय दिया वह था शिक्षा, विशेषकर नारी शिक्षा की आवश्यकता । टाण्डा निर्वासन की समाप्ति के पश्चात् घर लौटकर मैंने टाण्डा में कन्या विद्यालय खोलने का दृढ निश्चय कर लिया, और इस विचार को साकार रूप देने में प्रयत्नशील हो गया । उस समय मेरे सानिध्य तथा विश्वास पात्रों में महाशय श्री रामयश आर्य (जो कालान्तर में कलकत्ता रहने लगे थे और अब इस संसार में नहीं हैं) थे, उनके साथ मैं कानपुर गया और घुमनीबाजार मोहल्ले में श्री महंगूराम जायसवाल से सम्पर्क हुआ मंहगूरामजी उस समय के अच्छे व्यापारी, धनाढच एवं सामाजिक कार्यों में रुचि रखनेवाले प्रतिष्ठित व्यक्ति थे । हमलोगों ने टाण्डा में कन्या विद्यालय प्रारम्भ करने का निश्चय उनके समक्ष-प्रस्तुत किया, उन्होंने इस निवेदन को सहर्ष स्वीकार किया तथा दस हजार की धनराशि देकर टाण्डा में आर्यकन्या पाठशाला खोलने के निश्चय को कार्यरूप में परिणित कर दियां । उनके इस उपकार को टाण्डा निवासी कभी भी नहीं भुला सकेंगे । उस समय हमने श्री महंगूरामजी से रुपये नहीं लिये, क्योंकि संस्था की पूर्व योजना जो मेरे मस्तिष्क में थी उसके लिये विचार-विमर्श तथा कमेटी गठित करना और उसकी

स्वीकृति से उसे प्रारूप देना आवश्यक कार्य था, अतः हमलोग टाण्डा वापस आ गये ।

आर्य कन्या विद्यालय - स्थापना हेतु विचार - विमर्श

टाण्डा में माननीय सज्जनों से विचार-विमर्श प्रारम्भ कर दिया जिसमें सभी ने मेरे उत्साह को बढ़ाया और यह निश्चय प्रबल होता गया । इस हेतु श्री रामयश जी एवं श्री रामलखन जी के नाना श्री बिन्देश्वरी साहु के मन्दिर में टाण्डा के प्रमुख निवासियों की एक बैठक बुलायी जिसमें संभवतः निम्नलिखित सज्जन उपस्थित हुए :

१. श्री रामयश आर्य
२. चौ. कन्हैयालालजी
३. श्री महावीर प्रसाद आर्य
४. श्री सालिग्रामजी (खत्री)
५. श्री मिश्रीलाल आर्य
६. श्री लालजी

बैठक की कार्यवाही ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्र पाठ से प्रारम्भ हुई । मैं, टाण्डा में बालिकाओं के लिये शिक्षा का प्रबन्ध होने की आवश्यकता पर बल दिया तथा उसकी रूप रेखा प्रस्तुत की, और इसके लिये कानपुर निवासी श्री महंगूरामजी के शुभविचार तथा उनके दस हजार की राशि देने के आश्वासन को सबके समक्ष रखा । व्यापक विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से टाण्डा में आर्य कन्या विद्यालय खोलने का निश्चय किया गया । स्कूल के विधिवत् संचालन के लिये विद्या प्रचार संघ की स्थापना की गई और उसके अन्तर्गत आर्य कन्या विद्यालय की कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से मुझे प्रबन्धक का कार्य भार सौंपा गया ।

आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना

टाण्डा नगर में, बसन्त पंचमी सन् १९४४ की शुभ घड़ी में आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना हो गयी । यह दिवस टाण्डा नगर एवं नारी जाति के इतिहास में सदैव अमर रहेगा ।

श्री महंगूरामजी से दस हजार की धनराशि प्राप्त हो गई । उनकी इस महती कृपा से संस्था को आर्थिक बल मिला ।

विद्यालय, प्रारम्भ करने हेतु स्वर्गीय रायबहादुर श्री त्रिलोकनाथ कपूर ने टाण्डा में स्थित अपना भवन प्रदान किया जिससे विद्यालय सुचारू रूप से प्रारम्भ हो सका । उनकी इस महती कृपा एवं सहयोग से ही यह कार्यसम्भव हो सका था । रायबहादुरजी टाण्डा नगर की उन प्रतिष्ठित विभूतियों में थे जिनका यश आज टाण्डा में ही नहीं अपितु देश, विदेश के कोने-कोने में फैला हुआ है । उनका विद्या तथा शिक्षा प्रेम संस्कार गत है। जिसका फल है, टाण्डा में शिक्षा का केन्द्र उनकी कृति होवर्ट कालेज जो उनके मरणोपरान्त होवर्ट त्रिलोकनाथ इन्टर कालेज तथा त्रिलोकनाथ स्नात्कोत्तर महाविद्यालय के रूप में अद्यावधि विद्यमान है। श्री कपूर जी ने अपने जीवन काल में धर्म, समाज और राष्ट्र की जो सेवा शिक्षा के माध्यम से की है उसका स्मरण टाण्डा नगर का इतिहास चिरकाल लक करता रहेगा । ईश्वर की कृपा से उनके सुपुत्र बाबू सुरेन्द्रनाथ कपूर (दादू बाबू) अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुये सरस्वती उपासना (शिक्षा प्रेम) में पूरी तन्मयता से कार्यरत हैं और उनकी प्रतिष्ठा अपने पिता के समान सर्वत्र व्याप्त है । दादू बाबू का स्वभाव, व्यवहार सौम्य एवं उदार है । मेरे प्रति उनका अगाध प्रेम है, तथा मेरे किसी भी आह्वान पर तन, मन से मेरा सहयोग करते हैं ।

इस तरह विद्यालय में कन्याओं का प्रवेश होने लगा और विद्यालय सुचारू रूप से चलने लगा । प्रारम्भ में विद्यालय खोलने में बहुत संघर्ष करना पड़ा। देश पराधीन था, हमारे सामने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक सभी समस्याएँ अपना विकराल रूप धारण किये हुई थीं । सबसे बड़ी समस्या थी कि समाज में प्राचीन प्रचलित परम्परा के क्रूर संस्कारों ने घर कर रखा था और इसके कारण लड़कियों को शिक्षा देना लोग हेय समझते थे, किन्तु ऋषि के सिद्धान्तों पर चलते हुये हमलोगों को इसमें सफलता मिली और लोग अपनी बेटियों को हमारे विद्यालय में भेजने लगे और आज उसमें हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख सभी की बच्चियां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं ।

आर्य कन्या विद्यालय का स्थानान्तरण

टाण्ड़ा नगर, के मध्य में स्थित मिडिल स्कूल जिसमें बालकों के लिये आठवीं कक्षा तक शिक्षा का साधन, जिला-परिषद् फैजाबाद द्वारा उपलब्ध था, किन्तु

उसका रूप व्यवस्थित नहीं था । आर्य कन्या पाठशाला को स्थायित्व प्रदान करने हेतु उक्त स्थान को सुरक्षित एवं बालिकाओं के लिये सुविधाजनक समझ कर उसे जिला-परिषद से प्राप्त करने की चेष्टा प्रारम्भ की गई । इस कार्य में, टाण्डा तथा फैजाबाद के हितैषी भद्रजनों का विशेषकर स्व. बाबू जगजीवनदास रईस, श्री भगौतीदीन वर्मा एवं श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर के सतत् प्रयासों को भुलाया नहीं जा सकता । हम सभी का प्रयास सफल हुआ, और अन्ततोगत्वा १४ अगस्त सन् १९४७ को उक्त स्थान आर्य कन्या विद्यालय टाण्डा को पूर्णरूपेण प्राप्त हो गया । इसके लिये उस समय का जिला-प्रशासन एवं जिलाधिकारीवर्ग बधाई के पात्र हैं ।

भारतवर्ष के इतिहास में १५ अगस्त १९४७ का दिन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा, जिस घड़ी में भारतमाता की सदियों से पड़ी बेड़ियां टूटीं, और देश स्वतंत्र हुआ, उसी शुभ घड़ी में आर्य कन्या विद्यालय, परिषदीय विद्यालय के भवन में स्थानान्तरित हो गया । उल्लेखनीय है कि आज ४३ वर्ष पश्चात् भी वह भवन ज्यों का त्यों सुरक्षित है तथा अपनी विस्तृत यादों को अपने में संजोये हुये है । इस तरह राष्ट्र के इतिहास के साथ विद्यालय की स्मृतियां सदैव लोगों को प्रेरणा देती रहेंगी । इसके साथ ही कपूर जी के आग्रह पर कन्या पाठशाला का प्रारम्भिक स्थान जिस पर उनके परिवार का स्वामित्व था, उन्हें १५ अगस्त सन् १९४७ को ही सौंप दिया गया ।

विद्यालय का विकास

विद्यालय, स्थानान्तरण के पश्चात् अपने निरन्तर प्रयास से विकसित होता गया । विद्यालय के बगल में तथा पीछे विशाल भूमि में तम्बाकू की खेती होती थी उसे क्रय करने में टाण्डा वासियों ने मेरी तन, मन, धन से जो सहायता की हे तथा जिन किसानों ने अपनी भूमि विक्रय की है, उसे मैं कभी नहीं भुला सकता और विद्यालय का वर्तमान रूप उस प्रयास का ही फल है । विद्यालय-भवन निर्माण में जिन दानी महानुभावों ने मुक्तहस्त से दान दिया है वे धन्यवाद के पात्र तो हैं ही, तथा उनकी स्मृतियां भी मेरे मानसपटल पर सदैव अंकित हैं ।

विद्यालय के विकास में माननीय श्री जयराम वर्मा, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल, ईमानदार, एवं कर्मठ राजनीतिज्ञ तीन दशक तक विधायक तथा एम. पी. एवं बीच-बीच में उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री के पद पर आसीन रहने

वाले सरल स्वभाव के धनी, वर्माजी का सहयोग सराहनीय है । विद्यालय में, समय-समय पर आनेवाली छोटी-बड़ी विपत्तियों में उनका जो सहयोग एवं धैर्य प्राप्त होता रहा उसके लिये यह विद्यालय उनका चिर ऋणी है तथा सदैव उनको स्मरण करता रहेगा । उनके आकस्मिक निधन से मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत आघात पहुंचा है, और मैं अपने को अकेला महसूस कर रहा हूं । वह मेरे साथी ही नहीं, मेरे हितैषी तथा शुभचिन्तक भी थे वह जब भी टाण्डा आते, मुझसे अवश्य मिलते थे । आज उनकी स्मृति, उनका कृतित्व मेरे मानस पटल पर छाया हुआ है ।

इस संदर्भ में एक और व्यक्तित्व का वर्णन आवश्यक है वह है श्री देवीप्रसाद मिश्र (प्रिंसिपल साहब) जो मेरे अभिन्न मित्र एवं सुख-दुःख के साथी हैं । विद्यालय के विकास में उनका सर्वांगी सहयोग अविस्मरणीय है। टाण्डा, होवर्ट त्रिलोकनाथ का, हाई स्कूल से इण्टरमीडिएट तथा उच्चतर विद्यालय का प्रधानाचार्य का पद सुशोभित करने वाले, रात-दिन उसके तथा कन्या विद्यालय की प्रगति के लिये चिंतित व्यक्तित्व के गुण, कर्म, स्वभाव का कहां तक वर्णन करूँ, उनके वर्णन का सामर्थ्य शब्दों में नहीं है, और इधर कई वर्षों से उनकी रुग्णावस्था के कारण उनका सानिध्य भी प्राप्त नहीं कर पा रहा हूं, जो मेरे हृदय को दहला देता है । मिश्राजी की हार्दिक इच्छा आर्य कन्या इण्टर कालेज को भी डिग्री कालेज बनाने की है, इसके लिये वह बराबर प्रोत्साहित करते रहते हैं और उनके प्रोत्साहन के फलस्वरूप ही विद्यालय की कुशल, अनुभवी, तथा योग्य प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर ने साहसपूर्वक बिना मान्यता प्राप्त किये ही डिग्री की शिक्षा प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया है । मैं भी अवस्था अधिक होने के कारण असमर्थ होता जा रहा हूं फिर भी यदि वर्माजी का साथ नहीं छूटता, तथा मिश्रा जी का स्वास्थ्य ठीक रहता तो यह कन्या विद्यालय अवश्यमेव उच्चतर विद्यालय का रूप धारण कर लेता ।

वर्तमान में विद्यालय कमेटी के अध्यक्ष बाबू सीताराम आर्य, निवर्तमान मन्त्री एवं संस्थापक सदस्य श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर (दादूबाबू) उपाध्यक्षा श्रीमती गुणवती ग्रोवर, वर्तमान मन्त्री श्री श्रीराम आर्य, श्री विट्ठलदास अग्रवाल, श्री वीरेन्द्रकुमार (बिल्लू बाबू) श्री कृष्णदास नागर, श्री हरीराम आर्य, श्री रामदेव आर्य (मुनीमजी) श्रीमती सुन्दरी देवी (धर्मपत्नी स्व. श्री रामलखन आर्य) एवं मेरे ज्येष्ठपुत्र श्री आनन्दकुमार आर्य सहित सभी सदस्य सक्रिय तथा योग्य हैं । मुझे पूर्ण सन्तोष और विश्वास है कि इनलोगों के हाथ में विद्यालय

की प्रगति एवं विकास तथा उसका भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल है । विद्यालय को अभिभावकों का हर सम्भव सहयोग प्राप्त है । नगर के हिन्दू, मुसलमान, सहित सभी सम्भ्रान्त नागरिकों की शुभकानाएँ एवं समर्थन विद्यालय के साथ है, सभी का मुझमें विश्वास है, अतः सभी धन्यवाद के पात्र हैं, एवं सभी को मेरा आशीर्वाद ।

पाठशाला से प्रारम्भ होकर आज विद्यालय इन्टरमीडिएट कालेज तक पहुंचकर जनता जनार्दन की निरन्तर सेवा में रत है । विद्यालय की सर्वांगीण उन्नति का ध्यान तथा उसकी पूर्ति सीमित साधनों से यथासम्भव करने का प्रयास किया गया है, और संतोषजनक विकास भी हुआ है जिसकी सफलता आपके समक्ष है । विद्यालय में आज दो हजार से अधिक छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं ।

विद्यालय में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था

विद्यालय खोलने का उद्देश्य जहां नारी जाति को शिक्षा प्रदान करने का था वहीं उन्हें धर्म का वास्तविक ज्ञान भी देना था जिससे वह अपने जीवन को उसके अनुरूप बना सकें । इसके लिये प्रति शनिवार को यज्ञ, भजन तथा उपदेश की व्यवस्था है जिसमें विद्यालय की सभी कन्याएँ सम्मिलित होती हैं और विशेषता यह है कि प्रधानाचार्या जी की देख-रेख में समस्त शिक्षकवर्ग की उपस्थिति में सम्पूर्ण कार्यक्रम कन्याओं द्वारा ही सम्पन्न कराये जाते हैं । भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का बोध कराया जाता है गुरु व शिष्य का मधुर सम्बन्ध एवं उसके अनुरूप आचरण इस विद्यालय की विशेषता है । समय-समय पर विद्वानों, मनीषियों के प्रवचन, उपदेशों की व्यवस्था है जिससे हमारी देवियां लाभान्वित होती हैं । नैतिक शिक्षा नियमित रूप से प्रदान की जाती है ।

विद्यालय का अनुशासन

ईश्वर की असीम कृपा से विद्यालय का अनुशासन बहुत सुन्दर है, सभी कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न होते हैं । शिक्षकवर्ग तथा विद्यालय के प्रशासन में काफी सामंजस्य है । सभी अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग हैं तथा विद्यालय की मर्यादा को ध्यान में रखकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं । इस विद्यालय का अनुशासन पूरे क्षेत्र में प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है । मुझमें, सभी की

आस्था, तथा आदर विद्यमान है । मैंने इस विद्यालय को अपना परिवार समझा है, सभी मेरी बेटियां है, सभी इस बाटिका की सुन्दर कली हैं, इन्हें विकसित तथा प्रसन्नचित्त देखकर मेरा मन हर्षित होता है । ईश्वर से प्रार्थना है कि विद्यालय का अनुशासन मेरे जीवनपर्यन्त तथा उसके पश्चात् भी इसी तरह बना रहे ।

विद्यालय का परीक्षाफल

विद्यालय के शिक्षकवर्ग के परिश्रम एवं कर्तव्यपरायणता का प्रतिबिम्ब है इस विद्यालय का परीक्षाफल, जो समूचे प्रान्त में अपना उच्च स्थान रखता है । आज के भौतिक युग में, नैतिक शिक्षा के अभाव में, युवा वर्ग दिशाविहीन होकर उच्छृंखल हो गया है जिसकी झलक सर्वत्र व्याप्त है, किन्तु इसका प्रभाव हमारे विद्यालय पर लेशमात्र भी नहीं है और जिसका प्रमाण आपके समक्ष है, इस विद्यालय का परीक्षाफल ।

उपर्युक्त शब्दों में विद्यालय के विकास तथा उसकी व्यवस्था का वर्णन हो चुका है किन्तु इस सबके साथ जुड़ी हुई हैं श्रीमती गुणवती ग्रोवर प्रधानाचार्या का कर्तृत्व, जिनके अथक परिश्रम एवं योग्यता का फल है, आज का वर्तमान आर्य कन्या इन्टरकालेज टाण्डा।

श्रीमती गुणवती ग्रोवर

आर्य कन्या विद्यालय अपनी स्थापना के समय से निरन्तर प्रगति करता आ रहा था किन्तु उसमें, योग्य, अनुभवी तथा आर्य विचारों में आस्था रखनेवाली प्राचार्या की कमी बनी हुई थी । इसके लिये मैं चिंतित रहता था, क्योंकि योग्य तथा आर्य संस्कृति की पोषक विदुषी के अभाव में, विद्यालय के, निर्माण करने का जो स्वप्न एवं उद्देश्य मेरे मस्तिष्क में था, उसकी पूर्ति सम्भव नहीं थी । ईश्वर की महतीकृपा तथा सौभाग्य से सन् १९६२ में श्रीमती गुणवती ग्रोवर विद्यालय को प्राप्त हुईं । श्रीमती ग्रोवर का आवेदनपत्र मुझे प्राप्त हुआ, वह लखनऊ में रहती थीं, उनकी योग्यता पूर्ण थी, और उनकेसाथ विशेषता थी कि उनमें आर्य संस्कार भरे हुये थे । उनके पतिदेव डा. ऋषिदेव ग्रोवर सिद्धान्तालंकार गुरूकुल के स्नातक एवं आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् हैं । गुणवती जी को साक्षात्कार के लिये टाण्डा बुलाया गया । साक्षात्कार में वह हर दृष्टि से खरी उतरीं, तथा साक्षात्कार कमेटी के प्रत्येक सदस्य

उनके आचार-विचार-व्यवहार एवं योग्यता से सन्तुष्ट थे । परिणामस्वरूप उनकी नियुक्ति विद्यालय के प्राचार्या पद पर कर दी गई । किन्तु उनके समक्ष समस्या थी कि टाण्डा छोटा नगर है, तथा उनके लिये उचित आवास की व्यवस्था नहीं थी, फिर भी उन्होंने मेरे आग्रह को स्वीकृति प्रदान की और प्राचार्या का कार्यभार ग्रहण कर लिया । उनकी योग्यता, कर्मठता तथा कुशल प्रशासन की क्षमता से विद्यालय की सर्वांगीण प्रगति हुई । विद्यालय के अनुशासन तथा अध्ययन के स्तर में आश्चर्यजनक उन्नति हुई । उनके प्रयास से विद्यालय को जो ख्याति मिली उससे इण्टरमीडिएट कक्षायें प्रारम्भ करने में सुविधा हुई, तथा शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त करने में विशेष कठिनाई नहीं उठानी पड़ी । विद्यालय का हाईस्कूल तथा इण्टर का परीक्षाफल निरन्तर उत्तम होता है, तथा प्रदेश में विद्यालय को उच्च स्थान प्राप्त है ।

ग्रोवरजी ने पच्चीस वर्ष से अधिक समय तक मेरे साथ विद्यालय की सेवा की है, और मुझे एक क्षण भी ऐसा स्मरण नहीं है कि किसी भी विषय को लेकर मुझसे उनका विवाद हुआ हो । विद्यालय की हर छोटी-बड़ी समस्या का समाधान वह स्वयं कर लेती थीं, जिससे मैं निश्चिन्त रहता था । जिस तत्परता एवं निष्ठा से उन्होंने विद्यालय की सेवा की है वह अनुकरणीय तो है ही, साथ ही अद्वितीय भी है । विद्यालय उनका अपना परिवार था, उस परिवार की वाटिका को सजाने, संवारने में उन्होंने अपना तन, मन, धन सभी कुछ अर्पित कर रखा था । मेरे हृदय में इस बात का कष्ट सदैव बना रहा कि साधन के अभाव में, जो सुविधा प्रबन्धक से उन्हें आवास वगैरह की प्राप्त होनी चाहिये थी, नहीं हो सकी । उनके कार्यकाल में मैं जितना सन्तोष एवं निश्चिन्तता अनुभव करता था उसे व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं है ।

प्राचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर को उनकी सेवाओं एवं कार्यकुशलता के फलस्वरूप प्रशासन ने उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सुशोभित किया, ऐसा करके प्रशासन ने अपने कर्तव्य का पालन किया है, जिसके लिये प्रशासन को धन्यवाद है । इससे ग्रोवर जी जहां गौरवान्वित हुई हैं, वहीं पर विद्यालय का गौरव भी बढ़ा है, तथा पूरे विद्यालय के लिये गर्व की बात है । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् फैजाबाद जनपद की वह प्रथम महिला हैं जिन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत किया गया है । इस शुभ सूचना से मुझे जो हर्ष प्राप्त हुआ था उसकी अभिव्यक्ति शब्दों में सम्भव नहीं है । मैं उन्हें कुछ और तो नहीं अपितु आशीर्वाद देना अपना अधिकार समझता हूं और वह आशीर्वाद उनके जीवनपर्यन्त उन्हें प्राप्त रहेगा ।

इण्टरमीडिएट कालेज के प्राचार्या पद से मुक्त होने के पश्चात् भी उन्होंने हम सभी तथा नगर के सम्भ्रान्त नागरिकों के आग्रह पर विद्यालय में रहना स्वीकार कर लिया तथा डिग्री की कक्षाएँ उन्होंने अपने उत्तरदायित्व पर तथा अपने स्रोतों के आधार पर प्रारम्भ कर दिया जोकि २ वर्ष तक निरन्तर प्रगति पर रहा । किन्तु विधि का विधान जिसके समक्ष हम सभी नतमस्तक हैं, वह व्यवधान ग्रोवर जी के समक्ष भी उपस्थित हुआ, और वह था उनके पतिदेव आदरणीय श्री ऋषिदेव ग्रोवर की अस्वस्थता, जिन्हें इस आयु में उपचार, देखभाल की आवश्यकता थी । गुणवतीजी को अपने कर्तव्य का पालन करना पड़ा और परिणामस्वरूप डिग्री कक्षाएँ सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकीं । मैं भी अवस्था अधिक होने के कारण अपना दायित्व नहीं निभा सकता था और डिग्री की कक्षायें बंद कर देनी पड़ीं ।

उल्लेखनीय है कि विद्यालय प्रांगण के जिस ओर डिग्री कालेज खोलने के लिये स्थान निश्चित किया गया है और जिसमें एक भव्य यज्ञशाला बनी हुई है तथा प्रतिवर्ष आर्यसमाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न होता है उस स्थान तथा इण्टरकालेज के स्थान के मध्य में विद्यालय के स्वामित्व में ही एक अवैध मार्ग बना हुआ था जिसके बाहर गेट लगवाने में ग्रोवर जी ने जिस साहस एवं धैर्य का परिचय दिया वह सराहनीय है ।

श्रीमती गुणवती ग्रोवर की सेवाओं तथा विद्यालय के लिये समर्पित उनके जीवन से प्रभावित होकर विद्यालय कमेटी ने उन्हें कमेटी की उपाध्यक्षा निर्वाचित किया है । वह वर्तमान में लखनऊ में रहते हुये भी विद्यालय के प्रत्येक कार्य में भाग लेती-हैं । ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें स्वस्थ रखे, तथा भविष्य में उनके जीवन पर्यन्त उनका सहयोग एवं आशीर्वाद विद्यालय को प्राप्त होता रहे ।

इन शब्दों के साथ ग्रोवर जी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता, तथा उनको आशीर्वाद प्रदान करता हूँ ।

आर्य कन्या विद्यालय-वर्तमान में

श्रीमती गुणवती ग्रोवर के सेवा से निवृत हो जाने के पश्चात् उनके साथ रहकर उनके गुणों तथा योग्यता से अनुभव प्राप्त विदुषी कु. वीनावर्मा कार्यवाहक प्राचार्या का पदभार बड़ी ही योग्यता तथा परिश्रम से संभाल रही हैं । विद्यालय के अनुशासन और शिक्षण में किसी भी प्रकार की कमी नहीं

है तथा हाईस्कूल और इन्टर का परीक्षाफल पूर्ववत् ही उत्तम हो रहा है । वीना जी स्वभाव से सरल एवं मृदुभाषी हैं, अपने उत्तरदायित्व के प्रतिपूर्ण सजग रहती हैं । मुझमें उनकी आस्था एवं आदर है । वह मेरे अनुरूप हैं तथा मैं पूर्णरूपेण उनके कार्यों से सन्तुष्ट हूँ । इधर दो वर्षों से मैं अपनी अस्वस्थता तथा दीर्घायु के कारण अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह पूर्ण रूप से नहीं कर पा रहा हूं, और इस कारण से वीना जी को स्थायी प्राचार्या की नियुक्ति के लिये जो प्रयास विभाग से होना चाहिये था वह नहीं हो पा रहा है और यह कमी बनी हुई है । मेरा आशीर्वाद उनके साथ है तथा मुझे विश्वास है कि विद्यालय का भविष्य उनके हाथों में सुरक्षित एवं उज्ज्वल है ।

विद्यालय की शिक्षिकाएँ पूरी तन्मयता तथा उत्तरदायित्व के साथ अपना कार्य कर रही हैं । प्रायः सभी में प्रेम एवं सौहार्द्रय है, किन्तु कुछ त्रुटियां हैं, और वह है कि कुछ अध्यापिकायें अधिकार के प्रति अधिक सजग रहकर कुछ कार्य कर रही हैं जिससे विद्यालय की गरिमा पर प्रभाव पड़ता है तथा उससे पारस्परिक संबंध में भी तनाव आता है । मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि उनका उचित अधिकार हमेशा सुरक्षित है तथा किसी के प्रति कोई भेदभाव की भावना नहीं है । ईश्वर उन सभी को सद्‌बुद्धि प्रदान करें जिससे वह अपने कर्तव्य का पालन करते हुये विद्यालय की सेवा, प्रेमभाव से करती रहें ।

विद्यालय की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं प्रगति के साथ जुड़ी हुई है श्री रामबहोर मौर्य (विद्यालय के बड़े बाबू) श्री त्रियुगीनारायण त्रिपाठी, श्री लालजी पाठक एवं श्री रामसूरत मौर्य की सेवायें, जो अपने-अपने पदों पर पूरी ईमानदारी और तत्परता से कार्यरत हैं । सभी आज्ञाकारी हैं, तथा सभी की मुझमें आस्था है । इन सभी में, विद्यालय के प्रत्येक कार्य में इनके अपनत्व तथा त्याग की भावना है । मेरे व्यक्तिगत जीवन में तथा विद्यालय के कार्यों में हर सम्भव सहयोग मुझे प्राप्त होता है तथा सभी मेरे सुख-दुःख के साथी हैं । मुझे इन सभी पर पूरा भरोसा है तथा इनके हाथों में विद्यालय का भविष्य सुरक्षित हैं । ईश्वर सभी को दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे इस विद्यालय की सेवा सर्वदा, पूर्ववत् करते रहें ।

विद्यालय का सेवक वर्ग जिसमें रामअचल, धर्मराज, रामानन्द, श्यामजी, तीजू वगैरह हैं तथा यशोदा, महिला सेविकायें कार्यरत हैं, सभी आज्ञाकारी और स्कूल के प्रति वफ़ादार हैं, सभी से मैं संतुष्ट हूँ ।

विद्यालय का भविष्य

विद्यालय की स्थापना से विद्यालय के वर्तमान स्वरूप तक का संक्षिप्त वर्णन मैने अपनी स्मरणशक्ति से प्रस्तुत किंया है इसमें भूल भी स्वाभाविक है और यदि कोई खास प्रसंग अछूता रह गया हो तो उसके लिये पाठकगण क्षमा करेंगें । मेरे ४६ वर्ष के प्रबन्धक काल में अनुभव के आधार पर मैं निश्चित रूप से पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि विद्यालय का भविष्य स्वर्णिम है तथा हर प्रकार से सुरक्षित है । इण्टरमीडिएट में विज्ञान-विभाग की कमी है जिसके लिये प्रयत्न जारी है । मेरी इच्छा है कि मेरे जीवनकाल में यह पूर्ण हो जाय किन्तु यदि किसी कारणवश सम्भव नहीं हो सका तो भी विश्वास है कि इसकी पूर्ति भावी अधिकारी लोग अवश्य करेंगे । एक और प्रबल इच्छा है, कन्या विद्यालय को डिग्री कालेज में परिणत करने की जिसके लिये मेरे मित्र पूर्व प्राचार्य श्री देवीप्रसाद मिश्र भी बराबर प्रोत्साहित करते रहते हैं । अपने स्वास्थ्य की स्थिति को देखते हुये मेरे जीवन काल में इसकी पूर्ति सम्भव नहीं प्रतीत होती किन्तु मैं पूर्ण आशान्वित हूं कि भविष्य में यह विद्यालय अवश्य डिग्री कालेज का रूप धारण करेगा ।

मैं अपने कार्यकाल में प्रत्येक दृष्टि से सन्तुष्ट हूँ तथा सभी की मुझ में पूर्ण आस्था है । टाण्डा नगरवासियों में हिन्दू मुसलमान, सिक्ख सभी ने मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है और आशा है कि संस्था को इसी प्रकार का सहयोग, आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहेगा । इन शब्दों के साथ सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ और सभी को मेरा आशीर्वाद ।

दयानन्द बाल-विद्या मन्दिर, टाण्डा

आर्यसमाज ने, शिक्षा के क्षेत्र में दक्षिण दिशा छोड़कर समूचे भारतवर्ष में जो कार्य किया उस तरह से व्यवस्थित एवं संगठित रूप से अन्य किसी संस्था ने नहीं किया, और आज भी देश में आर्यसमाज के अन्तर्गत जितनी शिक्षण संस्थाएँ कार्यरत हैं उसकी तुलना कोई भी संस्था नहीं कर सकती। आर्यसमाज के इस योगदान से जो क्रान्ति आयी उसका परिणाम है आज का स्वतन्त्र भारत। किन्तु देश का दुर्भाग्य है कि १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उस समय के राजनैतिक कर्णधारों ने अपने राजनैतिक स्वार्थ की सिद्धि के लिये भारतवर्ष को धर्मनिरपेक्ष राज्यकी संज्ञा दी, तथा धार्मिक संस्थाओं द्वारा संचालित संस्थाओं के ऊपर अंकुश रखना प्रारम्भ कर दिया।

जो शैक्षणिक संस्थायें सरकार से सहायता प्राप्ति के आधार पर चलती थी उन्हें अहित को स्वीकार करना पड़ा, जिससे संस्था के मूल उद्देश्य की पूर्ति में बाधा उत्पन्न होना स्वाभाविक था । राजतन्त्र के इस कुचक्र में बाधित होकर आर्यसमाज ने निर्णय किया कि शिशु-बालक तथा बालिकाओं के लिये निजी स्रोतों में विद्यालय खोले जाय। आर्यसमाज के इस निर्णय के सूत्रधार थे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् एवं कर्मठ आर्य नेता स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री।

सन १९७५ में आर्यसमाज स्थापना-शताब्दी दिल्ली में मनाई गई जिसमें टाण्डा से लगभग पच्चास आर्य परिवार सम्मिलित हुये। वहां से लौटने के पश्चात टाण्डा के आर्यो ने भी आर्यसमाज प्रांगण में बालमंदिर खोलने का निश्चय किया और उसका नामकरण दयानन्द बाल-विद्या-मन्दिर किया गया, तथा विद्यालय की आचार-संहिता बनाने का दायित्व, सर्वश्री प. निजामित्र शास्त्री श्री धनश्यामजी आर्य तथा प. देवनारायण पाठक को सौंपा गया। तीनो व्यक्ति शिक्षा विद् हैं और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इनलोगों के परिश्रम से दयानन्द बाल-विद्या-मंदिर टाण्डा की आचार-संहिता तैयार हो गयी और विद्यार्य सभा ने सर्वसम्मति से विद्यालय खोलने की अनुमति प्रदान कर दी, फलस्वरूप दयानन्द बाल-विद्या-मन्दिर का प्रारम्भ यज्ञोपरान्त कर दिया गया । विद्यालय के संचालन के लिये एक विद्यालय कमेटी का गठन किया गया जिसके श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य (बिल्लूबाबू) अध्यक्ष, श्री मिश्रीलाल आर्य, संरक्षक, श्री धनश्याम आर्य, प्रबन्धक बनायें गये। विद्यालय के आचार्य पद पर प. देवनारायण पाठक बी. ए., बी. एड. की नियुक्ति की गई।

लगभग ६ माह पश्चात पाठकजी ने एम. ए. की परीक्षा देने हेतु अवकाश के लिये आवेदन-पत्र दिया जिसे प्रबन्धक महोदय ने स्वीकृति नहीं प्रदान की। अस्तु, पाठकजी त्यागपत्र देकर विद्यालय के उत्तरदायित्व से मुक्त हो गये।

पाठकजी के पश्चात श्री युगलकिशोर भाटिया को आचार्य का कार्यभार सौंपा गया किन्तु वह भी अधिक समय तक कार्यरत नहीं रह। तत्पश्चात श्री प. सत्यप्रकाश आर्य की नियुक्ति आचार्य पद पर की गई। उन्होंने लगभग तीन वर्ष तक बड़ी योग्यता एवं परिश्रम से विद्यालय की सेवा की साथ ही आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में भी उनका सराहनीय योगदान रहा। सत्यप्रकाश जी की प्रेरणा से पाठकजी तीन वर्ष पश्चात् पुनः दयानन्द बाल-मन्दिर की सेवा शिक्षक के रूप में करने लगे। ज्ञातव्य है कि पाठकजी उस तीन वर्ष की अवधि में १जनवरी १९७६ ई. से १८ फरवरी १९८१ ई. तक स्वामी ब्रह्मानन्द

सरस्वती द्वारा स्थापित एवं संचालित गुरुकुल वेदव्यास आश्रम, राउरकेला (उड़ीसा) के अधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाल रहे थे, किन्तु पारिवारिक अशान्ति के कारण पाठकजी को वहां से मुक्ति लेनी पड़ी। श्री सत्यप्रकाश जी के पश्चात् पाठकजी से आचार्य पद स्वीकार करने का आग्रह किया गया किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया तदुपरान्त श्री सियाराम मौर्य को प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया। मौर्य जी का व्यवहार उत्तम रहा। लगभग दो वर्ष पश्चात् उनकी नियुक्ति राजकीय विद्यालय में हो गयी, और वह दयानन्द-बाल-मंदिर से सेवा निवृत्त हो गये।

श्री सियाराम मौर्य के उपरान्त, बहुत अनुरोध पर श्री देवनारायण पाठक ने लगभग २ वर्ष तक पुनः प्रधानाचार्य पद पर रहकर विद्या मन्दिर की सेवा की और बाल-शिक्षा निकेतन टाण्डा में नियुक्ति हो जाने पर विद्या मन्दिर से अवकाश प्राप्त कर लिया।

पाठकजी के पश्चात् श्री ओमप्रकाश चौहान दयानन्द-बाल-मन्दिर में प्रधानाचार्य नियुक्त हुये और वर्तमान में पूर्ण योग्यता एवं निष्ठा से सेवारत हैं।

उल्लेखनीय है कि कुछ समय पश्चात् श्री धनश्याम आर्य ने प्रबन्धक पद से त्यागपत्र दे दिया और तबसे मैं दयानन्द-बाल-मन्दिर के प्रबन्धक का कार्यभार संभाल रहा हूं। वर्तमान में सात शिक्षक कार्यरत हैं तथा लगभग ३५० छात्र-छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय में शिक्षा का स्तर उत्तम है। शिक्षकगण पूरा पारिश्रमिक नहीं मिलने पर भी सेवा की भावना से काम कर रहे हैं और सन्तोषजनक ढंग से सीमित साधनों के अन्तर्गत विद्यालय का विकास हो रहा है। विद्यालय में न्यून से न्यून आय के लोगों के बच्चों को ध्यान में रखकर विद्यालय का शुल्क अति अल्प रखा गया है। इस तरह आर्य समाज, अपने कर्तव्य का पालन करते हुये जनता-जनार्दन की सेवा में रत है।

आर्य समाज टाण्डा के वर्तमान सदस्य तथा आर्यजन सभी उत्साही एवं कर्तव्य परायण हैं। अतः मुझे सन्तोष है कि आर्यसमाज व उसके अन्तर्गत कार्यरत संस्थाओं का भविष्य उज्ज्वल है।

जीवनादर्श

अध्याय – ५

जीवनादर्श

अपने जीवन के अनुभव के आधार पर यह निवेदन करना चाहता हूं कि आस्तिकता और सदाचार के बल पर मनुष्य बहुत उन्नति कर सकता है। मैंने इन दोनों बातों को आर्यसमाज से सीखा और यथासम्भव उन्हें अपने जीवन में उतारा है। मुझे सामाजिक कार्यों में बहुत रुचि है इसीलिए विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मैने अपना घनिष्ठ संपर्क बनाये रखा। समाज की उन्नति देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती रही है। भगवान की कृपा से मैंने जब-जब सार्वजनिक कार्यों को करने का शुभ संकल्प किया तब-तब मुझे उदारचेता सज्जनों की सहायता मिलती रही और मेरा उत्साह बढ़ता रहा। लोगों से मिलते-जुलते रहने, उत्सवों और सत्संगों में आते-जाते रहने पर मेरे व्यक्तिगत संकीर्ण विचार निर्बल पड़ते गये और समष्टिगत विचार सामाजिक कार्यों तथा संस्थाओं के रूप में उभरने लगे। वैदिक मान्यताओं, आर्य समाज के सिद्धान्तों और अपनी आर्य सभ्यता और संस्कृति के प्रति लगाव बढ़ता गया। वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए टाण्डा आर्य समाज के उत्सवों का समारोह बड़ी निष्ठा और आस्था के साथ मनाने में गौरव बोध करने लगा। यह परम्परा अब तक भी सुचारु रूप से चलती रही है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्यत में भी भगवान की कृपा से और अधिक उत्साह के साथ मेरे पुत्र-पुत्रियों, सगे संबंधियों एवं इष्ट मित्रों द्वारा चलायी जाती रहेगी।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित ग्रन्थों यथा सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, और उनके वेद भाष्यों आदि के अवलोकन, पठन-पाठन प्रचार-प्रसार से सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों, राजनैतिक कुचक्रों एवं देश-द्रोह सरीखे कलुषों का उन्मूलन हो सकता है – ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। वेद-शास्त्र-सम्मत मान्यताओं से ही सामाजिक और राष्ट्रिय उन्नति के साथ-साथ व्यक्तिगत तथा पारिवारिक मर्यादाएं सुदीर्घ काल तक सुरक्षित रूप में स्थिर रह सकती हैं। इसीलिए इस वैज्ञानिक आधुनिक युग की आपा-धापी में से कुछ समय निकाल कर हमें अपने धार्मिक

जीवन का नित्यकर्म यथा संध्या, हवन, भजन, मनन, ध्यान और स्वाध्याय करते रहना चाहिए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह दिनचर्या प्रत्येक वैदिक परिवार का कर्तव्य है। मुझे संतोष इस बात का है कि मैंने यथाशक्ति इस वैदिक दिनचर्याको अपने परिवार में सुरक्षित रखा। अब आगे की बात भविष्यत् में उन सुरूचि सम्पन्न युवा आर्य कर्णधारों पर है जिनका मन, वचन और शरीर पुण्य रूपी अमृत से परिपूर्ण है, परोपकार द्वारा तीनों लोक को प्रसन्न करने वाले हैं, दूसरों के छोटे से छोटे गुण को पर्वताकार मानकर आनन्दित होने वाले हैं किन्तु ऐसे सज्जन कितने हैं? बहुत कम। ऐसे ही सत्पुरूषों के संबध में महाराज भर्तृहरि ने लिखा है :

मनसि वचसि काये पुण्य पीयूष पूर्णा-
स्त्रि भुवन मुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण परमाणून्पर्वती कृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥

जब सन् १८७५ ई. में आर्यसमाज की संस्थापना महर्षि ने बम्बई महानगर में की थी उस समय ऋषिवर की उदात्त कल्पना सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने की रही जिसकी सफलता के मूल रूप सत्य ज्ञान के प्रचारार्थ ऋषि ने विपुल साहित्य सृजन किया और स्वयं आजीवन वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। बाल्य काल के मूलशंकर को प्रौढ़ावस्था तक अनेक बार कालकूट के प्याले भी पीने पड़े किन्तु यह सब किसलिए, मानव समाज के उद्धार के लिए ही तो ऋषिवर ने अपने प्राणों की आहुति परोपकार की पावन वेदी पर चढ़ा दी। महर्षि ने अपने तपः पूत वैदिक विचारों के रूप में हमें दिया ग्रन्थ रत्न 'सत्यार्थ प्रकाश' । इस ग्रन्थ की एक-एक बात मानव जीवन और मानवता के हित संवर्धन में कही गयी है । इस ग्रंथ ने मुझे आर्यसमाज के कार्यो में अपना तन-मन-धन समर्पित कर देने की प्रेरणा दी है । इसमें लिखा है। देखिए ऋषिवर दयानन्द के निष्पक्ष हार्दिक उद्‌गार।

"इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। -------- क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।"

सत्यार्थ प्रकाश (एकादश समुल्लास)

ऋषि पुंगव के ये बेलाग, दो टूक, निर्भ्रान्त और सुस्पष्ट उद्गार मुझे अपने राष्ट्र और समाज के प्रति अपार निष्ठा, आस्था, श्रद्धा, प्रेम एवं भक्ति भाव से आपूरित कर सतत प्रेरणा देते रहे और मेरा मन-मानस ऐसे उदात्त, उदार तथा सार्वजनीन विचाराम्बार के प्रवेग में उड्डीयमान, होता हुआ वैदिक मान्यताओं, वैदिक धर्म और राष्ट्र सेवा में अजस्त्र उत्साह एवं पूर्ण मनोयोग से लगता रहा। इसके साथ ही साथ जब मैं यह सुनता और देखता कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र आनन्द कुमार आर्य अपने सम्पूर्ण परिवार, मित्र मंडली और सुपरिचितों के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल और कलकत्ता की आर्य समाजों के कार्यों को सर्वात्मना समर्पित भाव से संभाल रहे हैं और उनके साथ हमारे समस्त परिजन ऐसे पावन कार्य में उनका सहयोग दे रहे हैं तब मेरा हृदय और मन गद्गद् हो उठता है। यदि मेरी यह लघु आत्मकथा आप महानुभावों को यत्किंचित सद्प्रेरणा दे सकी तो वही आपका परितोष मेरे इस लघुजीवन ज्योति का यथेष्ट स्नेहिल संबल, पाथेय और पारितोषिक बनेगा।

इत्यलम्

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ओ३म् स्वस्ति, ओ३म् स्वस्ति, ओ३म् स्वस्ति।

संस्मरण
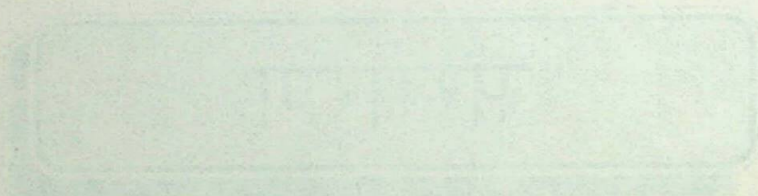
आत्मज की ओर से—श्रद्धा-सुमन

— आनन्द कुमार आर्य

२८ दिसम्बर १९९० के सायंकाल का समय मेरे अब तक के जीवन की घोर परीक्षा की घड़ी। पूज्य पिता जी की अस्वस्थता के समाचार से उद्विग्न, उद्वेलित जयपुर से उपलब्ध साधनों के द्वारा शीघ्र टाण्डा पहुंचने की चिन्ता में जयपुर स्टेशन पर था कि समाचार मिला कि पिताजी नहीं रहे। समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया कि इतनी जल्दी में यह सब कुछ कैसे हो गया? मनःस्थिति के किसी कोने में भी ऐसे समाचार की आशंका लेशमात्र नहीं थी। वह रुग्णावस्था में चल रहे थे, मैं कलकत्ता में रहता था, अस्वस्थता की सूचना मिलते ही मैं टाण्डा पहुंच जाया करता और उन्हें कलकत्ता ले आता, उपचार होता वे ठीक हो जाते तो तुरन्त टाण्डा पहुंचने की जिद करते और उन्हें टाण्डा पहुंचा दिया जाता। यह क्रम चलता रहा, उसी क्रम में आश्वस्त होकर मैं शीघ्र टाण्डा पहुंचकर पिताजी को कलकत्ता ले जाने की उधेड़बुन में था कि एकाएक मेरे उस चिन्तन को झटका लगा और उसे पूर्ण विराम देना पड़ा। इतनी जल्दी मेरा अवलम्ब खो जायेगा। जीवन के चौवन वर्ष जिस निश्चिंतता एवं पूर्णता से बीते वह सहारा चला गया। मैं अनाथ, असहाय हो गया।

किन्तु, पितृजन से संजोये धैर्य ने मेरा मार्ग प्रशस्त किया और मैं जब अपने बचपन से इस समय तक के जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ तो मुझे शक्ति मिलती है स्नेहिल उदार पिता के प्यार की, उनके सिखाये हुये कर्त्तव्य की। उनकी शिक्षा कानों में गूंज रही है, वही मेरी धरोहर है और उसके सहारे मुझे कर्त्तव्य बोध होता है, मैं उस मार्ग पर चल पड़ता हूँ।

मेरी स्मृति में वह हरएक सुबह विद्यमान है जब पिता जी हम सबको जगाकर भक्ति के भजन स्वयं गाते और गवाते थे, संध्या के मन्त्रों का पाठ सिखाते थे। गृह में किसी अनुष्ठान अथवा पर्व पर यज्ञ अवश्य होता और उसमें यजमान के स्थान पर पिताजी हम लोगों को छोटी अवस्था से ही विठाते और घृत की आहुतियां स्वयं न देकर हम लोगों से दिलवाते थे। एक पिता के नाते कितनी महानता थी उनमें, कितना विशाल हृदय था उनका जो अपने

पुत्रों को बाल्यावस्था में ही उत्तरदायित्व का बोध कराते, इससे उन्हें जो सन्तोष, सुख प्राप्त होता वह उनकी सबसे बड़ी पूंजी थी। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों, पर्वों और उत्सवों पर आर्यसमाज मंदिर नियमित रूप से ले जाते। वे बहुत सचेत थे पारिवारिक धर्म-कर्त्तव्यों से, परिणामस्वरूप उसकी छाप और संस्कार आज भी परिवार में विद्यमान है।

पूज्य पिता जी के जीवन से सम्बन्धित प्रसंगों एवं उनके जीवन की उपलब्धियों के विषय में विद्वानों, सगे सम्बन्धियों, स्वजनों ने विस्तृत वर्णन अपने संस्मरण में दिया है। मैं उसकी पुनरावृत्ति न करके अपने स्वानुभूत प्रसंगो का वर्णन करना समीचीन समझता हूँ। बाल्यकाल से १८ वर्ष की आयु तक उनके सानिध्य में रहकर जो संस्कार संचित किये उसका संक्षिप्त उल्लेख कर चुका हूँ। अब जीवन के वे प्रसंग हैं जिनसे युवावस्था को पार किया है और आज जो कुछ हूँ पिताजी के संस्कारों का ही प्रतिबिम्व हूँ।

सन् १९५५ में मैंने इन्टरमीडिएट पास किया उसके पश्चात् की शिक्षा टाण्डा में उपलब्ध नहीं होने से पिताजी ने ग्रेजुएशन करने के लिए घर में विरोध होने के बाद भी लखनऊ भेजा। लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया और आवास की व्यवस्था विश्वविद्यालय के छात्रावास में उपलब्ध हो गयी। मैंने केवल दो वर्ष वहां अध्ययन किया। बी.ए.करने के पश्चात् अपने व्यापार में लग गया। उन दो वर्षों के छात्रावास काल में पिताजी के अगणित पत्र मेरे पास पहुंचे थे, जो नैतिक शिक्षा से लेकर कर्त्तव्य-बोध, देश की परिस्थिति के वर्णन, साथ में सिनेमा आदि न देखने की सुशिक्षा से परिपूर्ण होते थे। काश! मैं उन पत्रों को संजो कर रखे हुये होता जिससे भावी सन्तानों को बोध होता कि एक पिता अपने पुत्रों के भावी जीवन के प्रति किस हद तक चिन्तन करता है। पिता और पुत्र का व्यवहार कितना मधुर, सुखद तथा मित्रवत् होना चाहिए इसके आदर्श उदाहरण थे मेरे पिताजी। पत्रों में सीख का वही क्रम सन् १९५७ से १९६४ तक चलता रहा जब कि उन दिनों मैं स्थायीरूप से कलकत्ता में निवास करता था।

७ मार्च सन् १९६४ को मेरा विवाह संस्कार पटना में सम्पन्न हुआ था। मैने वहुत आग्रह करके बाबूजी के लिये शुद्ध खादी सिल्क का कुर्त्ता वनावाया था जिसको उन्होंने वहुत अनुनय विनय के पश्चात् कुछ घण्टों के लिये ही धारण किया था उसके तदुपरान्त तो पिताजी का वही श्वेत खादी का परिधान

आजीवन रहा। यह उनके जीवन के मूलाधार सिद्धान्त सादाजीवन उच्चविचार का द्योतक है। पिताजी के जीवन की एक विकट घड़ी का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है और वह है सन् १९६५ ने पिताजी के मधुमेह रोग से पीड़ित होने की घटना। टाण्डा में उपचार की उचित व्यवस्था के अभाव में पिताजी को पटना ले जाया गया। वहां मेरी ससुराल के लोगों ने सारी व्यवस्था अपने निवास स्थान पर ही की। उन लोगों की सेवाओं का फल हुआ कि पिताजी शीघ्र ही स्वास्थ्यलाभ करने लगे। ईश्वर की कृपा से नित्यकर्म करने में उन्हें किसी के सहारे की अवश्यकता नहीं पड़ती थी। परन्तु वैठने में कठिनाई होती थी और उस कारण से नित्य यज्ञ करने में असुविधा थी जिसके लिये वह बेचैन रहते और यज्ञ न कर पाने की असमर्थता उनकी उदासी का कारण बनी हुई थी। एक दिन मुझसे बोले कि तुम यज्ञ करना प्रारम्भ करो तो मुझे बहुत सन्तोष होगा तथा शान्ति मिलेगी। मैंने पिताजी के आदेश का पालन कर नित्य यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया जिससे उन्हें आन्तरिक सुख की अनुभूति हुई थी, और प्रफुल्लित रहने से उनके स्वास्थ्य में निरन्तर सुधार होने लगा। इससे संबंधित एक और अंश है जिससे पिताजी के हृदय में अन्तर्निहित समाज के प्रति प्रेम और कर्त्तव्य का बोध होता है। पिताजी के पटना आवास में आर्य समाज टाण्डा का पूर्व नियोजित वार्षिकोत्सव का समय आ गया था. उसे अपने समय पर सफल करने के लिये उन्होंने मेरे लघुभ्राता श्री राजेन्द्रकुमार को टाण्डा भेजा था।

आर्यसमाज के उत्थान, उसके प्रचार की कितनी तड़प, कितनी उत्कट वेदना पिताजी के हृदय में थी इसकी एक झलक सन् १९८० की घटना से परिलक्षित होती है। वह घटना घटित हुई थी कलकत्ता के आर्य समाज बडाबाजार की नं. १ मुंशी सदरुद्दीन लेन स्थित भूमि के लिए जिसके एक अंश में स्थानीय आततायियों ने एक शिवमंदिर की स्थापना कर दी थी तथा वाकी भूमि का अधिकांश अराजक तत्वों के अधिकार में था। शिवमंदिर का विरोध करने पर आर्यसमाज के तत्कालीन मन्त्री श्री चान्दरतन-दम्माणी को आततायिओं ने कठोर कुठाराघात से मृतप्राय कर दिया था और वह मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में भर्ती थे। मैं उन दिनों व्यापारिक कार्य से वम्बई गया हुआ था और पिताजी कलकत्ता आये हुये थे। मेरे वम्बई से लौटने पर पिताजी ने दुःखित होकर उक्त घटना का वर्णन किया, सहजभाव से सहानुभूतिपूर्वक मैने पूछा कि आप चाहते क्या हैं? पिताजी ने स्पष्ट कहा कि मैं चाहता

हूँ कि तुम आर्य समाज के कार्यों में रूचि लो। मैं देख रहा हूँ कि आर्यसमाज का कार्य मेरे परिवार में मेरे तक ही सीमित रह जायेगा। तुम लोगों की आस्था तो आर्य समाज में है, सन्ध्या, हवन करते हो इससे तो सन्तोष है, किन्तु आर्य होने के नाते समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य को भी समझना और उसका पालन करना चाहिये। तुम आर्यसमाज बडाबाजार की भूमि को विधर्मियों से छुडाकर समाज पर बहुत उपकार करोगे। तुममें उसे करने की क्षमता है और मुझे विश्वास है कि उसमें तुम्हे अवश्य सफलता प्राप्त होगी। मैं उस रात्रि सो नहीं सका, और सोचता रहा कि जिस पिता ने आज तक कुछ मांगा नहीं, मेरी आकांक्षाओं का सर्वदा आदर किया और आज वह मुझसे आशा कर रहे हैं कि समाज के लिये कुछ करूँ, मुझे अपने कर्त्तव्य का बोध ही तो करा रहे हैं। वह मेरे में, धर्म, समाज, देश, जाति के लिये कुछ करने की क्षमता देख रहे थे और उन्हें मुझपर पूर्ण विश्वास था अतः मैने निश्चय किया कि पूज्य पिताजी की आकांक्षाओं का आदर करना ही मेरा कर्त्तव्य है और दूसरे दिन प्रातः ही मैने उन्हें आश्वस्त किया कि आपकी आज्ञा का पालन होगा। इससे पिता जी की प्रसन्नता देखते बनती थी। ईश्वर की महती कृपा तथा पिताजी के आशीर्वाद से २३ दिसम्बर १९८३ को उस कार्य में सफलता मिली और आर्य समाज बड़ाबाजार की पूर्ण-भूमि आतताइयों से खाली हो गई। इससे एकतरफ तो मुझे आन्तरिक शान्ति प्राप्त हुई कि मैंने पिताजी को दिये गये वचन का पालन किया और दूसरी तरफ उन्हें इस कार्य से कितना सन्तोष प्राप्त हुआ होगा यह तो वही जानें।

सन् १९८२ में स्व. पूनमचन्द आर्य की प्रेरणा से आर्य समाज कलकत्ता ने पिताजी का अभिनन्दन किया था और उसमें उक्त समाज की तरफ से आर्यकन्या विद्यालय टाण्डा को पांच सिलाई मशीन तथा ३१०० (तीन हजार एक सौ) नकद प्रदान किया गया था जिससे उस वक्त विद्यालय की एक भारी कमी गृह विज्ञान की पूर्ति हुई थी। पिताजी इस अवसर का सर्वदा वर्णन करते और श्री पूनमचन्द जी के इस उपकार को भूलते नहीं थे। उनके दिवंगत होने पर पिताजी बहुत मर्माहत हुये थे। सन् १९८५ में आर्यसमाज कलकत्ता १९ विधान सरणी की स्थापना शताब्दी में पूज्य पिताजी ने भाग लिया था और उनके विद्यालय की छात्राओं ने समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम उपस्थित किया उससे उन्हें आन्तरिक प्रसन्नता प्राप्त हुई थी।

इस संदर्भ में एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसका सूत्रपात मेरे द्वारा संचित शिक्षाप्रेम जिसका सम्पूर्ण श्रेय पूज्य पिताजी को है। उनके द्वारा स्थापित एवं संचालित विद्यालयों के कार्यकलापों से उनके सानिध्य में रहकर जो अनुभव मैने प्राप्त किया था उसके आधार पर मुझमें कलकत्ता में एक उच्चस्तरीय शिक्षा संस्था के प्रारम्भ करने की प्रबल इच्छा बलवती होती जा रही थी, और वह अवसर, आर्यसमाज भवानीपुर की ६१ नं. डायमन्ड हार्वर रोड, कलकत्ता - ३७ स्थित विशाल भूमि में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की स्थापना करने का सन् १९८३ में, ईश्वर ने प्रदान किया। मुझे उस स्कूल का प्रबन्धक बनाया गया। मेरे अथक परिश्रम से अल्पसमय में ही विद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया। कलकत्ता आगमन पर मैने पिताजी को, स्कूल दिखलाया, सब कुछ देख कर वे बहुत प्रसन्न हुये और अपने उद्‌गार को रोक नहीं सके जिसके अन्दर आत्मीयता भरी थी, सन्तोष की सुखद शान्ति परिलक्षित थी, उसके द्वारा अपने जीवन को सफल समझ रहे थे कि उनके परिवार में उनके अनुरूप सेवा एवं श्रद्धा की भावना आर्यसमाज के प्रति निहित है। समाज के प्रति इस तरह की परम भक्ति का उदाहरण यदा कदा ही देखने को मिलता है।

अब मैं पिताजी के जीवन के अंतिम दिनों के मुख्य अंश का वर्णन करना चाहता हूँ जिसका प्रारम्भ जून १९९० से होता है। पिताजी टाण्डा में भयंकर रूप से पीड़ित हो गये थे किन्तु उनके आत्मबल की बलिहारी थी कि उन्होंने अपनी रुग्णावस्था का संकेत तक नही दिया था, और टाण्डा जैसी छोटी जगह में उपचार का उचित साधन नहीं होते हुये भी वहीं के इलाज पर निर्भर कर रहे थे। स्वास्थ्य में निरन्तर ह्रास के लक्षण परिलक्षित होते देख माता जी ने उनकी अवस्था का चित्रण अपने पत्र में किया। समाचार मिलते ही में टाण्डा के लिये प्रस्थान कर गया और वहां पहुंचकर पिता जी के स्वास्थ्य पर दृष्टिपात करते ही किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा हो गया, किन्तु उसी क्षण अपने को संभाला और शीघ्र से शीघ्र पिताजी को कलकत्ता ले जाने का निर्णय कर डाला। कलकत्ता पहुंचते ही विशेषज्ञों से जांच कराके उपचार प्रारम्भ कर दिया गया। ईश्वर ने हम सभी की प्रार्थना को स्वीकार किया और पिताजी को स्वास्थ्य लाभ होना प्रारम्भ हो गया। हम सभी तथा चिकित्सक हर भरसक प्रयत्न में प्रयत्नशील थे कि पिताजी की अन्तिम इच्छा आर्यसमाज टाण्डा की शताब्दी देखने एवं करने की अवश्य पूर्ण हो और लगातार नियमपूर्वक उपचार

से हम सभी लोग पूर्ण आश्वस्त थे कि उनकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। उनमें कितना आत्मबल तथा अपनी मातृभूमि टाण्डा से कितना प्रेम था कि थोडा भी स्वास्थ्य में सुधार होने से वे एक दिन के लिये भी कलकत्ता रूकना नहीं चाहते थे और किसी भी तरह टाण्डा पहुंचकर ही उन्हें शान्ति मिलती थी। अयोध्या में जन्मभूमि राममन्दिर निर्माण प्रकरण को लेकर आर्य समाज टाण्डा के ९९वां वार्षिकोत्सव को स्थगित करना पड़ा था, उस स्थगन से पिताजी इतने बेचैन रहते थे कि उनकी निद्रा भी साथ नहीं देती थी आखिरकार उस स्थगित उत्सव को एक मास पश्चात् ही १ से ५ दिसम्बर १९९० तक कर ही डाले और सर्वदा की भांति सक्रिय रहे किन्तु उनकी आवाज में निराशा के लक्षण थे, थकान थी, और जनता को सम्बोधित करते हुये कह ही डाले कि मैं रहूँ अथवा न रहूँ किन्तु शताब्दी समारोह पूर्ण उत्साह के साथ होना चाहिये तथा विश्वास एवं सन्तोष प्रकट किये कि ऐसा होगा! मैं सभी आर्य बन्धुओं से पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट हूँ। वह शताब्दी उनकी भावना के अनुरूप मनायी जायेगी, किन्तु वह नहीं होंगे।

पिताजी के जीवन के अन्तिम ६ महीनों में मैं उनके सानिध्य मेंअधिक रहा और उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त करता रहा। मेरे जीवन के ५४ वर्ष में मेरी स्मृति में एक क्षण भी ऐसा नही है कि उन्होंने मुझे कभी डाँटा हो अथवा किसी विषय पर उनसे मेरा विवाद हुआ हो। ऐसा पिता पाकर कौन पुत्र धन्य न होगा। उनकी धीरता, समाज के प्रति कर्त्तव्य परायणता का वर्णन कहां तक करूँ किन्तु एक घटना को उद्धृत करने से अपने को नहीं रोक पा रहा हूँ जिसका सम्वन्ध मेरे और समाज के प्रति पिताजी के कर्त्तव्य पालन से है। सन् १९८७ में मैं भयंकर रूप से पीड़ित था, कलकत्ता के बड़े बड़े डाक्टरों ने रोग को कैंसर की संज्ञा दे डाली और मैं यहाँ से पटना तथा वहाँ से ससुरजी और पत्नी के द्वारा बम्वई ले जाया गया। वहाँ बाम्बे हास्पिटल में भर्ती हो गया ११ नवम्बर को आपरेशन का समय निश्चित हुआ। उन्हीं दिनों आर्य समाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव आयोजित था। भयंकर रूप से रूग्ण पुत्र की ऐसी अवस्था में कौन पिता होगा जो विचलित नहीं होगा किन्तु मेरे पूज्य पिताजी को ईश्वर पर भरोसा था कि ईश्वर सब कुछ ठीक करेगा, इस निश्चय व विश्वास के साथ उन्होंने उत्सव समाप्त कराया। मेरे दोनों छोटे भाई प्रिय राजेन्द्रकुमार सालेम (दक्षिणभारत) से तथा प्रिय डा. नरेन्द्रकुमार

विलायत से बम्बई पहुंच गये थे। प्रभुकी लीला अपरम्पार है, आपरेशन पूर्णतया सफल रहा, पूर्व निदान गलत निकला, कैंसर था ही नहीं।

मेरे पिता जी कर्त्तव्य के प्रति कितने जागरुक, दृढ व्रती, सत्यमार्ग पर अड़िग होकर चलने वाले, विपत्ति में भी धैर्य एवं साहस के प्रतिमूर्ति थे। मैने उनके उन्हीं गुणों का वर्णन किया है जिससे मेरा व्यक्तिगत सीधा सम्बन्ध है और जिसका उदाहरण मिलना अन्यत्रदुर्लभ है। उनके ये सारे गुण मुझमें आसकेंगे ऐसा तो मैं नहीं कह सकता किन्तु मैं उस मार्ग पर चलते रहने का प्रयास करूंगा और उनके वे सारे गुण भविष्य में मेरी धरोहर रहेंगे और उसी से प्रेरणा प्राप्त कर मैं अपने कर्त्तव्यपालन का निश्चय करता रहूंगा। मेरा वर्तमान सामाजिक जीवन पिता जी की ही देन है और आज मैं जो कुछ हूँ वह उन्हीं की सत्प्रेरणा का फल है और यह सब कुछ उन्हीं को समर्पित है।

मैं अपने जीवन के प्रत्येक पल को उनसे जुड़ा हुआ समझता हूँ इससे मैं कभी उनका अपने पास न होना मान न पाऊँगा। उनके आदर्श हमारे परविार के अजस्र प्रेरणा स्रोत रहेंगे और प्रतिदिन हमारे व्यवहार और जीवन में प्रतिफलित होते रहेंगे।

महर्षि ने अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में कितना सत्य कहा है कि वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ी भाग्यवान जिसके माता पिता धार्मिक व विद्वान हों।"

ऐसे पूज्यवर पिता के जी चरणों में कोटिशः नमन।

एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व
बाबू मिश्रीलाल जी आर्य

— श्रीमती गुणवती ग्रोवर

बात सन् १९६२ की है जब मुझे पतित पावनी, पुण्य सलिला सरयू तट पर अवस्थित आर्य कन्या इण्टर कालेज में टाण्डा के प्रधानाचार्या पद के लिए समुपस्थित होना पड़ा। चयन समिति के सदस्यों ने मेरी शैक्षिक योग्यता सम्बन्धी अनेक प्रश्न किए परन्तु समिति के एक गांधीवादी खद्दरधारी, स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक कर्मठ समाज सेवी सदस्य ऐसे भी थे जिन्होंने मुझसे कार्य कुशलता और शैक्षिक योग्यता सम्बन्धी प्रश्न न पूछ कर आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली पर ऐसे-ऐसे ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे कि मैं दंग रह गई। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वे मुझे आर्यसमाजी विचारों की मानकर संस्था के सम्पूर्ण भविष्य की बागडोर सौंपना चाहते हैं और कार्यक्षमता के प्रति आशावान हो गए हैं। मुझे ज्ञात हुआ कि ये ही इस संस्था के प्रबन्धक, आर्यसमाज के प्रधान बाबू मिश्रीलालजी आर्य हैं जिन्होंने इस संस्था के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है और तन, मन, धन से इस नन्हें से पौधे को एक विशाल रूप में देखने का स्वप्न मन में संजोये हुए हैं।

श्री मिश्रीलालजी के इस प्रमुख सद्भावपूर्ण एवम् उज्ज्वल उद्देश्य की पूर्ति में निरन्तर जीवन के तीन दशक तक उनका सानिध्य प्राप्त हुआ और मैंने जीवन के अनेक उतार, चढाव, कटु एवम् सत्य अनुभव प्राप्त किए जिन्हें विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनका परिचय ही मेरे लिए जीवन की खट्टी, मीठी मिश्रित अनुभूतियाँ हैं जिनका सामीप्य जिसमें सुमनों का ह्रास है, सत्प्रेरणा सौरभ संचार, ईश्वरीय आस्था का स्थैर्यफल और जिनके द्वारा मानस माधुरी का दान ही फलास्वाद है। धीरता, सहन शीलता, करुणा संत पद्धति से गोस्वामी तुलसीदास के मानस द्वारा जनमानस में रामराज का उदय और स्वामी दयानन्द सरस्वती के नियमों का प्रतिपादन ही उद्देश्य है। जिनकी वाणी घन घटा बनकर मानस की मर्मस्पर्शी पीयूषधारा वर्षण करती है। जिन्होंने अनेक मानस सम्मेलनों को जन्म दिया, पोषण और संचालन किया उन उदार चरित का मैं कहाँ तक

वर्णन करूँ अवर्णनीय है। संस्था पर जब कभी भी आपदाएँ आईं बाबूजी ने उन सभी विषम परिस्थितियों, विपत्तियों, दुःखद क्षणों एवं कठोर संघर्षों का हँस कर मुकाबला किया। अपने इस कार्य काल में हममें ऐसी अपनत्व की भावना समाविष्ट हो गई कि कोई समस्या सुलझाने में कठिनाई न जान पड़ती थी। हमारे पारस्परिक सहयोग का परिणाम यह हुआ कि संस्था को स्वल्पकाल में ही सम्पूर्ण जनपद में विशिष्ट स्थान प्राप्त हो गया और संस्था के प्रति जनता का आकर्षण दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। जहाँ संस्था में छात्राओं की संख्या ३५० थी वहाँ लगभग तीन हजार छात्राओं का अच्छा खासा विशाल विद्यालय बन गया। राज्य की ओर से दक्षता अनुदान भी प्राप्त होने लग गया।

यूं तो फैजाबाद जनपद की उपनगरी टाण्डा बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली के हथकरघा व्यापारियों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण नगरी है परन्तु शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार की दृष्टि से इसका महत्व नगण्य है क्योंकि जिन जुलाहों ने घर-घर में हथकरघा मशीनें लगा रखी हैं वे स्त्री शिक्षा दिलाने के विरोधी थे और बालिकाओं को घर से बाहर निकालने में कतराते थे परन्तु प्रबन्धक महोदय ने अपने अदम्य उत्साह और उनकी प्रेरणा ने इन दाकियानूसी विचारों को जनता के मन से ऐसा उखाड़ फेंका कि वे स्वल्पकाल में स्त्री शिक्षा के प्रवल समर्थक हो गए और उन्होंने अपनी बच्चियों को इस संस्था में शिक्षा दिलाई जिन्होंने आज भी दूर-दूर नगरों में जाकर संस्था का नाम रोशन किया। इस संस्था में पनपते संस्कार भारतीय उच्चकोटि का वैदिक ज्ञान और आर्य विचारों से समन्वित धर्म निरपेक्षता की भावना ने जो मानवतावादी विचारधारा को अपनाया वह किसी से छिपा नहीं है। उपनगरी के सभी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख तथा ईसाइयों ने बाबू जी की इस योजना को सराहा और अर्थिक सहायता भी की। ग्रामीण अँचलों की जनता ने भी अपनी निःस्वार्थ सेवाएं अर्पित की। इस आधार पर हमारा उत्साह दिन प्रतिदिन बढ़ता गया और संस्था ने चाहे वह शैक्षिक क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक क्षेत्र हो संस्था ने दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति की। बाबू जी का त्याग, उनकी तपस्या, लगन, उत्साह और कार्य कुशलता ने उन्हें एक ऐसे स्थान पर पहुँचा दिया जहाँ अमीर और गरीब के बीच भेदभाव भुला दिए जाते हैं जहाँ वह जनता जर्नादन का मार्ग दर्शक बन जाता है।

बाबू जी का स्नेह, प्यार उनकी शुभकामनाएँ और अपनत्व की भावनाएँ सभी कार्यकर्त्ताओं को प्राप्त होती थीं।

मैंने अपने कार्यकाल के ये ३० वर्ष ऐसे व्यतीत किए जैसे सभी मेरे निकटस्थ सम्बन्धी हों। और यह विद्यालय मेरा एक परिवार है और सदा मेरे अन्दर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में समरसता की जीती जागती तस्वीर मूर्तिमान हो गई हो। संस्था की अध्यापिकाएँ, छात्राएँ, कर्मचारी गण सभी उन्हें सम्मान देते थे तथा उनके निर्देशों का अक्षरशः पालन करते थे वहाँ छोटे बड़े अमीर, गरीब सभी अपना भेदभाव भुलाकर हर परिस्थिति में एक दूसरे की सहायता करते तथा दुख दर्द बाँटते थे।

श्री मिश्रीलाल जी इतने सच्चे, ईमानदार स्पष्टवादी तथा कठोर कर्त्तव्य परायण थे कि उनकी यह कर्त्तव्य परायणता मेरे लिए प्रेरणा स्रोत बन जाती इससे सम्बद्ध मुझे एक प्रंसगयाद आता है :-

'कि १५ अगस्त, स्वतन्त्रता दिवस को प्रातः वेला में अविरल मूसलाधार बारिश हो रही थी मैं चिन्तायुक्त थी कि ध्वज गगन में कैसे फहरेगा। मुस्कराते हुए श्री प्रबन्धक महोदय बोले कि इसमें चिन्ता की क्या बात है 'वह अपना कर्तव्य कर रहा है तुम अपना कर्तव्य करो बस क्या था मेरा उत्साह दूना हो गया और कार्य प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न हो गया। कितनी उदात्त भावना थी इन सुनहरे शब्दों में, कितनी ऊँची उड़ान थी कर्तव्य की जिसमें एक गहरी प्रेरणा छिपी थी।

इस प्रकार से अनेकों प्रसंग हैं मेरे प्रशासन काल के जीवन के, जिनके मार्गदर्शन से मुझे सफलताएँ मिलीं इसका सजीव परिणाम यह हुआ कि मैं ही एक मात्र महिला थी जिसको फैजाबाद जनपद में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया यह सब प्रबन्धक महोदय की अनुकम्पा का प्रसाद था। इस पुरस्कार से मैं ही नहीं समस्त टाण्डा नगरी, विद्यालय और एकता की प्रतिमूर्तियाँ अध्यपिकाएँ, छात्रायें तथा कर्मचारी गण गौरवान्वित हुए यह क्या कम गर्व और स्वाभिमान की बात थी। वह समय नहीं भूलता जब विद्यालय के समस्त कर्मचारी तथा छात्राओं ने मेरा स्वागत किया था। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने सन् १९८४ में मुझे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया था।

प्रतिवर्ष आर्य समाज के वार्षिक सम्मेलनों का गठन, भारत के कोने कोने से आए साहित्यकार, विद्वान तथा धार्मिक संतों के ज्ञान द्वारा टाण्डा की जनता में जिस ज्ञानराशि को बिखेरने का अविरल गति से जो बाबूजी ने प्रयास किया वह स्तुत्य है भुलाया नही जा सकता। वे आर्य समाज के प्रधान थे इस संस्था

को जीवित रखने प्रचार और प्रसार करने में उन्होंने ने अपना जीवन अर्पित कर दिया था। टाण्डा में रजौर गुरुकुल और बाल विद्या मन्दिर जिसमें आर्य शिक्षा पद्धति के द्वारा शिक्षित किया जाता है एक जीता जागता प्रमाण है। उनकी लगन और उसमे डूब कर काम करने कि तमन्ना और महत्वाकांक्षा अन्तिम श्वास तक बंधी रही और भविष्य में उसे जीवित और अक्षुण्ण वनाने का संदेश देती रही। कहाँ तक उनके गुणों का बखान करुँ इस लेखनी में शक्ति नहीं है।

कालचक्र बड़ा ही क्रूर है ऐसा मानवस्वरुप प्रतिभाशाली, निर्भीक, कर्मठ सर्वप्रिय व्यक्ति अपने सम्पूर्ण परिवार को बिलखता छोड़ कर चला गया और दे गया एक सन्देश अपनी कर्तव्य-परायणता और लगन का –

सन्देश

ऐ मानव तू संसार देख, कुछ अपनी ओर निहार देख।
मानवता का वह केन्द्र बिन्दु जिसमें बरसाता अमृत इन्दु,
विपयों के चक्कर में पड़ कर तू पीता है अंगार देख।
ऐ मानव तू संसार देख, कुछ अपनी ओर निहार देख।
कर तू अपना कल्याण आज, अपने से अपना त्राण आज,
कर्तव्य पथिक बनकर तू निराकार साकार देख।।
ऐ मानव तू संसार देख, कुछ अपनी ओर निहार देख।

जो सभी के लिए है।

यद्यपि वे हम लोगों के बीच में नहीं हैं पर वह अमर हैं उनकी स्मृति रेखाएँ हमारे हृदय पटल पर सदा अंकित रहेंगी। ऐसे त्यागी, तपस्वी, मनस्वी महामहिम को मेरा कोटिशः प्रणाम् है।

इन श्रद्धा सुमनों के साथ

निवेदिका
गुणवती ग्रोवर, एम.ए.बी.एड
भूतपूर्व प्रधानाचार्या,
आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा (फैजाबाद)
राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

ऋषि के अनन्य सेवक – बाबू मिश्रीलाल जी आर्य

लेखक – डा. ऋषि देव विद्यालंकार

बाबू मिश्रीलाल जी आर्य, ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी, समाज सुधारक, कुप्रथा निवारक, शिक्षा प्रसारक, राष्ट्रवाणी हिन्दी के प्रबल सम्पोषक, सदैव जनहित के कार्यो में संलग्न, सादा जीवन-उच्च विचार वाले आदर्श व्यक्ति थे।

कोई मनस्वी, सदाचारी, दृढ़ आत्मविश्वासी व्यक्तित्व ही समाज की, राष्ट्र की, धर्म की और मानव जाति की निर्विकार मन से सतत् सहज सेवा कर सकता है। श्री मिश्रीलाल जी आर्य ऐसे ही युगपुरूष एवं काल चिन्तक थे जिन्हें सदैव मानव समाज के उत्थान एवं कल्याण की अनवरत चिन्ता रहती थी। उनके क्षणिक सानिध्य से जिस अलौकिक सुख की अनुभूति होति थी उन्हें शब्दों में व्यक्त कर पाना निश्चय ही सम्भव नहीं। उनके नेत्रों से सूर्य की ऊर्जा और मस्तक से चन्द्रमा की शीतलता का आभास होता था और यही ऊर्जा और शीतलता उन्हें प्रतिदिन के कार्य करने की शक्ति और क्षमता प्रदान करती थी। यही कारण था कि वृद्धावस्था में भी उनमें युवा का सा उत्साह और साहस दिखाई देता था।

मुझे तो न केवल उनके प्रत्यक्ष दर्शनलाभ का सौभाग्य प्राप्त हुआ, अपितु जीवन की अनेक समस्याओं और कठिन परिस्थितियों को सुलझाने और विचार विमर्श करने का सुअवसर भी प्रदान हुआ। उनका तेजस्वी चेहरा आज भी मुझे अपनी जटिल समस्याओं एवं चिन्ताओं से ऐसा मुक्त दिखाई पड़ता है जैसे संसार की समस्त क्लान्ति तिरोहित हो गई हो।

पराधीन भारत में उन्हें राष्ट्र की स्वाधीनता के यज्ञ में जेल यात्रा भी करनी पड़ी परन्तु अपनी सैद्धान्तिक लड़ाई में वे किसी के आगे झुके नहीं और न ही नौकरशाही के आगे घुटने टेके। महात्मा गांधी, आचार्य कृपलानी तथा आचार्य नरेन्द्रदेव आदि प्रसिद्ध देश सेवकों के संपर्क का अन्यतम प्रभाव

उनके मानस पर ऐसे अंकित हो चुका था जैसे उन्हें जीवन का मोह रहा ही न हो और सत्यता के प्रसार के लिये वे बेधड़क कटिबद्ध हो गये हों। वे स्वीधानता पाने के अधिकार को प्रत्येक भारतीय का हक ही नहीं अपितु प्राकृतिक धर्म समझते थे। वे तिलक महोदय के पवित्र सन्देश "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" के सच्चे पुजारी थे। वे माँ भारती के सच्चे साधक और उपासक थे। शायद् उसी कारण उन्हें भौतिक सुख सुविधाओं की चकाचौंध वाला जीवन कभी रास नहीं आया। भारतीय सामाजिक संस्कृति में ही विश्वमानव का उत्थान और कल्याण अन्तर्निहित है यह गूढ़ रहस्य वे अपने जीवन में भलीभांति जान चुके थे।

श्री मिश्रीलाल जी के जीवन पर ऋषि दयानन्द का व्यापक प्रभाव रहा। ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थों का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया। यही कारण था कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में अर्पित कर दिया। अनेकों आर्य संस्थाओं की स्थापना की। ऋषि की शिक्षा प्रणाली से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्हेंने अपने जनपद में स्त्री शिक्षा पर उस समय तन्मयता से कार्य किया जब समाज में महिलाओं को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता था। "स्त्री शूद्रो ना धीयताम्" की दकियानूसी और पौराणिक विचारधारा का उन्होंने डटकर विरोध किया और महिलाओं को समाज में सम्मानास्पद अधिकार दिलाने का प्रमुख बीड़ा उठाया। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मानव उत्थान एवम् कल्याण के लिये अर्पित कर दिया।

आज यद्यपि मिश्रीलालजी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु अपनी मानवीय कल्याण एवं उत्थान की विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार के कारण प्रतिपल, प्रतिक्षण हमारे समक्ष जीवित हैं, जीवित रहेंगे और आगामी सन्ततियां उनके बनाए मार्ग पर चलकर सच्ची मानव सेवा कर सकेंगी।

पूर्णमदः पूर्णमिदं

— डा. शान्ति देवबाला, लखनऊ

लगभग सात आठ वर्ष पहले की बात है, उस दिन घर पर ही थी कि कालबेल बजी। द्वार खोला तो खद्दरधारी दो सज्जन एक स्थूलकाय भरे बदन के, अब नाम याद नहीं आ रहा दूसरे श्वेत खादी के वस्त्र कुर्त्ता धोती और टोपी, लम्बी चौड़ी काठी पर स्थूलकाय नहीं, ग्राम्य झलक पर निष्ठावान व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप। उन्होंने मेरे कुछ लेख पढ़े थे और किसी आर्यसमाज में सुना था, वे मुझे टाण्डा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव कार्त्तिक पूर्णिमा के पर्व पर निमन्त्रित करने आए थे। मैं तब विश्व विद्यालय में कार्यरत थी, कार्त्तिक पूर्णिमा का अवकाश तो था पर उससे एक दिन पहले विभाग में एक अत्यन्त आवश्यक मीटिंग के कारण अवकाश लेना संभव न था. मैने असमर्थता प्रकट की, वह बोले यह सब कुछ नहीं, आप प्रातः पूर्णिमा के दिन ही चलें, फैजाबाद पर हमारी जीप आपको लेगी, आपको महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करनी ही है और आगामी कार्यक्रमों में भाग लेना ही है। अत्यन्त शालीन और विनम्र पर ऐसा प्रबल आग्रह कि टाला न जा सका।

वे मिश्री लाल जी थे, यह मेरी उनसे पहली भेंट थी। जाना पड़ा, गाड़ी काफी लेट हुई, फैजाबाद से सीधे जीप से सम्मेलन मंच पर ही पहुँचना पड़ा। सम्मेलन चल रहा था बड़ी संख्या में महिलाएँ थी पंडाल एकदम भरा पड़ा था। इस सम्मेलन की विशिष्टता केवल इतनी नही थी कि महिलाओं की संख्या बहुत थी वरन् पहली ही दृष्टि में जो विशेष लगने वाली बात थी वह यह कि कई बुर्का पहने पर मुंह खोले मुस्लिम महिलाएँ भी थीं। मंच पर विचार प्रकट करने वाली छात्राओं में भी मुस्लिम छात्राएँ थी जो अपने भाषण का प्रारम्भ गायत्री मंत्र अथवा विश्वानिदेव के मंत्र से कर रही थी और उनका उच्चारण अत्यन्त शुद्ध था। सम्मेलन छः बजे तक चला और फिर सायंकालीन सत्र आरम्भ हो गया जो रात्रि ग्यारह बारह पर जाकर समाप्त हुआ। एक अत्यन्त ही व्यस्त दिन। प्रधानाचार्या ग्रोवर जी के यहां ही उन्होंने मेरे ठहरने की व्यवस्था की थी। दूसरे दिन प्रातः यज्ञ में भाग लेने के लिए तैयार ही हुई कि पता लगा मिश्री लाल जी मिलने आये है। कालिज का विशाल प्राङ्गण,

वहीं केवल पांच मिनट के लिए मिलना चाहते हैं। बहुत आभार माना था उन्होने, मेरे पहले दिन की अनवरत व्यस्तता का। मुझे किसी प्रकार कोई कष्ट तो नहीं, भोजन, खान पान, आवास निवास का। बहुत आत्मीय आतिथ्य के बाद भी कुछ न कर पाने की शालीन संस्कृति की छाप थी उन पर। कुछ कष्ट नहीं पर मुझे जरूर आपसे कुछ पूछना है ार्यसमाज के सम्मेलन में इतनी मुस्लिम महिलाएं, यह मंत्रो का उच्चारण करती छात्राएं। फिर जो चर्चा चली तो पांच के पचास मिनट कब बीत गए पता ही न चला। कालिज के पेड़ो से सरकती धूप नीचे फैलने लगी थी नहीं तो शायद और चलती चर्चा। पता लगा दूर दूर तक कोई लड़कियों का स्कूल नहीं, छात्रावास की तो बात ही दूर, फिर यहां तो फीस के नाम पर जो बाजरा गेहू मक्का सब कुछ स्वीकार्य है उन कन्याओं के माता पिता को मिश्री लाल जी पर इतना विश्वास कि बच्चियाँ यहां जितनी सुरक्षित हैं उतनी शायद घर में भी नहीं। हर कन्या के घर से सीधा संपर्क है मिश्री लाल जी का। वे अग्निहोत्र में भी भाग ले रही थीं। भारत के अनेको आर्यसमाजों में जाने का अवसर मिला है, छोटे मोटे तीखे शास्त्रार्थों को सुनने का भी कभी-कभी। पर यह सुरक्षा का आश्वासन, बिना किसी भेदभाव के अपनापन देकर, इनके परिवारों के सुख-दुःख से सीधे जुड़ कर, इन्हें शिक्षा, अध्ययन का अवसर देकर मुस्लिम युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का काम जो यहाँ हो रहा था बिना किसी प्रचार के, बिना किसी आडम्बर, प्रदर्शन के, सहज साँस सा वह इससे पूर्व मुझे कही देखने को नहीं मिला था। शायद यही थी मिश्रीलालजी के व्यक्तित्व की विशिष्टता, टाण्डा के प्रत्येक वर्ग से वे जुड़े थे, प्रत्येक सम्प्रदाय में उनका मान था, समाज का प्रत्येक व्यक्ति उन्हे अपना समझता था। सबके सुख-दुःख केभागी थे, सबकी सेवा में तत्पर। सब उन्हें पितृ तुल्य मानते थे। बट वृक्ष सी छांह थी।

तब से बराबर कार्तिक पूर्णिमा पर उनके आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में भाग लेने का निमन्त्रण आता रहा पर कभी पारिवारिक तो कभी किसी सामाजिक दायित्व के कारण जाना संभव न हो सका। पिछले वर्ष उन्होने अपने समाज के एक वरिष्ठ अधिकारी को ही भेजा पत्र के साथ, स्पष्ट आग्रह था कि वय बढ़ रही है स्वास्थय ठीक नहीं रहता, इस वर्ष तो आप अवश्य आएँ, न जाने किस दिन हंस उड़ जाए। कुछ था उस पत्र में कि मैने हर स्थिति में टाण्डा जाने का निश्चय किया। टाण्डा पहुँच कर पता चला कि मिश्रीलालजी अस्वस्थ चल रहे हैं, घर में भी कुछ दुर्घटना हो गई है, सोचा कल प्रातः तड़के ही उनके घर पर जाकर मिल लूंगी। दूसरे दिन प्रातः उनके

यहाँ जाने के तैय्यार हो ही रही थे कि पता लगा वे बाहर प्राङ्गण में खड़े हैं मिलन के लिए। वही आदर मिश्रित आत्मीयता, वही अपनापन बोले अगले वर्ष शतब्दी समारोह है आपको अवश्य आना पड़ेगा। अभी तो साल भर है कौन जाने क्या हो। तभी तो आपसे कह रहा हूँ कि आप स्वीकृति दे दें, भगवान से मेरी तो यही प्रार्थना है कि प्रभु अगली कार्तिक पूर्णिमा तक की सांसऔर दे दे ताकि शताब्दी समारोह कर संकू। पर यम ने तो नचिकेता से कहा ही था कि मैं यम निर्द्वन्द घूमता हूं कभी भी किसी को भी दायें या बांये घृतसिंचित मधु भात के ग्रास सा चट कर जाता हूँ। देखिये यम की पकड़ से वच पाता हूं कि नहीं पर शताब्दी समारोह तो भव्य होना ही है।

शायद उसीके एकाध माह बाद ही पता चला वे नहीं रहे। शताब्दी समारोह होगा, सवको सुधि आएगी कि वे शताब्दी समारोह देख पाते तो निसन्देह जीवन की समस्त सार्थकता एक साथ पा लेने का आत्मसंतोष उन्हे होता। कही कुछ अधूरा अपूर्ण सा लगेगा। वह कहीं एक दम पूर्ण विराम है। जिसकी हर सास सेवा समर्पण में बीती हो उसमें कही अधूरापन नहीं रहता। वह यहाँ भी पूर्ण जीवन जीता है और वहाँ भी। वह पूर्णाम् अदः पूर्णाम् इदम् ही होता है और मिश्रीलालजी हर सास आर्यसमाज और समाज सेवा को समर्पित थी। उन्होने जीवन निष्ठा की पूर्णता से जिया, एक सच्ची निष्ठा मानव मात्र की सेवा की निष्ठा।

माननीय पूज्य बाबू मिश्रीलाल जी - आर्य श्रेष्ठ

— पं. शान्ति प्रकाश-शास्त्रार्थ महारथी

बाबू मिश्रीलालजी परमेश्वर को प्यारे होकर उनके सानिध्य में चले गये। मुझे आन्तरिक दुःख है कि अब उन महापुरूष के दर्शन न होंगे। मैं एक प्रकार से इस दुःखद समाचार को सुनते ही होश खो बैठा। क्या था और क्या हो गया। वह मेरे सर्वस्व थे आयु समान होते हुए भी उनको मैं उनके प्यार भरे व्यवहार के कारण पिता समान मानता हूँ। मेरे साथ वह पितृ समान ही स्नेह करते आये और अन्तिम दो बार तो उन्होंने मुझे अपने पास ही ठहराया। वह मेरे सम्बल आश्रयदाता एवं शुभ परामर्श प्रदाता थे। मैं उनके प्यार भरे स्नेहमय व्यवहार को कदापि जीवन पर्यन्त नहीं भुला सकता वह महापुरूष थे, उनकी आयु अधिक थी किन्तु वह पूर्ण युवा के समान पाठशाला व आर्यसमाज का कार्य भार और नगर भर की हिन्दू मुस्लिम जनता की सेवा में प्रतिपल संलग्न थे। मैं उनके अपार शुभ गुणों को गिनाने में भी असमर्थ हूँ। मैं जब भी टाण्डा जाता गोघृत से भरा डब्बा मुझे देते और मेरे सर्वथा इन्कार करने पर बोलते कि शास्त्रार्थ करते व रात-दिन पढ़ने और नई खोज करने में लगे रहते हो, दूध-घी के बिना तुम्हें हानि होगी। आर्यसमाज के कार्य कर्त्ताओं को ताकीद करते कि पण्डितजी अपने आप कुछ नहीं माँगते इनका पूरा ध्यान रखा जाय।

में टाण्डा उत्सव पर प्रतिवर्ष बुलाया जाता और मैं वहाँ सहर्ष जाता भी था एक बार मुझे कन्या विद्यालय ले गये और एक कमरे की आधार-शिला मेरे से रखवाये कि इस पर तुम्हारे नाम का पत्थर लगेगा। एक और घटना स्मृति में है जब कि मैं उत्सव पर कलकत्ता गया था, एक दिन सायंकाल प्रधानजी तथा उनके पुत्र मुझे कलकत्ता मध्य से १२ मील की दूरी पर अपनी नई कोठी में ले गये, रात्रि में मैं वहीं पर रहा। प्रातःकाल मेरे द्वारा यज्ञ करवाये और अपने पौत्र का नामकरण संस्कार करवाया इस तरह वह मुझे बेहद प्यार करते थे।

टाण्डा में शास्त्रार्थ प्रतिवर्ष होता था। वहाँ के विद्वान् मौलवी मौलाना नुरमुहम्मद बड़े - बड़ो के छक्के छुड़ा देता था। उनका प्रश्न शंका समाधान में 'सत्यार्थ प्रकाश' पर होता था कि स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जिस मत के मानने वाले करोड़ों लोग हों उसको जो झूठा कहता है वह स्वयं झूठा है। इस्लाम में करोड़ों लोग हैं, स्वामी दयानन्द ने इस्लाम को झूठा कहा अतः वह अपने लेख के अनुसार करोड़ों लोगों के मत को झूठा कहने के कारण स्वयं झूठे ठहरे। मैंने इसका उत्तर दिया कि महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास में ही लिखा है कि 'इय्या का न अकवुदो व इय्या का नस्त ईन' इन शब्दों में स्पष्ट लिखा है कि ईश्वर की भक्ति व उससे सहाय चाहना ही चाहिए। अतः ऋषि दयानन्द ठीक को ठीक लिखते हैं उनपर पक्षपात का दोष नहीं आ सकता। इस्लाम में बहुत सारी बातें झूठी लिखी हैं अतः इस्लाम सच्चा नहीं हो सकता इस तरह स्वामी जी ने सच को सच और झूठ को झूठ कहा। इस पर मौलवी साहब मौन हो गये और प्रतिवर्ष आराम से शंका समाधान में भाग लेते। वेदी पर प्रधान जी सदैव मेरे साथ बैठते थे। टाण्डा में शंका समाधान से जनता को बहुत लाभ होता है और शंका समाधान के समय प्रतिवर्ष उत्सव का मैदान खचाखच भर जाता है। परमात्मा करे आगे भी टाण्डा में उत्सवों की यही शान बनी रहे। माननीय मन्त्रीजी व अधिकारी वर्ग पूज्य स्वर्गीय प्रधान जी की शान के अनुसार वैसे ही उत्सवों में शंका समाधान का कार्यक्रम चलाते रहेंगे।

मैं इस प्रसंग के साथ पूर्ण विश्वास से घोषणा करता हूँ कि पूज्य बाबू मिश्रीलालजी आर्य जाति के महतो महान् महापुरूष थे। उनका जीवन पवित्र था और यह पवित्र जीवन आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के लिए समर्पित था। नियमपूर्वक सन्ध्योपासन व अतिथिपूजन तथा आर्य समाज के लिए सब समय सर्वस्व समर्पण यह उनके जीवन का बहुमूल्य ध्येय था जिस पर आजीवन अडिग होकर वे समर्पित रहे। मुझ पर उनकी विशेष कृपा थी इसका मुझे गर्व है। अब वह भगवान की अमृतमयी गोद के प्यारे हो गये। भगवान उनकी विशुद्ध, पवित्र, परोपकार-प्रिय आत्मा का भला करे। इन्हीं शब्दों के साथ उनकी पावन स्मृति में मेरी श्रद्धाञ्जलि सादर सश्रद्ध समर्पित है।

श्री मिश्री लाल आर्य : एक आदर्श व्यक्तित्व

— प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

हिमश्वेत खादी के परिधान में श्री मिश्रीलाल आर्य प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी दिखाई पड़ते थे। खादी की धोती, खादी का कुर्ता, सिर पर गाँधी टोपी सवकुछ नीचे से ऊपर तक श्वेत खादी का परिधान वड़ा भव्य प्रतीत होता था हाथ में छड़ी चेहरे पर ओजस्विता विचारों में तेजस्विता और उनके निश्चयों में सदा ही सिद्धान्तवादी दृढ़ता एवं कट्टरता दिखाई पड़ती थी।

श्री मिश्री लाल जी आर्य समाज टाण्डा के प्रधान थे जिन्हें प्रायः सभी लोग आदर और स्नेह के वशीभूत होकर 'प्रधान जी' ही कहा करते थे। वास्तव में उनकी वरिष्ठता को ध्यान में रखते हुए कम लोग ही उनका नाम लेते थे। प्रायः सभी लोग उन्हे प्रधान जी के नाम से पुकारते थे। प्रधान जी उनके नाम का पर्याय बन गया था।

आदर्श प्रधान

प्रधान या अध्यक्ष तो सभी संगठनों के होते ही हैं बाबू मिश्रीलालजी भी अपने निवासस्थान टाण्डा के आर्यसमाज के प्रधान थे। टाण्डा उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में एक उद्योग प्रधान कस्बा है। यहाँ हाँथकरघा - जुलाहो के काम का बहुत पुराना केन्द्र रहा है। टाँडा के मुसलमान बड़े सम्पन्न प्रतिष्ठित उद्योगी हैं और उत्तर प्रदेश से बाहर भी उनके व्यावसायिक सम्पर्क हैं। ऐसे सम्पन्न मुस्लिम वहुल क्षेत्र में आर्य समाज की, हिन्दुओं की धार्मिक प्रतिष्ठा के सदा सतत प्रहरी के रूप में बाबू मिश्रीलाल जी का स्मरण होता रहता है।

श्री मिश्रीलाल जी स्वयं व्यवसायी थे किन्तु एक व्यवसायी की अपेक्षा वे आर्यसमाज के प्रधान और आर्यकन्या इन्टर कॉलेज के प्रबन्धक अधिक थे उनके जीवन का अधिकांश समय इन कार्यों के लिये जाता था।

आर्यसमाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव अपने ढंग का निराला उत्सव होता है इस वार्षिकोत्सव में श्री मिश्री लाल जी इस प्रकार लग जाते थे जैसे उनके घर में कोई विवाह आदि महत्वपूर्ण कार्य हो रहा हो। यह उत्सव वहाँ के स्थानीय लोगों के लिए विशेष आकर्षण की वस्तु बन जाता है। श्री मिश्री लाल जी उत्सव के प्रायः प्रत्येक कार्य में स्वयं उपस्थित रहते थे और आदि से अन्त तक नियमपूर्वक सिद्धान्तानुसार प्रत्येक कार्यक्रम का संचालन स्वंय किया करते थे।

आर्य समाज टाण्डा के उत्सव में शंका समाधान, शास्त्रार्थ, धर्म सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन, आदि प्रोग्राम अपने ढंग के निराले होते रहे हैं अच्छे से अच्छे विद्वानों को, वक्ताओं एवं शास्त्रार्थ महारथियों को, आमन्त्रित करके उन्हे सफल बनाने का सुन्दर प्रयास श्री मिश्रीलाल जी बड़ी योग्यता से किया करते थे।

टाण्डा जैसे मुस्लिम बहुल क्षेत्र में आर्य समाज के उपदेशकों की टक्कर मुसलमान मौलवियों से प्रतिवर्ष होती रही है और यह यहाँ के हिन्दू और मुसलमान, दोनों के लिये विशेष आकर्षण का कारण हुआ करता है। अच्छी संख्या में हिन्दू और मुसलमान दोनों समुदायों के लोग वक्ताओं की तर्क शैली उनकी वक्तृता आदि सुनने देखने के लिये एकत्र होते रहें हैं। स्वाभाविक है ऐसे वादविवाद शास्त्रार्थ सम्मेलनों में लागडाँट, नोकझोंक, उतारचढ़ाव होता ही रहता है और यह भी सहज स्वाभाविक है कि यह नोकझोंक वहस-मुवाहिस से ऊपर उठकर, और कभी-कभी शिष्टता से भी अलग होकर साम्प्रदायिकता और कटुता का रूप ले ले। किन्तु बाबू मिश्री लाल जी, आर्य समाज टाण्डा के प्रधान इन सभी सम्मेलनों में स्वंय उपस्थित रहते थे और चाहे शास्त्रार्थ हो या सम्मेलन सबको न्याय और नियम के अनुसार चलाते थे। हिन्दू और मुसलमान सभी उनके न्याय और व्यवस्था पर आस्था और भरोसा रखते थे ऐसा गौरव कम व्यक्तियों को सुलभ है।

आर्य समाज टाण्डा के जलसों पर जुलूस भी निकलता है - बड़े ठाट वाट से और बड़ी सज धज से। बाबू मिश्री लाल जी इस जूलूस का नेतृत्व करते थे और टाण्डा कस्बे के चौक पर किसी प्रभाव शाली वक्ता से दस, पन्द्रह मिनट बोलने का आग्रह करते थे। आर्यसमाज की ओर से आर्य समाज के जुलूस में टाण्डा के चौक का यह भाषण वहाँ के नागरिकों को उत्सव

में आने का निमन्त्रण तो था ही साथ ही एक चैलेन्ज था जो बड़े प्यार और आदर से किन्तु बड़े जोश और आवेश से सत्य को परखने का आमन्त्रण भी था। यह बाबू मिश्रीलाल जी की ही योजना रहती थी।

"नगाड़ा सत्य का बजता है,
आजमाये जिसका दिल चाहे"

बाबू मिश्रीलाल जी स्वयं संस्कृत के विद्वान न थे किन्तु प्रतिवर्ष संस्कृति सम्मेलन अवश्य करवाते थे। यह उनकी उस निष्ठा का प्रत्यक्ष स्वरूप था जिसकी बदौलत टाण्डा के मुसलमान व्यवसायियों की लड़कियाँ भी सहर्ष संस्कृत पढ़ती थीं।

आर्य कन्या कॉलेज के प्रबन्धक – बाबू मिश्रीलाल जी आर्यसमाज के भक्त थे, प्रधान थे, प्रबन्ध पटु थे, साथ ही वे आर्य कन्या कॉलेज के आदर्श प्रबन्धक भी थे। विद्यालय के प्रधान और प्रबन्धक के रूप में आर्य कन्या कॉलेज की जो उन्नति उन्होने की है वह टाण्डा के निवासियों को सदा स्मरण रहेगी। आर्यकन्या कॉलेज में धर्म और संस्कृत की कक्षाएँ अनिवार्य रूप से लगती हैं और इन कक्षाओं से किसी को छूट नहीं है। स्वाभाविक है कि मुस्लिम लड़कियों को आर्य धर्म की कक्षाओं से और संस्कृत की कक्षाओं से कुछ विकर्षण सा रहे किन्तु टाण्डा के आर्यकन्या कॉलेज की स्थिति ही अलग है बाबू मिश्रीलाल जी का प्रबन्ध, उनकी अनुशासन प्रियता इतनी प्रसिद्ध थी कि हिन्दुओं की लड़कियाँ तो पढ़ती ही थीं साथ ही मुसलमान घरों की लड़कियाँ भी संस्कृत की क्लास तो करती ही हैं, आर्य धर्म की भी क्लास बड़ी प्रसन्नता से करती हैं।

१९८५ ई. में जब आर्यसमाज कलकत्ता का शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा था तो उसमें भाग लेने के लिये आर्य कन्या कॉलेज की कन्याएँ भी आयी थीं। इस दल में मुसलमान कन्या भी थी और उन्होने आर्यसमाज के संस्कृत कार्यक्रम में भाग लिया था। आर्य कन्या कॉलेज की इस सफलता के पीछे बाबू मिश्री लाल जी का कट्टर, सिद्धान्ती, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व मुखर हो रहा था। सुदूर टाण्डा से चलकर, धर्म सम्प्रदाय के भेद भाव को मिटाकर, आर्य समाज के उत्सव में आर्य कन्या कॉलेज की कन्याओं का शताब्दी महोत्सव में सम्मिलित होना बाबू मिश्रीलाल जी के सैद्धान्तिक पक्ष की बड़ी भारी विजय है।

कलकत्ता में अभिनन्दन

बाबू मिश्रीलाल जी टाण्डा में रहते थे किन्तु उनका व्यावसायिक सर्म्पक कलकत्ता से भी निरतंर वना रहा है। इसलिये वे अपने व्यावसायिक कार्यों से तथा आत्मीय जनो से मिलने-जुलने के लिये कलकत्ता आया करते थे। कलकत्ता में उनके अनुज श्री हीरालाल जी आर्य, जेष्ठ सुपुत्र श्री आनन्द कुमार जी आर्य (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि बंगाल), उनके सम्बन्धी श्री सीतारामजी आर्य (प्रधान आर्यसमाज कलकत्ता) आदि सज्जन आर्य समाज की सेवा में लगे हैं। साथ ही हमारी तरह अन्य बहुत सारे लोग जो बाबू मिश्री लाल जी के सीधे सम्बन्ध में तो नहीं हैं किन्तु उनके गुणों के, उनके आदर्शों के, उनकी सिद्धान्त प्रियता के प्रशंसक रहे हैं। हमलोगों ने बाबू मिश्री लाल जी जेसे धर्म प्राण आदर्श प्रिय व्यक्ति के सार्वजनिक अभिनन्दन का निश्चय किया। आर्य समाज कलकत्ता के भव्य सभाकक्ष में उनका बड़ा सुन्दर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया और आर्यसमाज कलकत्ता की ओर से उन्हे अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया।

कर्तव्य परायण आदर्श

बाबू मिश्रीलाल जी बड़े सरल हृदय और स्नेही व्यक्ति थे। उनकी सरलता और स्नेहलता के पीछे एक आदर्शमय व्यक्तित्व सदा उजागर रहता था। जैसे उनके परिधान में आदर्शमयी तेजस्विता और ओजस्विता थी, वैसे ही उनकी वाणी में सत्य और न्याय का तेज एवं ओज सदा प्रस्फुटित हो उठता था। वे आदर सबका करते थे, यथायोग्य सम्मान भी सबको देते थे किन्तु किसी की वाह वाही में या किसी को सन्तुष्ट करने के लिये या प्रसन्न रखने के लिये कभी भी सत्य न्याय और सिद्धान्तो से समझौता न करते थे। स्वाभाविक है कि उस कोटि की कट्टरता कभी कभी रूक्षता के रूप में प्रदर्शित हो उठती थी किन्तु ऐसे अवसरों पर बाबू मिश्रीलाल जी की वाणी तो ओजस्वी ही उठती थी चेहरा भी सत्य के तेज से तमतमा उठता था। यह था उनका सत्यग्राही व्यक्तित्व।

बाबू मिश्रीलाल जी से हमारा तीस पैंतीस वर्षों का व्यक्तिगत सम्पर्क था। उनका निधन हो जाना एक व्यक्तिगत स्नेही शुभ चिन्तक व्यक्ति का इस संसार से चला जाना ही है। बाबू मिश्री लाल जी की याद आने पर उनकी गुणावली, उनका आदर्श व्यक्तिव्य सामने चमक उठता है। वे संगठन के आदर्श थे हमलोगों के लिये भी प्रेरणा के स्रोत थे ऐसे आदर्श प्रिय व्यक्ति संसार की मधुर स्मृति की मधुर धरोहर हैं।

आचार्य

आर्यसमाज कलकत्ता

श्रद्धेय प्रधानजी स्व. बाबू मिश्री लाल जी आर्य

— सुरेन्द्र नाथ कपूर

प्रधानजी शब्द स्व. बाबू मिश्रीलाल जी का पर्यायवाची शब्द समय के साथ बन गया था व प्रधान जी के उच्चारण से ही एक गांधीवादी खद्दर धारी कुर्ता धोती व गौ रक्षक जूतों से सज्जित वयोवृद्ध एक क्षीणकाय तेजस्वी कर्मठ निष्ठावान् आर्यसमाज के कट्टर उन्नायक तथा निष्ठावान् समाजसेवी व्यक्ति का रूप सामने आ जाता था। श्री प्रधानजी का जन्म बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ के वर्षो में टाण्डा नगर के एक उच्च व्यापारी आर्यसमाज के पोषक परिवार में हुआ था। आप के पिता श्री बाबू गया प्रसाद जी एक धर्म निष्ठ उत्तम चरित्र व ईमानदार ब्यवसाई थे। उनके तीन पुत्र श्री जिया लाल जी, श्री मिश्रीलाल जी व श्री हीरालाल जी थे, श्री हीरा लाल जी ही अकेले अब हम लोगों के बीच हैं। प्रधान जी की शिक्षा दीक्षा टाण्डा नगर में उस समय समिति सातवें दर्जे तक हुई जो उस समय मिडिल कहा जाता था। परिवार में छींट के छराई का ब्यवसाय था जो पहाड़ की जनता व आसाम बगैरह की जनता के पहनने के काम आती थी व उसका धार्मिक महत्व माना जाता था। प्रधान जी को अपने व्यापारियों के यहाँ विराट नगर, दार्जिलिंग, नेपाल गंज, काठमांडू इत्यादि नगरों में जाना पड़ता था छोटी उमर से ही। उससे उनका ज्ञान, जान पहचान तथा नजरिया बदलने में बड़ी सहायता मिश्रीजी उनकी जीवन धारा बदलने में बहुत सहायक व लाभप्रद रही।

टाण्डा के आर्यसमाज की स्थापना सन १८९० के आस पास हुई थी व उसके मंत्री स्व. बाबू बच्चूलाल जी आर्य काफी समय तक रहे व कुछ परिवार उसके सदस्य थे। प्रथम विश्व-यूद्ध के समय से उसका काम शिथिल पड़ गया था। उस समय २०-२२ वर्ष के होनहार लगन के धनी नवयुवक श्री प्रधान जी ने आर्य समाज का कार्य अपने हाथ में लिया व जीवन पर्यन्त उसके उत्थान, प्रचार, प्रसार व उन्नयन में लगे रहे।

हमारे होश में करीब 60 वर्ष से वह प्रधान ही व सर्वसेवी रहे। वह समय था जब आर्य समाज देश सेवा व आजादी के लिये कार्य करने का पर्याय था। बड़े बड़े नेता लाला हंसराज, भाई परमानन्द, स्वामी त्यागानन्द, लाला हर दयाल इत्यादि चोटी के नेता थे। उनका प्रभाव नवयुवक प्रधान जी पर पड़ना स्वाभाविक था। उसी समय महात्मा गांधी भी देश की राजनीति

में प्रभावी हो गये थे। प्रधान जी ने भी अपना जीवन उस तरफ समर्पित कर दिया व उस समय से मरते समय तक (२८ दिसम्बर ९०) खद्दर धारी रहे। अछूतोद्धार, दलितों की सेवा, विधवा विवाह आर्य धर्मका प्रचार व स्वाधीनता के लिये कार्यरत रहे। उसमें उन्हें महती सफलता भी मिली। प्रधान जी अन्त समय तक नव युवकों को आर्य प्रचार व जनसेवा के लिए प्रेरित व उत्साहित करते रहे। अन्तिम दिनों में भी अयोध्या के मसले, आरक्षण विरोध के कारण जब पूरा देश आन्दोलित व अशान्त था तब भी दिसम्बर ९० के प्रथम सप्ताह में आर्यसमाज का वार्षिक अधिवेशन व वेद मंत्रों से ५ दिवसीय यज्ञ उन्होने पूरे उत्साह से सम्पन्न हर वर्ष की भांति कराया व अपनी बीमारी व स्वास्थ पर ध्यान न देकर ८८ वर्ष की आयु में भी अधिक समय उपस्थित रहते थे व प्रबंध संचालन करते रहे। प्रधान जी ने टाण्डा में दो बार महात्मा जी को बुलाया व १९५१ को असहयोग आन्दोलन में जेल गये जहाँ लखनऊ गोंडा जेल में उनका सम्पर्क कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं जैसे मौलाना आजाद वा. पुरुषोत्तम दास टन्डन, आचार्य नरेन्द्र देवजी, रफी साहब वगैरह से हुआ जिसकी छाप उनपर अन्त तक कायम रही। आचार्यजी, बा. लल्लन जी मास्टर जयराम वर्मा धीरेन्द्र मजूमदार प्राचार्य देवी प्रसाद मिश्र इत्यादि से उनका घनिष्ठ सम्पर्क रहा।

प्रधानजी का सार्वजनिक जीवन जब बन रहा था उस समय हमारे स्व. पिता जी श्री राय बहादुर त्रिलोकनाथ कपूर इस नगर के सार्वजनिक जीवन में एक विशेष स्थान रखते थे। उनका सहयोग मार्गदर्शन व निर्देशन श्री प्रधान जी को प्राप्त था व प्रधान जी उनको अपना अग्रज मानते थे। वही प्रेम व वात्सल्य हमारे प्रति भी उनका सदैव बना रहा। टाण्डा नगर शिक्षा दोनों बालिका व बालकों के क्षेत्र में पिछड़ा था। नगर पालिका के ३-४ प्रारम्भिक स्कूल एक जिला बोर्ड का मिडिल स्कूल, हमारे पिता द्वारा घर पर ही स्वचालित कन्याओं की प्रारम्भिक पाठशाला, कुछ मखतब व संस्कृत पाठशाला मात्र थे। सन् १९२५ में हमारे पिता के प्रबंध में व प्रधान जी, वा. राम रघुवीर वकील वृषकेत सिंह तहसीलदार व सम्भ्रान्त नागरिकों की सहायता से होवर्ट इंगलिश स्कूल की आठवें तक संस्था खुली जो इस समय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज तक पहुंच गई। इस संस्था के संचालन में श्री प्रधान जी १९२५ से जीवन भर प्रवन्ध समिति के सक्रिय सदस्य रहे व इतनी उन्नति उन्ही लोगों के परिश्रम व लगन का फल है।

सन् १९४४ मे श्री प्रधानजी को इस बात का एहसास हुआ कि बालिकाओं की उच्च शिक्षा का अभाव भी दूर होना चाहिए उन्होंने आर्य विद्या प्रचार समिति की स्थापना किया व आर्य कन्या प्राइमरी स्कूल की स्थापना किया। ईश्वर की दया से स्व. सहगू राम जी ने दस हजार रुपये का दान देकर एक

नया उत्साह पैदा कर दिया। हमारे घर पर जो कन्या पाठशाला चलती थी वह भी उसमें सम्मिलित हो गई। कुछ दिन बाद मिडिल स्कूल की स्थापना हुई। सन् १९५३-५४ में हाई स्कूल व उसके बाद इण्टर को मान्यता मिल गई। सन् १९४७ में प्रधान जी के प्रभाव से व स्व. सूर्य पाल सिंह जी अध्यक्ष जिला बोर्ड की दया से डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मिडिल स्कूल का भवन मिल गया जहाँ इस समय आर्यकन्या इण्टर कालेज स्थित है। इसके बाद प्रधान जी के अथक परिश्रम से उसके आस-पास के खेत व जमीन मिलती गई। होस्टल, क्लास रूम अध्यापिका निवास, व प्राभूत के लिये दुकानो का निर्माण सहृदय दानियों की सहायता से होता गया। स्कूल की देखरेख, पढ़ाई का कार्य, निर्माण कार्य व एक एक ईट श्री प्रधान जी के नजर में रहती थी। इसका प्रतिस्वरूप उस समय आर्य कन्या पाठशाला जनपद के उत्तम संस्थाओं में है व प्राइमरी से लेकर इण्टर तक करीब २000 छात्रायें शिक्षा पा रही हैं। परीक्षा-फल, अनुशासन शिक्षा सभी उत्तम रहे। कई साल संस्था को परीक्षा फल के लिये शासन से पुरस्कार भी प्राप्त हुआ प्रधानजी का आशीर्वाद रहेगा तो डिग्री कालेज भी हो जायगा। इस उन्नति में प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर का योगदान सराहनीय रहे। श्रीमती ग्रोवर को भारत सरकार ने विशेष शिक्षा सेवा के लिये पुरस्कार भी १९८५ में प्रदान किया।

प्रधान जी की रूचि जनता के सभी कामो व सेवा में लगी रही। उन्होनें एक दयानन्द आयुर्वेदिक औषधालय दयानन्द शिक्षा मन्दिर स्थापित किया वानप्रस्थ आश्रम व गुरूकुल का संचालन करते रहे। टाण्डा क्षेत्र में मुबारकपुर, मकदूम नगर फूलपुर जहाँगीरगंज वसरवारी रामनगर इत्यादि स्थानों पर आर्यसमाज की प्रचार व्यवस्था किया व सार्वजनिक महत्व के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहे। साथ ही जनता में हिन्दू व मुसलमान में सदेव आदर पाया।

अन्त में उनके परिवार के बारे में यहाँ पर्याप्त है कि उनकी श्रीमती जी एक विदुषी गृहणी ईश्वर कृपा से मिली थी जिनका योगदान उनकी सफलता में सहायक रहा। उनके 3 पुत्र व दो कन्याएं हैं जो सभी सुव्यवस्थित हैं व धर्मानुसार जीवन यापन में व्यस्त हैं। प्रधानजी मधुमेह से पीड़ित थे पर दवा परहेज नियमित जीवन टहलने व उत्साह से सदैव कार्य करते रहे। उनके साथ पुरानी पीढ़ी के निस्वार्थ कार्यकर्ता सज्जन दूसरों के दुख सुख में सम्मिलित होने वाला तथा एक सच्चा इंसान चला गया जो कमी इस क्षेत्र के लिए शोचनीय है।

भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

— प्रबन्धक
त्रिलोक नाथ महाविद्यालय
टाण्डा (फैजाबाद)

आर्यसमाज टाण्डा के कीर्तिस्तम्भ
स्व. मिश्रीलाल जी

ध्येयनिष्ट कर्मठता में वे सत्य-हृदय से साधक थे,
प्रतिभाशाली आर्य जनों के हित में कभी न बाधक थे,
कार्य किये उत्तम स्थायी जीवन को समझा क्षणभंगुर,
जनपद के घर-घर में लाये आर्यसमाज का पावन अंकुर॥

आर्यकन्या विद्यालय खोले भेदभाव को दूर भगा कर,
पढ़ती हैं मुस्लिम कन्यायें आज वहाँ पर ध्यान लगा कर,
आर्य जगत के विद्वानों का करते रहें सदा सम्मान,
ऐसे दानी आर्य पुरुष को शत्-शत् हो मेरा प्रणाम॥

वेदोक्त धर्म के जागरुक प्रहरी सदा वे कहलायें,
जो भी उनके निकट गया वे प्रभावित होकर आये,
संकट विकट कठिन पथ पर वे कभी नहीं थे घबड़ाते,
बड़े-बड़े अधिकारी उनके आगे नतमस्तक हो जाते॥

फूले फले सदा विकसित हो, आर्य वाटिका रहे आबाद,
जन मानस को याद रहेगा नगर मनोहर फैजाबाद,
आर्य समाज टाण्डा अब अपना पार कर गया सौवाँ साल,
मर कर भी अमरत्व पा गये 'निर्भय' होकर मिश्रीलाल॥

— सियाराम निर्भय
(कवितोपदेशक)

आदर्श पुरुष श्री मिश्रीलाल आर्य

— सीताराम आर्य

मेरे जीवन में २८ दिसम्बर १९९० का दिन अशुभ एवं बड़ा दुःखदायक है। जीवन पर्यन्त २८ दिसम्बर दुःखी करता रहेगा। आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव होने वाला था उस समय मैं धन-संग्रह में लगा हुआ था : दिन में २ बजे भोजन हेतु हवड़ा निवास स्थान पर गया। भोजन करके विश्राम कर रहा था, लगभग २ बजे दिन में टेलीफोन की घण्टी बजी। टाण्डा से करतार सिंह ने फोन पर बताया कि बाबू श्री मिश्रीलाल जी का आज प्रातः स्वर्गवास हो गया है। समाचार सुनकर मुझे गोली-सी लगी और आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। धर्मरूपी पिता आज बिछुड़ गये। मन चंचल हो उठा कि कैसे शीघ्र टाण्डा पहुँचूँ। हवाई जहाज का कोई साधन नहीं जम्मू तवी एक्सप्रेस चली गई थी। दून एक्सप्रेस रात को आठ बजे हवड़ा से छूटेगी जो कल शाम तक पहुँचेगी। एक राजधानी एक्सप्रेस है जो कलकत्ता से सायं 4 बजे छूटती है। मैंने अपने अनुज श्रीरामजी से कहा कि तुम लन्दन, सेलम और दिल्ली ओमप्रकाश के पास फोन कर दो। श्री आनन्द कुमार जी जयपुर गये हैं, उन्हें फोन से सूचित करो कि वे तुरन्त टाण्डा पहुँचें और रामलखन बाबू से कहो कि हवड़ा स्टेशन आ जावें। मुझे राजधानी एक्सप्रेस की एक सीट दिला देवें। श्री रामलखन बाबू के प्रयास से धनबाद कोटा में एक सीट मिली। मैं शोकाकुल अवस्था में ही चल पड़ा। धनबाद पहुँचकर दिल्ली की सीट बुक कराया और रात में १२ बजे मुगलसराय स्टेशन पर उतरकर १ बजे रात को जम्मू तवी एक्सप्रेस पर बैठकर प्रातःकाल ढाण्डा पहुँचा, जहाँ बाबू श्री मिश्रीलाल जी का शव मिला। बाबूजी की पत्नी, उनके अनुज श्री हीरालाल जी की पत्नी एवं परिवार के सभी सदस्य शोक बिह्वल बैठे थे और कभी-कभी रोते और क्रन्दन भी करने थे। आर्य समाज के लोग, हित, मित्र आदि बाबूजी का अन्तिम दर्शन करने के लिए व्याकुल थे। मेरे अनुज श्रीराम आर्य अन्त्येष्टि की तैयारियाँ कर रहे थे। अन्त्येष्टि हो कैसे क्योंकि बाबूजी के सभी पुत्र बाहर थे। २८ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक बाबूजी का शव बर्फ पर रखा गया था। ३० दिसम्बर के दिन में १ बजे शव-यात्रा उनके निवासस्थान से शुरु हुई। मकान जनसमूह से खचाखच भरा हुआ था सभी लोग बाबूजी के अन्तिम दर्शन के लिए उमड़ पड़े थे। टाण्डा पुलिस के अधिकारी पुलिस टुकड़ी के साथ मकान के बाहर उपस्थित थे। पुलिस बन्दूक को कन्धे

से नीचे झुकाकर बाबूजी का अन्तिम अभिवादन किए तत्पश्चात् शवयात्रा आरम्भ हुई। जनता का नारा था -"ओ३म् नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है।" इस नारे से आकाश गुँज उठा। तहसीलहार थिरुवा नाला पार करते हुए, चिन्तौरा के पूर्व उनके बगीचे से होते हुए बगीचे के उत्तर ओर सरयू तट पर शव-यात्रा समाप्त हुई। सरयू-तट पर ७ फीट लम्बा ४ फीट चौड़ा और ४ फीट गहरा यज्ञ कुण्ड बनाया गया। १० मन आम की लकड़ी, चन्दन की चैली जो टाण्डा में मिल पाई, एक बड़ा बस्ता हवन-सामग्री २१ किलो देशी घी और ओ३म् लिखित चादर आदि से यज्ञ-कुण्ड को सजाकर वेद-मन्त्रों द्वारा बाबू मिश्रीलाल का शव अग्नि को समर्पित कर दिया गया। बाबूजी केपुत्र आनन्द कुमार आर्य एवं समस्त लोग वेदमंत्रों की आहुति देते रहे। धधकती चिता को छोड़कर सरयू नदी में स्नान करके २ बजे सब अपने - अपने निवास पर आये। अधिक लोगों का स्वर था कि बाबू मिश्रीलाल मर गये साथ-साथ आज टाण्डा का हिन्दुत्व भी मर गया।

मनुष्य की इच्छाएं बलवती होती हैं। यदि इच्छा ओं का दमन कर दिया जाये तो कार्य क्षमता कम ही जाती है। बाबूजी की इच्छाएँ प्रबल थीं उनमें कार्य करने की क्षमता भी थी। वे ८८ वर्ष तक कार्यरत रहे। अपनी सेवा में दूसरों का सहारा न लेते हुए समाज की सेवा में लगे थे। उनकी अन्तिम इच्छा आर्य समाज टाण्डा की शताब्दी मनाना था एवं आर्य कन्या उच्चतर विद्यालय के स्तर को महाविद्यालय में परिवर्तित करने को था। ये दोनों स्वप्न उनके समक्ष साकार न हो सके। किसी भी उच्च विचारक मनुष्य की अन्तिम इच्छाएँ अन्य व्यक्तियों के द्वारा ही पूरी होती है, क्योंकि उच्च विचारक एक की पूर्ति के पश्चात् उससे सन्तुष्ट न होकर अन्य कार्य को अपनाता रहता है। बाबू मिश्रीलाल आर्य सन् १९८९ में अपना संस्मरण (यादे) पं. देवनारायण पाठक से लिखवा रहे थे यह बात मुझसे कहे थे कि अपनी जीवनी लिखा रहा हूँ। इस जीवनी को शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित कराऊँगा। उनकी जीवनी शताब्दी समारोह पर अवश्य प्रकाशित होगी। पूर्ण विवरण पुस्तक पढ़ने पर ज्ञात होगा इसलिए अधिक लिखना में उचित नहीं समझता। बाबूजी से मेरा परिचय १९३८-३९ में थोड़ा - थोड़ा था। मैं टाण्डा विद्या अध्ययन हेतु जाता था। सन् १९४८-४९ में आर्य कन्या विद्यालय टाण्डा की बाउण्डरी हेतु मुझसे कलकत्ता में मिले, मैंने सहयोग भी दिया। समय-समय पर विद्यालय की सेवा हेतु मुझे प्रेरित करते रहते थे। मैंने उनका वचन कभी भी अस्वीकार नहीं किया। जब विद्यालय में इण्टर क्लास खोलना चाहा तो उन्होंने एक कमरा बनवाने को कहा। मैं अपने परममित्र श्री दुर्गाप्रसाद कसौधा छज्जापुर टाण्डा निवासी के द्वारा बनवा दिया जो कि माता श्रीमती गुलाबा देवी और पिता श्री गयादीन के नाम से अभी भी स्थापित है।

चरित्रवान- बाबू श्री मिश्रीलाल के चरित्र पर किसी ने अंगुली उठाने का साहस कभी भी नहीं किया चरित्रवान व्यक्ति ही दूसरों के चरित्र की भी रक्षा कर सकता है। विद्यालय की छात्राओं को रास्ते में आते - जाते किसी मनचले युवक की छीटाकसी करने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। यदि किसी के प्रति बाबूजी के कानों में खवर पहुँचती तो उस उद्दण्ड की खबर जरूर लेते, इसका जीता-जागता उदाहरण है, — कन्याओं की सुरक्षा कालेज तथा डिग्रीकॉलेज यज्ञशाला के बीच अबैद्य मार्ग के दोनों तरफ गेट लगवा कर बन्द करा दिये हैं।

आर्य समाज के दीवाने :— बाल्यकाल में अपने पिता स्व. गया प्रसाद आर्य के नेतृत्व में वेदिक संस्कार से पूर्ण परिचित हो गये थे। आर्य समाज धार्मिक तथा क्रान्तिकारी संस्था है। महर्षि दयानन्द सरस्वती को देश की गुलामी की पीड़ा हमेशा सताती रहती थी। सन् १८५५-५६ में स्वामी जीकी अज्ञात जीवनी 'अपना चरित्र' लेखक श्री आदित्य पाल सिंह की पुस्तक का अध्ययन करने से ज्ञात होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती नर्वदा नदी के तटवर्तो जंगलों में विचरते हुए नेपाल तिब्बत की कठिन यातनाएं सहन करते हुए गौहाटी होकर कलकत्ता पधारे और बारिक पुर कैण्ट जहाँ अंग्रेजों का फौजी सदर था उसके बगल में कानन बगीचा में ठहर कर व्याख्यान देने लगे। स्वामी जी के व्याख्यान में जादू था, जो सुनता था प्रभावित होकर स्वामी जी का अनुयायी बनने लगता था। श्रोताओं में मंगल पाण्डेय नामक एक उत्तर प्रदेश का नव युवक अंग्रेजों का सिपाही था।

स्वामी जी ने एक दिन मंगल पाण्डेय से कहा कि अंग्रेज लोग हिन्दू और मुसलमान दोनों का धर्म नष्ट कर रहे हैं। मंगल पाण्डेय ने कहा-कैसे? स्वामी जी ने कहा कि जो कारतूस तुम लोग दाँत से खोलकर बन्दूक में लगाते हो उसके मुहं पर गाय और सुअर का चमड़ा लगा हुआ है। मंगल पाण्डेय ने जाकर अपने अंग्रेज आफिसर से कारतूस न प्रयोग करने को कहा। अंग्रेज आफिसर ने मंगल पाण्डेय को तमाचा मारा। मंगल पाण्डेय ने तुरन्त अंग्रेज आफिसर को गोली मार दी। सन् १८५७ का क्रान्तिकारी युद्ध उसी समय से बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश आदि स्थानों पर फैल गया। देश १८५७ में स्वतन्त्र होने जा रहा था कि कुछ देश के गद्दारों ने अंग्रेजों का साथ देकर देश को गुलाम बना रहने में सहयोग दिया। आर्य समाज के हजारों लोग जेल गये, फाँसी के फन्दे को चूमा। भगत सिंह जैसे योद्धा आर्य समाज कलकत्ता १९, विधान सरणी में रहकर बम आदि बनाना सीखते थे। उस समय आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान दीपचन्द पोद्दार थे। आर्य युवक हर तरह से क्रान्तिकारियों की सहायता करते थे। अधिकतर आर्य समाजी कांग्रेस में सम्मिलित होकर देश को आजाद करने में लगे थे उसी सन्दर्भ में बाबू मिश्रीलाल आर्यनेभी

कँाग्रेस में शामिल होकर जेल की कठिन यातनाएँ सहन कीं। नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करते हुए आर्य समाज की सेवा में लगे रहे। उन्होंने व्यापार आदि को कमजोर होते देखा और सहन किया परन्तु आर्य समाज की गति को मन्द न होनें दिया।

साईं इतना दीजिये, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ अतिथि न भूखा जाय॥

बाबू मिश्रीलालजी ने उपरोक्त पंक्ति को चरितार्थ कर दिखाया। उन्हे वैदिक धर्म से बिशेष लगाव था, धन सम्पत्ति आदि से कम।

सन् १९७५ में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी दिल्ली के समारोह में टाण्डा और अकबरपुर से अधिक आर्यसमाजी लोग दिल्ली गये थे। उसमें बाबू राजेन्द्र प्रसाद राम लीला मैदान में पुस्तकों के स्टाल को देख रहे थे। एक स्टाल पर आर्य महापुरुषों का चित्र बिक रहा था। मेरी नजर एक ऐसे चित्र पर पड़ी जिस पर लिखा था "आर्य जगत् के २०५ सितारे" गौर से देखने लगा। उन २०५ चित्रों में बाबू मिश्रीलाल आर्य काभी चित्र बना हुआ था। मेरा मन खुशी की तरंगों में लहराने लगा कि हमारे बाबू मिश्रीलाल आर्य की कीर्ति है। आर्य समाज जैसीपवित्र एवं क्रान्तिकारी संस्था के सदस्यों को याज्ञिक, स्वाध्यायशील, परिश्रमी, त्यागी, परोपकारी, आदर्शवान एवं निःस्वार्थभाव से समाज की सेवा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आकर अभीचन्द मुंशीराम जैसे पतित व्यक्तियों ने अपना जीवन सुधारकर महान आदर्श व्यक्ति बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द लिखते हैं कि मैं शराव पीता था, माँस भी खाता था और वेश्यागमन करता था। सभी बुराइयों में लिप्त था। मैंने अज्ञानतावश महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रश्न कर दिया कि स्वामी जी आप को कभी काम नहीं सताता क्या? कितना घिनौना प्रश्न था! कहावत है कि "दाई जाने अपने नाईं" बुरा व्यक्ति दूसरों को भला नहीं समझता। महर्षि दयानन्द ने प्रश्न सुनकर मौन होकर समाधि लगाई। तत्पश्चात उत्तर दिया, मुंशीराम मुझे जीवन में काम ने कभी भी नहीं सताया आदित्य बाल ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनो का नारा था — कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। इस उदघोष को सफल बनाना सभी आर्य समाजियों का परम कर्त्तव्य है। आर्यसमाज टाण्डा के कार्यक्रम को तीव्रगति से बढ़ाते रहना वाबू मिश्रीलाल आर्य के प्रति सच्ची श्रद्धाज्जलि होगी।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

— प्रधान
आर्यसमाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कलकत्ता

एक विशाल वटवृक्ष थे बाबू जी

— मीना आर्य

जब भी वटवृक्ष के विशाल - विराट स्वरुप को देखती हूँ बाबू जी याद आ जाते है। हां बाबू जी यानी कि मेरे श्वसुर जिन्होने अपनी बहुओं को बहुत ही ज्यादा स्नेह एवं सम्मान दिया। बहुओं के लिये अस्वीकार या आपत्ति जैसा शब्द उनके शब्द-कोश में था ही नहीं। कोई भी कार्य हो बाबू जी आगे बढ़ कर हमारी हिम्मत बढ़ाते, उत्साहित करते। भले ही परिवार अथवा समाज के लोग आना कानी करें, काना फूसी करें, आपत्ति करे, पर वे हमें हमेशा प्रेरित करते रहे।

आखौं से यादों की लड़ियां टपा-टप बरस रही है। बाबू जी को याद कर। एक वर्ष बीतने को आया। बाबू जी के पार्थिव शरीर को छत्रछाया से बिछुड़े हुये। अभी भी विश्वास नही होता, मन नही मानता कि वह इस दुनिया में हमारा साथ छोड़ पर-लोकवासी हो गये है। बस यही लगता है टाण्डां में हैं। वहां से आयेगे। हम सब साथ रहेगें। फिर एक दिन अपनी मनपसंन्द बेसन की सब्जी की फरमाइश करेंगे जैसा कि उन्होने कलकत्ता से पिछले बार जाते समय कहा था — "बहू, आज आखिरी बार मुझे बेसन की सब्जी बना कर खिला दो।" यह सुन कर मन को बहुत धक्का लगा था। मैंने कहा भी कि — 'बाबू जी आप ऐसा क्यों कह रहे हैं।' पर लगता था जैसे उन्हें अपने अन्तिम समय का पूर्वाभास हो गया था। उस दिन उन्होंने मेरे पिताजी, जो पटना से उनसे मिलने आय हुये थे, को भी साथ खाने पर बैठाते हुये बोले — "आइये आज तो हम - आप एक साथ खाना खा ले, बाद में किस्मत में साथ खाना बदा है या नही।" और सचमुच कलकत्ता से जाने के तेरह दिन बाद ही हमें उनकी मृत्यु का हृदय विदारक समाचार मिला। लगा जैसे कोई पहाड़ टूट गया हो। बाबू जी के बिना टांडा और टांडा के अपने घर की तो हम कल्पनां ही नहीं कर सकते थे। टांडा पहुंचे तो सारा का सारा टांडा शोक में डूबा हुआ था। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या गरीब क्या अमीर, क्या छोटा क्या बड़ा। उनकी नेकी, उनकी अच्छाइयां जैसे लोगों के हृदयों की फफक, और हिचकियों में बँध गयी हो। और तो और बुर्का

पहनें कई औरतें अपनी संवेदना प्रकट करने कई - कई दिनों तक़ आती रही थीं।

आखिर क्या सम्बन्ध था उन सब का बाबू जी से? क्या लगते थे बाबू जी उनके? बाबू जी तो हमारे थे। पर शायद नहीं। वे पूरे टांडा के बाबू जी थे। हर किसी के दुःख में मुसीबत में आड़े वक्त काम आने वाले। सबका अपनाये और प्यार की डोरी से उन्होंने लोगों के हृदयों को बांध लिया था। इन्सानियत के रिश्ते से सबको, उन्होंने अपना बना लिया था और वे सबके हो गये थे। कवि इकबाल की ये पंक्तियां बरबस याद आ रही हैं बाबू जी के लिए।

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर के पहले खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है"? बदी के रास्ते के राही थे। अपनी धुन के पक्के। कथनी के धनी। मन, वचन और कर्म में एकरूप। ऊंची हांकने वाले, ऊंचे और भारी-भरकम उपदेशों का झोला लटकाये हजारों मिल जायेगें लेकिन कथनी की सकंरी, मुश्किल राह पर विरले ही चल पाते हैं। बाबू जी उन विरलों में से ही थे। कट्टर आर्य समाजी थे। अन्धविश्वासों, कुरीतियों का उन्होंने डट कर विरोध किया। मानव मात्र की समानता के पक्षधर। अपनी भाषा, अपनी संस्कृति से गहरा लगाव था उन्हें। स्त्री-जाति के प्रति घोरसम्मान विधि-विधानों और नियमों के वे कटु आलोचक थे। स्त्री-शिक्षा के पक्के समर्थक थे। दहेज तथा पर्दा-प्रथा के सख्त विरोधी थे। वे जन्मपत्री में नहीं कर्मपत्री में विश्वास करते थे।

मुझसे पहले मेरी अन्य बहनों की शादी पर्दे में हुयी थी। लेकिन बाबू जी के परिवार में मेरा सम्बन्ध जब हुआ, तो उन्होंने शादी के समय न तो मुझसे पर्दा रखवाया और न ही मेरे माता-पिता से दहेज की मांग की। उनके इस व्यवहार से विवाह के दिन से ही बाबूजी के लिए मेरे हृदय में विशेष श्रद्धा ने अपना स्थान बना लिया। बड़ी पुत्रबधू थी। हमारे यहाँ श्वसुर अथवा जेठ के बराबर बैठ कर खाना खाना अथवा बातचीत करना अदब कायदे के खिलाफ माना जाता है। लेकिन बाबूजी नये आधुनिक विचारों के विचारवान् व्यक्ति थे। उन्होने हमें कभी छोटा अथवा निम्न नही समझा बाबूजी व मां हमें बरावर में वेठा कर सलाह मशवरा करते थे। हमारा बहुत ध्यान रखते थे। आम तौर पर वहुओं को इस लायक नही समझा जाता कि वे परिवार

के मामलों में सलाह दें या दखलन्दाजी करें। लेकिन बाबूजी न केवल हमें सम्मान देते वरन् हमारे विचारों का भी सम्मान करते थे।

वे गांधी टोपी और खादी का कुर्त्ता पहनते थे। गांधी जी का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। आज की भोगवादी संस्कृति की अन्धी दौड़ से वे बहुत दुःखी थे। देश को आजाद कराने के संग्राम में उन्होंने हिस्सा लिया था और जेल भी गये थे। विदेशी वस्तुओं के त्याग का जो व्रत उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन के दौरान लिया था, उसे उन्होंने जीवन पर्यन्त निभाया।

स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग ही उन्होंने अपने जीवन में किया। उनकी बहुत इच्छा थी कि सब मिल-जुल कर टांडा में ही एक साथ रहें।

गांधीवादी होने के कारण सादगी उनके स्वभाव का अंग बन गयी थी और आर्यसमाजी होने के फलस्वरूप आडम्बर रहित उनका व्यवहार था। वैदिक धर्म और संस्कृति पर उनकी गहरी आस्था थी। कहां तो मेरे पीहर का वह मूर्तिपूजक परिवार और कहां कर्मकाण्डों का एवं मूर्तिपूजा का विरोध करने वाला यहां का परिवार दोनों की आस्थायें भिन्न, विचार संस्कार अलग। बाबू जी ने धीरे-धीरे वैदिक धर्म से मेरा परिचय कराया। जड़ रूढियों आडम्बर, क्रिया-काण्डों की निरर्थकता से साक्षात्कार कराया। उनसे हमने बहुत कुछ सीखा और समझा है।

आर्य कन्या इन्टर कॉलेज की उन्होंने स्थापना की थी और उन्ही के प्रयासों का परिणाम है कि आज उस में हर जाति हर धर्म की लगभग तीन हजार लडकियाँ ज्ञानार्जन कर रही हैं। वे नारी-शिक्षा के कड़े हिमायती जो थे।

हम पर जब भी कोई समस्या या दुःख पड़ता, बाबूजी की शरण में चले जाते थे। विश्वास था कि वे हर कठिन घड़ी में रास्ता निकाल ही देंगे। एक बार मेरे पति गंभीर रूप से बीमार पड़े और बम्बई ले जाकर उनका इलाज कराना पड़ा। उस समय अस्वस्थता के कारण बाबूजी बम्बई न आ सके थे पर उनके पत्र मुझे बराबर हिम्मत और सहारा देते रहते थे।ठीक होकर मेरे पति व मैं जब उनसे मिलने गये तो उनके आनंद का पारावार न था। उनके अटूट विश्वास एवं धैर्य ने मेरे पति को नया जीवन दिया।

इस तरह तीन-चार साल पहले हमारे लायनेस क्लब द्वारा आयोजित कलकत्ता से दार्जिलिंग की सद्भावना पद-यात्रा में हिस्सा लेने की उन्होंने सहर्ष

अनुमति दे दी थी जबकि परिवार के अन्य सदस्य गोरखालैन्ड आन्दोलन के कारण आपत्ति कर रहे थे। लेकिन बाबूजी ने स्वीकृति ही नही दी वरन् उत्साहित भी किया। बाबूजी का यही उत्साह, ऐसी प्रेरणा मुझे हमेशा सेवा-कार्य करने को प्रेरित करती रहती है। निर्धनों की बस्ती बागुईहट्टी में जहाँ शिक्षा का कोई साधन नही था। मेरी अध्यक्षता कार्य काल में सन् १९८६ में नव निर्मित प्राइमरी स्कूल रवीन्द्र पाली अवैतनिक प्राथमिक विद्यालय में एक कक्षा का निर्माण पूज्य बाबूजी के नाम से मेरे द्वारा बनवाया गया था। जिसे बाबूजी को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, देखकर उन्हें आन्तरिक शान्ति मिली थी विशेष कर इसलिये कि गरीबों के लिये उनके हृदय में जो स्थान था उसके अनुरूप यह कार्य हुआ था।

मेरे माता जी व पिता जी के सबसे प्रिय समधी थे बाबूजी। उनके परिवार में भी बाबूजी की मृत्यु से गहरा आघात पहुचॉ है। आज बाबू जी के सद्कर्म, उनके दिये गये संस्कार हमारे पास हैं। अपनी सेवा निष्ठा और समर्पण के बल पर वे आम लोगों से बहुत आगे निकल गयें हैं। एक ज्योति पीठ बन गये हैं। अन्धेरे में राह सुझाने वाली। हमारी आने वाली पीढ़ियाँ उस महान बाबू जी को कभी विस्मृत न कर पायेगी।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।।

इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं मरता और कौन नहीं जन्मता, परन्तु उसका जन्म लेना सफल है, जिससे कि वंश की उन्नति हो।

श्रद्धेय पिताजी — एक पूर्ण व्यक्तित्व

— डा. नरेन्द्र कुमार आर्य, ब्रिटेन

मैं १५ दिसम्बर १९९० को ही तो पिताजी के पास से यहां आया था और २८ दिसम्बर को उनके स्वर्गवास होने का समाचार मिला, किसीभी तरह मन मानने को तैयार नहीं था किन्तु सत्य को स्वीकार करना पड़ा। स्थान की दूरी के कारण उनकी अन्तयेष्टि में भी नहीं पहुंच सका इसका दुःख मुझे तथा मेरे परिवार को हमेशा रहेगा।

बाबूजी के अन्तिम दिनों में मैं १५ दिन उनके साथ रहा और उस समय मुझे उनकी सेवा करने का अवसर मिला यह मेरे लिये सन्तोष की बात है। उनकी बीमारी ऐसी नहीं थी कि उस कारण से उनकी मृत्यु हो जाती किन्तु अवस्था तो थी ही और उनमें जो आत्मबल था उसके सहारे वह जीवनपर्यन्त कार्यशील रहे।

बाबूजी एक सच्चे, तेजस्वी, साहसी, नियमपूर्वक रहने वाले व कठिन-परिश्रम करने वाले व्यक्ति थे। मैने उनको अपने बचपन से देखा व सुना था। बाबूजी के व्यक्तित्व में गुणों की भरमार थी। वे बड़ी से बड़ी समस्याओं का डटकर पूरी शक्ति से मुकाबला करते थे। ईश्वर में उनकी पूर्ण आस्था थी। सच्ची बात को कहने में बाबूजी कभी पीछे नहीं रहे। अपने पूरे जीवन में उन्होंने मानव जाति की भलाई की। उस बात का ज्वलन्त उदाहरण टाण्डा में आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना व आर्य समाज टाण्डा का संचालन है। भारत की स्वतन्त्रता के लिये बाबूजी को कई बार कारावास भी जाना पड़ा। बाबू जी स्वतन्त्रता संग्राम में कांग्रेस के पक्षपाती थे किन्तु कभी भी कांग्रेस की सदस्यता स्वीकार नही की। उन्हें राजनीति में पद से प्रेंम नहीं था और इसी कारण से उन्हेंने कभी कोई पद ग्रहण नही किया। उनका विश्वास शुद्ध राजनीति में था जो कि वर्तमान में सम्भव नही था अतः उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार का बीडा उठाया हुआ था और जीवनपर्यन्त उसी में लगे रहे। बाबूजी ने सन् १९२७ में आर्य समाज टाण्डा का चार्ज लिया था और तबसे निरन्तर उस समाज के प्रधान हो रहे सिर्फ नाम के ही प्रधान नही थे, कर्म से भी प्रधान थे।

आर्य समाज टाण्डा के ९९ वें वार्षिकोत्सवपर से ५ दिसम्बर १९९० तक मुझे टाण्डा में रहने का अवसर प्रदान हुआ। उस समय अयोध्या काण्ड से उत्पन्न स्थिति से बाबू जी पूर्ण रुपेण अवगत थे। उस समय उत्तरप्रदेश राज्य

में ट्रेन, डाक, तार, टेलीफोन सभी व्यवस्थायें शून्य के बराबर थी ऐसी परिस्थिति में विद्वानों को निमंत्रण भेजना व उन लोगों के टाण्डा आने की व्यवस्था करना जटिल कार्य था लेकिन बाबूजी भी हार मानने वाले इन्सान नहीं थे। हर तरह से विपरीत परिस्थितियों के बाबजूद भी वह उत्सव केवल बाबूजी के प्रयास से पूर्ण सफल रहा। आर्य समाज के उत्सवों में छोटा से बड़ी बात तक में बाबूजी का व्यक्तित्व अवश्य शामिल रहता था तथा छोटा से छोटा व बड़ा से बड़ा काम स्वयं करने को तत्पर रहते थे। उनके जीवन में आलस्य नाम की कोई चीज थी ही नहीं। बाबूजी वास्तव में एक जननेता थे।

बाबू जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य संसार के मानवो की भलाई करना था उनके अनुसार उसी व्यक्ति का जीवन सफल होता है जो कि संसार के लिये कुछ करे और उन्होंने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सम्पूर्ण जीवन को अर्पित कर रखा था। उनके इस त्यागमय जीवन का ही उदाहरण है टाण्डा में मुसलमान हिन्दू का प्रेम। टाण्डा में मुसलमान की आबादी अधिक है लेकिन बाबूजी के प्रभाव से कभी भी वहां हिन्दू मुस्लिम दंगा नहीं हुआ। बाबू जी की प्रत्युत्पन्न बुद्धि ताव की स्थिति में बहुत काम आती थी।

बाबू जी अपने परिवारिक उत्तरदायित्व को भी अच्छी तरह निभाते थे। हम सब भाई बहनों को अच्छा रहन-सहन व अच्छी शिक्षा प्रदान कराने में सदैव सचेष्ट थे। उनका व्यवसायिक जीवन भी उतना ही महत्वपूर्ण था। टाण्डा में कपड़े की आढ़त और उस पर छपाई का कारोबार था। व्यापार के सिलसिले में उन्हे आसाम, नैपाल की यात्रा अधिक करनी पड़ती थी और यातायात की यातनायें भुगतनी पड़ती थी। यात्रा से घर लौटते समय बाहर की अच्छी मिठाईयां तथा अच्छी बस्तुयें अवश्य लाते थे।

मैं २७ मई १९७६ से बिट्रेन में रह रहा हूँ। इस पत्र से अपने जीवन के अखिरी दिनों तक बाबू जी हमेशा मुझे पत्र लिखते थे। उनका आखिरी पत्र २२ दिसम्बर १९९० का लिखा हुआ उनके मरणोपरान्त मुझे प्राप्त हुआ। मैं भी बाबू जी के पत्र का उत्तर उसी दिन या दूसरे दिन जरूर लिख देता था। अब मुझे बाबू जी के पत्रों की कमी काफी खलती है।

आर्य समाज टाण्डा शताब्दी के अवसर पर बाबूजी की आत्मकथा मेरे बडे भाई श्री आनन्द कुमारजी आर्य के प्रयास से प्रकाशित हो रही है जिससे जन समुदाय को मार्ग दर्शन प्राप्त होगा। मैं १९८९ मे जब भारत गया था तब बाबू जी से विनती की थी कि आप अपना जीवन परिचय अवश्य लिखें और उसी समय उन्होने वचन दिया था जिसे उन्होंने पूरा किया। मैं पूज्य बाबूजी की स्मृतियों को हमेशा याद रखूँगा और उसके आधार एवं आदर्श पर अपने जीवन को चलाने का प्रयत्न करुंगा। इन शब्दों के साथ बाबू जी के चरणों में मेरा बार-बार नमस्कार।

श्री बाबू मिश्रीलाल आर्य प्रधान आर्य समाज टाण्डा का आदर्शमय जीवन

— सत्यमित्र शास्त्री

आर्यसमाज टाण्डा के प्रधान श्री मिश्रीलाल जी आर्य का जीवन महान एवं आदर्शमय था। मुझ से उनका सुसंस्कृत एवं शास्त्रार्थ निपुण होने के कारण अत्यन्त प्रेम था।

शास्त्रार्थ वेदप्रचार की उत्कट भावना

मैं टाण्डा के उत्सव पर बराबर जाता रहा। आर्यसमाज के उत्सव पर टाण्डा कालेज के अध्यापक श्री रामनरेश त्रिपाठी व्याकरणाचार्य ने कहा कि मुझ से बड़े-बड़े आर्यसमाज के विद्वान शास्त्रार्थ नहीं कर सकते हैं। टाण्डा में न जाने कितने आर्य आये और हार गये। यह पौराणिक पण्डित का गपाष्टक था। बाबू जी ने शास्त्रार्थ का समय निश्चित किया। २ घण्टे तक शास्त्रार्थ हुआ। मध्यस्थता टाण्डा कालेज के प्रधानाचार्य ने किया। अन्त में आर्यसमाज की विजय हुई। इसी प्रकार यवन ईसाइयों का शास्त्रार्थ होता रहा। श्री बाबूजी प्रधान होकर सम्हालते रहे। आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान बाबू जी को महान था। उर्दू का भी ज्ञान था।

साहसी निर्भीक - मिश्रीलालजी

श्री बाबूजी अत्यन्त निर्भीक और साहसी आर्य थे। टाण्डा आर्य समाज का उत्सव हो रहा था। मैं वानप्रस्थाश्रम मे अध्यापक था। वहाँ से आया तो देखा जुलूस को यवनों ने मसजिद पर रोक दिया है। जुलूस के आगे ओ३म् का झण्डा लिये श्री कन्हैया लालजी, मन्त्री एवं श्री बाबू मिश्रीलाल जी प्रधान जा रहे थे। अंग्रेजों का समय था। सरदार जिलाधीश ने जुलूस को आगे बढ़ाया।

श्री मिश्रीलाल जी और ग्राम वेद प्रचार एवं आर्यसमाजों की स्थापना

मैं, सभा द्वारा, श्री गोविन्दराम जी भजनोपदेशक तथा ज्ञान प्रकाशजी बाबूजी के आदेश से प्रतिवर्ष ग्रामों-मुँदेरा, मुबारकपुर, खाशपुर, मकदूमनगर, हंसबर आदि स्थानों पर वेदप्रचार करते थे। वे किसी से कुछ न लेकर भी अपने धन से प्रचार कराते रहे। और अब उन्हीं के प्रयास से वहाँ आर्यसमाज स्थापित हो गया। उस क्षेत्र में अधिक मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोग हैं।

उन्हें आर्य बनाने का श्रेय श्री बाबू मिश्रीलाल जी को है। उनका प्रभाव मुसलमानों पर भी इतना था कि उनके कन्या कालेज में मुसलमान लड़कियां पढ़ती हैं, और वेदमंत्र उच्चारण तथा संस्कृत में सम्भाषण भी करती हैं। यज्ञ में सम्मिलित होना एक आदर्श एवं उनके नैतिकता का परिचय है। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु पर आर्य समाज टाण्डा का उत्सव शान्तियज्ञ के रूप में मनाया गया। दफा २४४ के होते हुए मुसलमानों के न रोकने पर हिन्दुओं ने. पूछा तो उन्होंने कहा कि आर्यसमाज साम्प्रदायिक नहीं है। उनका प्रभाव पूरे क्षेत्र पर छाया हुआ था। शताब्दी की प्रबल कामना, उत्साह उनके अन्दर था किन्तु संयोग की बात है आर्य समाज टाण्डा की शताब्दी पर वे न रहे। परन्तु आज भी उनकी आत्मा सबको प्रेरणा दे रही है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"

श्री बाबू मिश्रीलाल जी का पारिवारिक जीवन आर्यसमाज के सिद्धान्तों से प्रेरित था। उनकी पत्नी मोतीहारी के श्रीजगन्नाथजी चौधरी की बहिन हैं, वे लोग नित्य यज्ञ करते थे। उनके पुत्र श्री आनन्द कुमार जी आर्य, श्री राजेन्द्र जी तथा श्री नरेन्द्रजी (डाक्टर साहब) ये सब आर्य हैं। मेहदावल बस्ती में उनकी बहिन श्री सत्यनारायण जी आर्य से ब्याही थीं। बाबूजी सन १९६५ मे बीमार थे, किन्तु उनके छोटे पुत्र श्री राजेन्द्रजी ने उत्सव कराया। उनके संबंधी श्री सीताराम जी आर्य, कलकत्ता, कट्टर आर्य हैं। इस प्रकार उनका परिवार सारा आर्य समाजी हैं।

आर्य समाज के संन्यासियों, नेताओं से उनको प्रेम था। श्री स्वामी सर्वदानन्दजी, स्वामी त्यागनन्द जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी उनके प्रेमी थे।

फैजाबाद में - बाबूजी को मैंने प. जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचन्द्र बोस आदि से मिलते देखा था। उन्हें अजमेर अर्ध शताब्दी पर भाई परमानन्द जी एवं महात्मा हंसराज जी से मिलते देखा था। उनके महान् कार्यों में आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ में यज्ञशाला का निर्माण है। इस प्रकार इस महान आत्मा की भावना राष्ट्र एवं धर्ममयी रही। श्री बाबूजी एक नक्षत्र थे, जो प्रकाश देकर विलीन हो गये।

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
अद्य टाण्डा निराधारा -
निरालम्बा सरस्वती
पण्डिताः खण्डिताः सर्वे मिश्रीलाल दिवंगते,
शूरा कृतविद्यो ऽसि। धर्मपुत्रों ऽसि वेद प्रचारकः।
यत्र वंशेसमुत्पन्नः, मिश्रीलाल महोदयः॥

— सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ
शास्त्रार्थ महारथी
बड़हलगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)

स्वामिनः परमोभक्तः

विज्ञमित्र शास्त्री

मिश्रीलालः प्रथित सुयशो दिव्य पुरूषोत्तमेषु
आसीदेकः परमधनिकः सज्जनानां धुरीणः।
ज्ञानाभवः प्रचुरमभवत् योषितां चात्र मध्ये
चैतत् दृष्ट्वा भृशं दुखितं चित्रमासीत् कृपालोः॥
विद्याहीना यदि च वनिता सन्ति लोके नु यस्मिन्
सर्वं नष्टं भवति भुवनं नात्र सन्देहलेशः॥
इत्यौसुक्यात् प्रबल मनसा साधु सन्धार्य चैतत्
रम्या चैका व्यरचयदसौ योषितां पाठशाला॥
छायाश्चैमा नियम निरता वर्गभेदं विहाय
सम्भाषन्ते प्रमुद मनसा यत्र गीर्वाण वाणी॥
रम्यं सौधं परम सुभगं चात्र सुधया विलिप्तम
मोदन्ते वै सरस मुनजाः तच्च दृष्ट्वा समन्तात्॥
स्वामिनः परमोभक्तः सत्यवादी दृढ़व्रतः।
आत्मनः जीवनं यावत् खादीवस्त्रमधारयत्॥
आरतं भारतं दृष्ट्वा चेतो नित्यमद्यत्।
बन्धनात् मातरं मोक्तुं विविधं यत्नमाचरत्॥
भौतिकं च सुखं त्यक्तवा निजं वै पैतृकं गृहम्।
आङ्गलानां शासने चासो कारागारम सेवयत्॥
टाण्डार्य समाजस्य वर्तते यच्च विश्रुतिः।
मिश्रीलालो महाभागो ह्यस्य मूले प्रवर्तते॥
आर्यधर्मानुरक्तस्य महर्षेनुयायिनः।
नमामो वयमेतस्य निर्मलं पाद पङ्कजम्॥

— मन्त्री
आर्य समाज टाण्डा
फैजाबाद

हिन्दू समाज का एक सजग प्रहरी

— आचार्य देवी प्रसाद मिश्र

जुलाई १९३० में जब से टांडा नौकरी करने आया तब नमक सत्याग्रह का आन्दोलन चल रहा था। नमक कानून तोड़ कर टांडे में जेल जाने वालों में जिस व्यक्ति की सबसे अधिक चर्चा थी वह थे स्व. मिश्रीलालजी। कच्ची गृहस्थी की परवाह न करने उन्होंने नमक कानून तोड़ा और जेल चले गये।

टांडा में धोबी और चमारों की संख्या अधिक है दोनो अपनी रोटी कमाने के लिये श्रम और मजदूरी करते हैं। इस काम को स्त्री और पुरूष दोनों ही करते है निकट सम्पर्क होने के कारण कभी अपहरण और बलात्कार की अशोभनीय घटनायें हो जाती थीं। उस समय गिरे हुये लोगों को ऊपर उठाने का काम श्री मिश्रीलाल बड़े साहस के साथ करते थे। अपने रोजगार और जीवन की परवाह न करते हुये इस काम में जुट जाते थे।

वे कांग्रेस समर्थक थे लेकिन कांग्रेस की सदस्यता कभी भी ग्रहण नहीं किया, कांग्रेस राज बनने पर अपने फायदे की बात भी नहीं सोची। उनका विचार था कि जिन बातों पर उनका मतभेद था उनको करने के लिये कांग्रेस की सदस्यता आड़े आयेगी।

दो सार्वजनिक काम उन्हे अधिक प्रिय थे आर्यसमाज का प्रचार करना और स्त्री शिक्षा का प्रसार करना। आर्यसमाज के प्रचार में जिस लगन और निष्ठा के साथ काम करते थे उसका उदाहरण मिलना अब कठिन हो गया है। इस क्षेत्र में उनके चले जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है वह शायद अब कभी पूरा न होगा। आर्यकन्या पाठशाला को सींच कर एक बड़ी संस्था बना डाला, इस संस्था के बढ़ने का सारा श्रेय उन्हीं को मिलना है।

बुराइयों को दूर करने की आग उनके हृदय में सदैव धधकती रहती थी इसी कारण उनके शब्द कभी-कभी कटु और कठोर हो जाते थे।

— भूतपूर्व प्राचार्य त्रिलोकनाथ महाविद्यालय
टाण्डा (फैजाबाद)

निर्धूम जीवन-ज्योति स्मृति की परिधि में

– डा. श्रीकान्त उपाध्याय
एम. ए., पी-एच. डी.

याद आता है वह दिन जब मैं कलकत्ता आर्य समाज के किसी पुरोगम में सम्मिलित होकर, आर्यसमाज के कार्यालय में बैठा हुआ कुछ-कुछ आत्मचिन्तन में विलीन विचार-तरंगों में प्रवहमान मनोमस्तिष्क को विश्राम दे रहा था। समाज का कार्यालय सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त समाज के कार्यकर्ताओं को आने-जाने, उठने बैठने, परस्पर वार्तालाप करने, परामर्श सरीखे गंभीर वार्तालाप और मनोरंजन हेतु हल्की-फुल्की बात-चीत से गुंजाय मान हो रहा था। मैंने अपने सामने कुर्सी पर आसीन एक वयस्क वृद्ध व्यक्ति को, धोती कुर्त्ता ओर टोपी से सुभूषित, कृशकाय किन्तु तेजस्वी व्यक्ति को, देख कर अपने पास बैठे समाज के किसी कार्यकर्त्ता से धीरे से पूछा कि टोपीधारी वृद्ध महाशय कौन हैं ? संक्षिप्त किन्तु सटीक उत्तर मिला, मिश्रीलाल जी टाण्डा वाले। इतना परिचय देकर कार्यकर्त्ता महोदय ने मेरी ओर उस दृष्टि से देखा जैसे उन्होंने मुझे अपने अति संक्षिप्त उत्तर में उस व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण क्रियाकलाप, और पूर्ण परिचय करके रख दिया हो जिसके उपरान्त मुझे उनसे और कुछ पूछने-जानने समझने के लिए कुछ शेष नहीं।

थोड़ी देर तक मैं अपनी स्मृति पर बल देता हुआ आर्य समाज कलकत्ता के उस कार्य कर्त्ता की ओर अवाक देखता रहा। फिर-तो मेरे मानसपटल पर उक व्यक्ति का, उस श्वेतखद्दर वस्त्रित कर्मठ दृढ व्यक्तित्व का भरा-पूरा परिवार, उसके संबंधियों का परिवार और उसके परिचितों तथा प्रशंसकों का अपार जन समुदाय एक साथ उमड़ कर आने लगा। मैंने अपने समीप वैठे हुए, अपने संक्षिप्त उत्तर से मुझे अवाक कर देने और मूक चिन्तन क्षेत्र में छोड़ देने वाले सज्जन से कहा - यही मिश्रीलालजी टाण्डा वाले हैं ?

तदुपरान्त मेरे अन्तर्मन में सहजभाव से स्वगत कथन हुआ तभी तो प्रचुर सम्पन्नता और योग्य, आज्ञाकारी एवं सुपुत्रों के संरक्षण में पोषित यह सादगी सौम्यता तेजस्विता, कर्मठता तथा सामाजिक कार्यों के सम्पादन में अपार अभिरुचि उत्साह, दृढ़ता एवं लगन अभी भी इस वयस्क व्यक्ति को वार्धक्य की शिथिलता और वैदिक धर्म प्रचार के अनुष्ठानों में कृपणता कदाचित इनके स्वनिर्मित परिवार और परिवेश की विधमानता में कैसे स्पर्श कर सकती है? इसी चिन्तन धारा में मैंने श्री मिश्रीलाल जी को नमस्ते कहकर अभिवादन किया। तत्काल उन्होंने बड़े ध्यान से मेरी ओर देखते हुए अभिवादन का उत्तर नमस्ते कह कर दिया। फिर तो परिचयात्मक वार्तालाप का एक संक्षिप्त प्रसंग उठ खड़ा हुआ। और जब मैंने प्रश्नोत्तर की श्रृंखला में यह कहा कि मैं प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय आचार्य पं. रमाकान्त जी उपाध्याय का छोटा भाई हूँ तब तो बड़े स्नेह और श्रद्धा भाव से वे बोल उठे पूज्य आचार्य जी मेरे श्रद्धास्पद थे मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा-समझा और अपने जीवन को तदनुसार ढालने का प्रयास किया है। आप सब भाई उनकी छत्रच्छाया में और उनका अभिभावकत्व प्राप्त कर वैदिक धर्म प्रचारक और आर्यसमाज के सजग प्रहरी बन सके हैं इसे देखकर मुझे हार्दिक आह्लाद होता है।"

उस पुनीत प्रंसग को आगे बढ़ाते हुए मैंने श्री मिश्रीलाल जी से आर्य समाज की वर्तमान स्थिति, उसके संघटनों, उसके भविष्यत् उसके कार्यकर्त्ताओं, प्रचारकों, उपदेशकों एवं सत्संगों और वार्षिकोत्सवों के वर्तमान और भावी पुरोगमों के प्रति अपने सुलझे हुए विचारों को व्यक्त करने का आग्रह किया। इस आग्रह पर वे बोल उठे – पं. जी मुझे तो आप आर्यसमाज का एक सजग प्रहरी और सिपाही समझें । मुझमें आपके सभी प्रश्नों के सर्वमान्य, संतोषजनक और प्रेरणास्पद उत्तर देने और आपके शंकाकुल हृदता को पूर्णतया आश्वस्त कर देने की क्षमता तो नहीं किन्तु इतना अवश्य कह सकता हूँ कि आर्य समाज के संघटनों के लिए आदर्श ऋृग्वेद के संघटन सूत्त और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं, उपदेशकों तथा अधिकारियों के लिए आर्यसमाज के दश नियम, उन्नति का मार्ग और भगवान का उपदेश यदि आचरण, जीवन-व्यवहार में लाया जा सके तो पर्याप्त है। कदाचित इसीलिए प्रत्येक सत्संग के उपरान्त महर्षि स्वामी दयानन्द महाराज ने इन नियमों और उपदेशों का समवेत पाठ करने की स्वस्थ परम्परा चलायी जिसका अनुसरण अधावधि किया जाता है।

मैं तो यथा शक्ति अपने जीवन-व्यवहार को इन नियमों और उपदेशों पर ले चलने की सतत् चेष्टा करता हूँ। आगे परमपिता परमेश्वर की इच्छा।

इस संक्षिप्त वार्तालाप के उपरान्त वे अपने किसी आत्मीय सज्जन के साथ कहीं प्रस्थान करने के लिए उठ खड़े हुए और मैं भी उन्हें सादर नमस्ते कहकर अन्य किसी आवश्यक कार्य में व्यस्त हो गया। स्वनाम धन्य स्वर्गीय मिश्रीलाल जी का यह संक्षिप्त हृदयोद्गार यथावत् मेरी स्मृति में विद्यमान है।

ऐसे व्रती महापुरुष मिश्रीलाल जी के महनीय जीवन चरित्र और संस्मरणावली को आद्यंत जब मैंने ध्यान से पढ़ा तब उनके प्रभविष्णु व्यक्तित्व की अमिट छाप से अभिभूत मनोमस्तिष्क एवं हृदय से निकला कि वे व्यक्ति नहीं, संस्था थे। इसीलिए तो आजीवन अनेकानेक शिक्षा संस्थाओं और आर्य समाज के लिए निःस्वार्थ भाव से सर्वात्मना समर्पित रहे। तन-मन-धन से आर्यसमाज की संस्थाओं के सम्पोषण, संवर्धन, संरक्षण और उत्थान तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सतत् निमग्न मिश्रीलाल जी वास्तव में सबके श्रद्धास्पद थे। टाण्डा निवासियों – हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाइयों और सर्वसाधारण जन समुदाय को अपनी सहानुभूति, न्याय प्रियता, सच्ची वैदिक धर्म निष्ठा और निःस्वार्थ सेवा भावना, सच्चरित्रता तथा सद्व्यवहार से आकृष्ट करने वाले मिश्रीलाल जी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं, अधिकारियों, पुरोहितों और उपदेशकों एवं महोपदेशकों के अत्यन्त प्रिय विश्वासपात्र तथा श्रद्धाभाजन बने रहे। परम प्रभु जगदीश्वर ऐसे पुण्यात्मा, परोपकारी, परम धार्मिक व्यक्ति की दिवंगत आत्मा को चिरशान्ति एवं सद्गति प्रदान करे और उनसे सम्बन्धित तथा सम्पोषित संस्थाओं और उनके परिजनों तथा परिचितों को उनके मिशन को आगे बढ़ाने तथा सफल करने की सत्प्रेरणा प्रदान करें जिससे स्व. श्री मिश्रीलाल जी की कीर्ति चिरस्थायी बनी रहे। कीर्तिर्यस्य स जीवति।

टाण्डा में मैंने क्या देखा और क्या पाया

— पं. महेन्द्रपाल आर्य

आज से लगभग चार वर्ष पहले आर्यसमाज टाण्डा (फेजाबाद) उ. प्र. जाने का मुझे अवसर मिला।

न मालूम मेरा परिचय वहां किसने दिया, बस स्टेशन उतर कर मैंने पूछा एक रिक्सा वाला से आर्य समाज कहां है मुझे पहुंचाइये। रिक्सावाला मुझे सड़क से सटी हुई एक गली के अन्दर ले जाने लगा, दिन के करीब २-२॥ बज रहे थे। जब मैं गली में प्रवेश किया देखा एक लाइन से कुछ लड़कियां निकल रही हैं काला-काला बुरका ओढ़ कर मैं डर गया कहीं रिक्सा वाला मुझे जान गया हो कि मैं ही भूतपूर्व इमाम, मेरठ हूँ। चन्द मिनटों में उस झुंड को पार कर रिक्सा आगे निकला तो देखा दायें हाथ पर एक गेट जहां से लड़कियां निकल रही हैं, और बायें हाथ में एक विशाल मैदान जहां विशाल आकार का पंडाल लगा है, और एक किनारे उत्तर दिशा में भव्य यज्ञशाला तथा किनारे कुछ कमरे वने हैं। मैं गया। कार्यक्रम का दूसरा दिन, वहां उस समय उपस्थिति नहीं थी, कई मजदूर थे और कई सेवक। एक ने मेरा वी.आई.पी. लिया दूसरे ने वेग, चल दिये आर्यसमाज की ओर। एक गली से होते हुये समाज मन्दिर पहुँचे जहां और सभी उपदेशकगण मिले।

मुझे देखकर जो उपदेशक मुझे पहचानते थे वह खबर भिजवा दिये श्री प्रधान जो के पास। अब तक मैं हाथ पैर धोकर कुछ अल्पाहार ले रहा था इतने में एक वयोवृद्ध एक का हाथ पकड़कर वहां पहुंचे। सब लोग उठ कर खड़े हो गए प्रधानजी कहकर, मैं भी खड़े होकर चरण छूआ। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहने लगे आपको आने में कष्ट तो नहीं हुआ। आप चलिये मेरे साथ, आपकी व्यवस्था अलग है ठहरने की, मुझे लेकर वहीं आये जहां से मैं गया था उसी गेट के अन्दर ले गये जहां से लड़कियां निकल रही थीं उसके अन्दर एक तरफ छात्रावास बीच में एक भव्य बिल्डिंग दाहिने हाथ में एक उद्यान और विज्ञान शाला आदि। प्राचार्या जी के आवास से सटा हुआ एक कमरा खोला गया मुझे टिकाने को जिसमें वाद्य यन्त्रादि रखा था।

प्रधानजी कुछ बात मेरे से पूछे कैसे आपका आर्यसमाज में आना हुआ मैंने संक्षेप में बताया बड़े ही प्रसन्न हुए प्रधानजी और मुझे आराम करने को कहकर चल दिये। चन्द मिनट बाद प्रचार्या बहनजी वर्माजी आईं क्या लेंगे आप चाय के साथ, मुझे सिर्फ चाय चाहिए क्योंकि आर्यसमाज से मैं जलपान कर आया था, फिर भी मिठाई नमकीनादि के साथ चाय भी मिल गया उसे लेकर मैं उसी कालेज के अन्दर घूमने लगा देखने लगा। सूरज अस्त हो गया मैं अपने कक्ष में आकर बैठा फिर मुंह हाथ धोकर संध्या किया एक आदमी आकर मुझे कार्यक्रम का पर्चा दिया जिसमें मेरा समय सब से अन्तिम में १०॥ से १२॥ तक रहा, तो मैं पहले से चलकर बैठा किन्तु कार्यक्रम के आरम्भ से ही श्री प्रधानजी बैठे थे और अन्त तक मेरा व्याख्यान सुने मैंने वेद और कुरान को तुलनात्मक ढंग से सुनाया तथा वैदिक सिद्धान्त पर दृढ़ रहा। श्री प्रधानजी सैद्धान्तिक प्रवचनों से इतना प्रभावित हुए और अन्त में उन्होंने कहा मेरा खोया बच्चा वापस आया आज से टाण्डा आर्यसमाज श्री महेन्द्र पाल जी का पैत्रिक समाज है।

मैं रहूं न रहूं महेन्द्र पाल जी का यह समाज अपना है जब भी आप आवें और इतना ही नहीं उन्होंने मुझे अपना धर्म पुत्र कहा और प्यार व स्नेह में कहीं कमी नहीं छोड़े लगातार तीन वर्षों से मैं जाता रहा एक बार मैं अपनी पत्नी को भी साथ ले गया अपने परिवार जैसे मुझे महसूस करने नहीं दिये कि मैं बाहर का हूं।

जो मैंने पाया वह स्नेह प्यार और आदर्श एवं कर्मठता इस आयु में ९० से ऊपर एक बुजुर्ग व्यक्ति उन्हें देखकर मुझे प्रेरणा मिली और मैं उनके घर का ही सदस्य बन गया सभी भाई बहनों ने मुझे अपने छोटे भाई के आसन पर बिठाया। परिवार के सभी लोग निष्ठावान आर्यसमाजी हैं, व समर्पित हैं।

जो मैंने देखा वह उनका अवदान अपने श्रम से और प्रभाव से उन्होंने कन्या इन्टर कालेज को बनाया जिसमें दो हजार से अधिक लड़कियां पढ़ती हैं, जिसमें नौ सौ मुस्लिम लड़कियां हैं आवासीय होने के बावजूद भी हजारों लड़कियां बाहर से आती हैं मुस्लिम लड़कियां और जगहों से अपने को यहां सुरक्षित समझती हैं, टाण्डा मुस्लिम बहुल होने पर भी इतना प्रभाव, स्वर्गीय पिताश्री जी का रहा वह लिखकर समाप्त करना ही मुश्किल है भले ही कापी पेन्सिल खतम हो।

अभी ९० में कलकत्ता कई बार आये मुझे खबर देते रहे बराबर और सदा प्रयास किये मुझे सुखी बनाने का, कि मैं यहां न महसूस करुँ किसीं और दुनिया से मैं आया हूं यह प्रेम सभी आर्यों में हो जाय तो दुनिया स्वर्ग बन जाय।

अन्तिम बार जब कलकत्ता से टाण्डा गये नवम्बर ९० के अन्तिम में मैं नहीं जान पाया था कि मुझे अनाथ छोड़ेंगें दिल्ली अन्तरराष्ट्रीय महासम्मेलन से मैं लौटा ९१ जवनरी ६ को, सुना पूज्य पिताजी नहीं रहे, मुझे भी अनाथ बनना पड़ा एक बार तो अनाथ बन चुका था किन्तु उस स्थान की पूर्ति हो चुकी थी अब यह शून्यता मैं मृत्यु पर्यन्त अनुभव करूंगा उसी शून्यता के कारण मुझे कलकत्ता (बंगाल) से कानपुर (उ.प्र.) जाना पड़ा।

उनके जीवन से जो प्रेरणा मुझे मिली है, मैं जीवन भर उसे अपने आचरण में उतारुँगा व लाऊंगा और मैं जानता हूं उनके आदेश का पालन तथा उस पर आचरण ही उनके लिये श्रद्धाजंलि होगी। ईश्वर हमें क्षमता प्रदान करें अपने स्वर्गीय पूज्य पिता बाबू मिश्रीलाल जी के जीवन व आदर्श पर चलूं।

मेरे श्रद्धेय दादाजी — धन्य हैं

— ममता आर्य

जब मैं अपने आदरणीय दादा जी के विषय में कुछ पंक्तियाँ लिखने बैठी हूँ तो यह समझ में ही नहीं आ रहा है कि कहाँ से शुरू करूँ तथा कहाँ पर अन्त करूँ। शायद इस का मूल कारण यह है कि उनके विशाल अस्तित्व का न तो कोई ओर है न ही छोर। ऐसे मनुष्य इस दुनिया में कम जन्म लेते हैं जो कि भीड़ में पहचाने जाते हों। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे दादाजी की पोती हूँ जो न केवल यशस्वी थे परन्तु उनका नाम आज भी इज्जत तथा आदर से लिया जाता है।

जैसे बीज अपना अस्तित्व मिटाकर वृक्ष बनकर के एक से अनेक हो जाता है, उसी प्रकार से वह प्राणी जो सब प्राणियों के हित में अपने को मिटा देता है, वह अनन्त शक्तिमान हो जाता है। ऐसे थे मेरे पूज्य दादाजी। वह केवल अपने परिवार के बाबूजी नहीं थे, वे तो सारे टाण्डा गाँव के बाबूजी थे। कमरे में लोगों का जमघट, राय-मशवरे का दौर तथा चाय पर चाय की फर्माइश-इन सब की याद आज भी मस्तिष्क में तरोताजा है। परन्तु आज वही कमरा सन्नाटे के साये में घिरा हुआ है, वही चारपाई जिस पर उनका दिन-रात का बसेरा था, रिक्त पड़ी हुई है, लोगों का ताँता अब छँट गया है। शायद यह सभी को अहसास हो गया है कि इस रिक्त स्थान का भरना मुश्किल अथवा असम्भव है।

बचपन में हम लोग प्रायः उनके इर्द-गिर्द बैठ कर उनसे कहानियाँ सुनते थे। राजा रानी या परियों की कहानियाँ नहीं बल्कि कहानियाँ थीं देश-भक्ति की, आजादी की लड़ाई की तथा अंग्रेजों की क्रूरता एवं अत्याचार की। आजादी की लड़ाई में उन्हें कई बार जेल के चक्कर लगाने पड़े जहाँ उनकी भेंट महात्मा गाँधी तथा अन्य महान देश-भक्तों से हुई। इन दिनों की वे हमेशा गर्व से चर्चा करते थे। उन्हें अंग्रेजों से घृणा थी। फिरंगियों के देश के सामान को छूने में भी वे अपना अपमान समझते थे। उन्हें नफरत थी अंग्रेजी दवाइयों से। उनके अंतिम दिनों में कलकत्ते के डाक्टरों ने उन्हें

ढेर सारी अंग्रेजी दवाइयाँ लिख दी थी। उन्हें समय-समय से दवाइयाँ खिलाने की मेरी ही जिम्मेदारी थी और यह उत्तरदायित्व बिलकुल ही आसान नहीं था। हमेशा कहते थे कि ये अंग्रेजी दवाईयाँ मेरी जान समय से पहले ले लेंगी। उन्हें दवाई खिलाना एक समस्या थी। उनकी जिद्द एवं डाँट-फटकार के बावजूद भी मैं उन्हें दवाइयाँ देने में सफल हो जाती थी।

बाबूजी को क्रिकेट खेल में बहुत दिलचस्पी थी। मैच के दिनों में कमेन्ट्री सुनना कभी नहीं भूलते थे। आज कल के खिलाड़ियों से वे कहते थे कि ये लोग क्या क्रिकेट खेलेंगे, खेलते तो हम लोग थे। वे खुद एक अच्छे खिलाड़ी थे। गेंदबाजी में वे माहिर थे। अयोध्या के विरुद्ध मैच में उन्होंने अपने टाण्डा का नाम रोशन किया था। खद्दरधारी धोती कुर्ता पहने, टोपी लगाये तथा छड़ी लेकर चलने वाले दादाजी कभी खिलाड़ी रहे होंगे, सुन कर न केवल आश्चर्य होता था परन्तु असम्भव सा लगता था।

उन्हें बच्चों से बेहद प्रेम था। मुझे याद है हम लोंगो के छुट्टियों के दो महीने पहले से उनकी चिट्ठियाँ कलकत्ता आनी शुरु हो जाती थीं। हर पत्र में यही लिखा होता कि बच्चों को छुट्टियों में टाण्डा भेजो। हम लोगों के वहाँ पहुँचने पर उनकी खुशियों का ठिकाना न रहता। उन्हें हम लोगों की सेहत का काफी ध्यान रहता था। गर्मी के दिनों में अपने से बढ़िया से बढ़िया आम चुन कर मुझे खाने को देते थे। हम लोगों के मनपसन्द भोजन बनाने का उनका सख्त आदेश रहता था। प्रतिदिन सबेरे गर्म जलेवियाँ मंगवाना कभी नहीं भूलते थे।

उनकी यह अभिलाषा थी कि हम लोग अच्छी से अच्छी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करें। घर के हर बच्चे को उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रोत्साहित करते रहते थे। जब मैं स्कूल एवं कालेज में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई तो उन्होंने मेरी प्रशंसा करते हुए गर्वपूर्वक कहा था, "आखिरकर पोती किसकी है।"

दादाजी अपने आखिरी दिनों में थोड़ा अस्वस्थ रहने लगे थे। इस कारण उन्हें कलकत्ता डाक्टरी चिकित्सा के लिए आते रहना पड़ता था। मुझे उनकी सेवा शुश्रूषा का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। वे मेरे हाथों का बना टमाटर का सूप बहुत चाव से पीते थे।

उनकी बड़ी कामना थी कि हम लोग प्रति वर्ष आर्यसमाज के वार्षिक जलसे पर टाण्डा पहुँचे परन्तु स्कूल तथा कालेज के खुले रहने के कारण मैं कभी भी जलसे में नहीं पहुँच सकी। इस वर्ष आर्यसमाज की शताब्दी ('९१) में जाना निश्चित हुआ था, परन्तु मुझे क्या पता था कि मुझे वहाँ बुलाने वाला ही इस दुनिया से बुला लिया जायेगा। शताब्दी होगी धूमधाम से होगी, टाण्डा वासी खुशियाँ मनायेंगे, परन्तु इस उत्सव में एक कमी महसूस होगी और यह कमी होगी उनके प्रिय प्रधानजी की, टाण्डा आर्यसमाज के रीढ़ की। जलसे का मंच सूना रहेगा, जिसे वहाँ होना चाहिये था, वह वहाँ नहीं होगा।

उनकी याद में आज बराबर आँसू निकल आते हैं। हमारे ऊपर से एक सत्पुरूष का साया उठ गया। वे पथ प्रदर्शन कर के हम सबों को छोड़ गये हैं, कौन उनके पद चिन्हों पर चलेगा, उनके सिद्धान्तों पर अमल करेगा, यह कह सकना कठिन है। परन्तु कोशिश करना हमारा परम कर्त्तव्य है। उनके प्रति मेरी सच्ची श्रद्धान्जलि तभी होगी जब मैं उनके बताये गये मार्ग को अपना सकूँगी। हे ईश्वर! मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं अपने 'दादा की पोती' वन कर दिखा सकूँ, उनकी भावनाओं के अनुकूल महान एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बंन सकूँ और मेरे देव तुल्य श्रद्धास्पद दादा जी की पवित्र आत्मा को भगवान सद्गति प्रदान करें।

श्रद्धेय बाबू जी

– डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री,
एम.ए., पी-एच.डी.,

आर्य समाज टाण्डा के कर्णधार आर्यकन्या इण्टरकॉलेज टाण्डा के सूत्रधार, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की धुन में हमेशा प्रयत्नशील श्री बाबू मिश्री लाल जी आर्य को मैं ही नहीं अपितु सभी उपदेशक, प्रचारक आदर से 'बाबू जी' कहा करते थे। मेरा उनसे परिचय उनके जीवन के सन्ध्याकाल में हुआ। उनके देहावसान के पाँच-छह वर्ष पूर्व से मैं उनके निमन्त्रण पर टाण्डा आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में जाने लगा। प्रारम्भ में कुछ इस प्रकार से हुआ कि लगातार दो-तीन वर्षों तक उत्सव के अन्तिम दो-ढाई दिन ही मैं उत्सव में रह पाता था। क्योंकि टाण्डा का उत्सव कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक मनाया जाता है। प्रतिवर्ष यही तिथि रहती है। इसका एक बड़ा कारण कार्तिक पूर्णिमा भर कार्तिकी का मेला और बड़ी संख्या में मेला के यात्रियों द्वारा दिन-रात पूर्णिमा के दिन आर्य समाज के पण्डाल में वेद-प्रवचन, व्याख्यान, भजन सुनना था। मै काशी शास्त्रार्थ ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला द्वादशी - त्रयोदशी के दिन काशी - शास्त्रार्थ स्थल पर आयोजित कार्यक्रम में साग्रह बुलाया जाता। उस कार्यक्रम में ट्रस्ट के एक सदस्य के रूप में तथा वहाँ पर राजर्षि रणञ्जय सिंह, स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री ओमप्रकाश त्यागी जी आदि महानुभावों के कार्यक्रम को आकर्षक तथा प्रभावी बनाने की दृष्टि से मेरा उपयोग अधिकारीगण चाहते थे और मुझे काशी जाना पड़ता। फलतः चतुर्दशी तथा पूर्णिमा को मात्र १/२ दिन के लिए टाण्डा के उत्सव में जा पाता। बाबू जी मेरी मजबूरी समझते तथा कहते कि एक दिन के लिए ही सही आपको टाण्डा अवश्य आना है।

मैं उनके सम्पर्क में ४-५ वर्ष ही रह पाया, किन्तु मैं उनसे अत्यन्त प्रभावित रहा, दूसरा कारण यही है कि पूरे उत्तर भारत में टाण्डा जैसा वार्षिकोत्सव अब कहीं नहीं होता। इसका श्रेय-प्रेम श्रद्धेय स्वर्गीय बाबू जी को जाता है। उत्सव में इतनी अधिक उपस्थिति और मेला के दिन तो प्रातः

६ बजे से रात्रि १२ बजे तक अनवरत प्रचार चलता रहता। निरन्तर ५ दिनों तक होने वाले उत्सवों में उत्सव-प्रचार के सभी अंगों की प्रक्रिया अपनाई जाती। मसलन-यजुर्वेद पारायण यज्ञ, शंका समाधान, शास्त्रार्थ, भजन, उपदेश और विविध सम्मेलन। अनेक सम्मेलनों में से संस्कृत सम्मेलन प्रतिवर्ष और उसमें संस्कृत में भाषण। अन्तिम दिन तो प्रातः ६ बजे से रात्रि १२ बजे तक का कार्यक्रम। उत्सव में उपदेशकों, प्रचारकों भजनोपदेशकों, विद्वान् व्याख्याताओं और विदुषियों की प्रभूत संख्या होती। प्रायः भारत में कहीं भी इतने अधिक उपदेशक-प्रचारक प्रतिवर्ष किसी एक आर्यसमाज के उत्सव में नहीं जाते हैं। सभी उपदेशकों वक्ताओं के दिन और रात्रि के कार्यक्रम जिसे बाबू जी ही बनाते, उससे कोई असन्तुष्ट भी न रहता और सर्वथा सन्तुलित कार्यक्रम होता। आज जब कि उत्सवों पर शास्त्रार्थ वन्द हो चुके हैं किन्तु टाण्डा में कुछ वर्षों पूर्व तक प्रतिवर्ष शास्त्रार्थ होता देखकर किसे आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता न होगी। इसीलिए लगभग प्रतिवर्ष पं. शान्ति शास्त्रार्थ महारथी और वं. सत्यमित्र शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी बुलाये जाते। बाबू जी प्रत्येक कार्यक्रम में रात्रि तक उपस्थित रहते। ८० वर्ष अधिक के हो जाने के बाद भी सभी विद्वानों की आव भगत करते, भोजन जलपान-व्यवस्था की समुचित जानकारी लेते और किसी भी प्रकार की न्यूनता होने पर उसकी पूर्ति में सर्वथा तत्पर।

किसी वर्ष कोई भी सम्मेलन जो प्रतिवर्ष निर्धारित होता उसे स्थगित न करते। एक बार महिला सम्मेलन के लिए आने वाली एक विदुषी महिला ने कहलवाया कि अमुक दिन यह सम्मेलन न रखकर अमुक दिन रख लें जिससें में उपस्थित हो सकूँ। बाबू जी का उत्तर था आप जब भी आयें, स्वागत है, किन्तु जिस दिन महिला सम्मेलन रखा गया है, उसी दिन प्रतिवर्ष होने की परम्परा रही है, उसे स्थगित कर परिवर्तित नहीं किया जाएगा।

शंका समाधान का भी बड़ा रोचक कार्यक्रम होता। एक वर्ष किसी ने स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि पूछी। समाधाता महोदय को परेशानी हुई, बाबू जी खड़े हुए और बोले, सिद्धान्त पर प्रश्न करिए, स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि आर्यसमाज को नहीं मालूम, हम ऋषि दयानन्द का बोध दिवस जो ज्ञात है, प्रतिवर्ष हमलोग शिवरात्रि को मनाने हैं। मैं मंच पर खड़ा हुआ और बाबू जी से कहा कि इस प्रश्न का उत्तर मैं दूँगा। बाबू जी ने सहर्ष अनुमति दी और मैंने कहा कि स्वामी जी की जन्मतिथि फाल्गुन कृष्णा दशमी, दिन शनिवार १८८१ विक्रमी है। सार्वदेशिक धमार्य सभा ने इसीतिथि को स्वामी जी की

जन्मतिथि घोषित किया है और उसका आधार तर्क-प्रमाण-पुरस्सर मैंने उपस्थित किया। प्रश्नकर्त्ता, सभा में उपस्थित जन समुदाय, उपदेशक वर्ग और बाबू जी आह्लादित हो उठे। बाद में बाबू जी ने मुझे बताया कि यह प्रश्न यहाँ तीन-चार साल से पूछा जा रहा है, किसी उपदेशक ने इस सम्बन्ध में पूरी बात की जानकारी नहीं प्राप्त की। आपने इस पर अच्छा अध्ययन किया है।

बाबू जी की दूसरी बड़ी देन टाण्डा का आर्य कन्या इण्टर कॉलेज है। टाण्डा में स्त्री-शिक्षा की न्यूनता और आवश्यकता को देखते यहाँ कन्या स्कूल बाबू जी के प्रयास से खोला गया। धीरे-२ यह विद्यालय प्रगति करता गया और इण्टर कॉलेज के रूप में आवासीय व्यवस्था से सुसज्जित हो गया। इस आर्यकन्या इण्टर कॉलेज को सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें सैकड़ों मुस्लिम कन्याएँ पढ़ती हैं। पचासों की संख्या में कन्याएँ हॉस्टल जो विद्यालय परिसर में ही है, रहती हैं। दिनचर्या कन्या गुरूकुलों जैसी-प्रातः काल उठकर 'ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रम् के मन्त्रोच्चारण से लेकर सन्ध्या और यज्ञ के सभी मन्त्र आवासीय छात्राओं को कण्ठस्थ हैं। उत्सव के प्रत्येक सम्मेलन में छात्राएँ अपना पूर्व से तैयार गीत, भजन और सम्मेलन से सम्बद्ध भाषण प्रस्तुत करती। और हिन्दू मुसलमान दोनों वर्गों की कन्यायें होतीं। कुछ कट्टरपन्थी मुस्लिम नेताओं ने टाण्डा और आस-पास के मुस्लिम भाइयों पर यह दबाब डाला-कि आर्यकन्या कॉलेज में लड़कियों को मत पढ़ ओ, वे हिन्दू बनजाएँगीं। अभिभावकों का उत्तर होता कि जब तक श्री मिश्रीलाल जी हैं इनके ईमान और चरित्र पर हमे पूरा भरोसा है, लड़कियों को सुरक्षा, के साथ अच्छी तालीम और उन्हें चरित्र की धनी बनाने वाली इस संस्था में हम केवल इस कारण न पढायें कि यह आर्यों की पाठशाला हे ठीक बात नहीं। जब कलकत्ता आर्य समाज की शताब्दी मनाई गई और उसमें टाण्डा कन्या कॉलेज की मुस्लिम लड़कियों ने वेदमन्त्र, श्लोक और अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये तो वहाँ के नेता और जन समुदाय आश्चर्य चकित हो गये। काश! देश की सभी छात्राओं और छात्रों कों वैदिक संस्कृति से इस प्रकार अनुप्राणित किया जाता।

बाबू जी ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था। वे कांग्रेस के सिपाही थे। अतः उनकी पुराने कांग्रेस नेताओं से मित्रता थी। उनके अनन्य मित्रों में श्री जयराम वर्मा और राजा रणञ्जय सिंह थे। श्री वर्मा जी उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता थे और वर्षों महत्वपूर्ण मन्त्री रहे। उन्हें राज्यपाल का पद देने की पेशकश की गई थी पर वर्मा जी ही तेयार नहीं हुए। पुरानी पीढ़ी के त्यागी तप्रस्वी नेताओं से उनकी आत्मीयता थी। एक बार उत्सव

पर मैंने वर्मा जी को बोलते देखा और उसके बाद कन्या कॉलेज में उनके सम्मान में आयोजित चाय पार्टी में सम्मिलित भी हुआ था, जिसमें श्रद्धेय बाबू जी ने मेरा अतिशयोक्ति पूर्ण ओर स्नेहिल परिचय स्व. वर्मा जी से कराया था। राजा साहब-अमेठी कई वर्षों तक टाण्डा के उत्सव में आते रहे और बाबूजी से व्यक्तिगत भी मिलते रहे। टाण्डा आर्यसमाज की स्वर्ण जयन्ती पत्रिका में मुझे राजर्षि महोदय का काशी शास्त्रार्थ पर एक दुर्लभ पद देखने को मिला है।

बाबू जी कांग्रेसी थे लेकिन आर्य सिद्धन्तों पर किसी से समझौता करने वाले नहीं। मुस्लिम तुष्टीकरण के हमेशा विरोधी रहे। उत्सवों पर पुराणों से ज्यादा कुरान की समीक्षा पर भाषण होते। उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी, उज्ज्वल चरित्र और सरल स्वभाव से टाण्डा में ही नहीं बाहर के भी सहस्रों मुस्लिम भाई उन्हें अपना बन्धु समझते। उनकी अन्त्येष्टि में हिन्दू और मुसलमान भारी संख्या में सम्मिलित हुए। टाण्डा मुस्लिम बहुल आबादी वाला शहर है। उनके देहान्त पर हिन्दू-मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों की सभी दुकाने बन्द हो गई। सैद्धान्तिक दृढ़ आर्य-पुरूष के प्रति इस प्रकार की श्रद्धाज्जलि स्पृहणीय है। सभी के प्रति प्रेम भाव रखते हुए भी सभी वर्ग के सुधार का प्रयास करना चाहिए यही उनके जीवन का आदर्श रहा।

उनका मेरे प्रति प्रेम भाव बहुत था। नवम्बर १९८९ ई. के उत्सव में मुझे टाण्डा जाना था। किन्तु इस बीच लोकसभा का चुनाव आ पड़ा किसी भी दल का सदस्य न होने के बावजूद 'राष्ट्रीय लोकतन्त्र बनाम राजनीतिक तानाशाही' के मध्य छिड़े संघर्ष में लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु मैंने जनता दल के अमेठी से प्रत्याशी श्री राजमोहन गाँधी (महात्मा गाँन्धी के पौत्र) का प्रचार प्रभारी का दायित्व संभाला। फलतः टाण्डा के उत्सव में मैं न जा सका और अपने मित्र श्री दीनानाथ जी को वहाँ भेजते हुए उत्सव में सम्मिलित न हो पाने के कारण बावू जी से क्षमा माँगी। उत्सव से लौटकर श्री दीनानाथ जी ने मुझे बताया कि बाबू जी प्रसन्न थे और कह रहे थे कि मैं कांग्रेसी हूँ किन्तु ज्वलन्त जी अमेठी में श्री राजमोहन जी का साथ देकर उचित कार्य कर रहे हैं। बाबू जी ने मेरे लिए खादी की नई धोती और खादी का गमछा भी भेजा और कहा कि ज्वलंत जी के लिए मंगाया था, वे उत्सव में नहीं आ पाये तो क्या हुआ उन्हें ये भेंट दे आइए। बाबूजी का मेरे प्रति ऐसा अहेतुक प्रेम था। उनकी ससुराल मोतीहारी थी जो मेरा गृह जनपद है। बाबू जी अक्सर मोतीहारी के आर्यसमाज की प्रगति के बारे में पूछते। उनकी ससुराल

के लोग भी आर्यसमाजी थे और मोतीहारी के आर्यसमाज के विकास में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था। बाबूजी के पूरे सामाजिक जीवन में उन्हें अपनी सहधर्मिणी का योगदान उल्लेखनीय रहा। माता जी के आर्यत्वपूर्ण जीवन, सरल व्यवहार और निश्चल प्रेम के हम सभी प्रशंसक हैं। बाबू जी का मेरे प्रति प्रेम का एक कारण यह भी था कि प्रथम बार जब मैं टाण्डा के उत्सव में गया और वहाँ से चलते समय बाबू जी से हँसी खुशी बातचीत करते हुए मैंने विदा ली। बाद में बाबू जी को स्मरण आया कि 'शास्त्री जी (अर्थात मुझे) को दक्षिणा तो दी ही नहीं।' तब मेरे प्रति उनकी प्रीति बढ़ गई और बाद में उन्होंने दक्षिणा तो दी ही और साथ ही यह वचन भी लिया कि जब तक मैं जिन्दा हूँ आप प्रति वर्ष टाण्डा आइए अपरिहार्य स्थिति को छोड़कर। वे मुझसे टाण्डा आर्यसमाज की शताब्दी की प्रायः चर्चा करते और कहते कि शताब्दी के लिए बहुत काम करना है। आपको मुझे सहयोग देना होगा। बाबू जी शताब्दी के पूर्व ही चले गये। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि बाबू जी के सभी पुत्र, सभी पुत्रियाँ, पौत्र, पौत्रियाँ, पूरा परिवार दृढ़ आर्यसमाजी है और उनके चरणचिह्नों पर चलने वाला है। बाबू जी के निधन के बाद उनके सुयोग्य पुत्र आनन्द बाबू ने अपने मजबूत कन्धे पर टाण्डा आर्यसमाज का नेतृत्व और आर्यकन्या पाठशाला का संचालनभार संभाला है। आनन्द बाबू के अन्दर भी आर्यसमाज के प्रति अनन्य-प्रेम अपने स्वर्गीय पिता के समान ही कूट-कूट कर भरा है। बाबू जी को भी इनके ऊपर अनन्य विश्वास था और वे प्रायः कहा करते कि मुझे इस बात का जीवन की अन्तिम घड़ी में सन्तोष और विश्वास है कि मेरे न रहने पर भी आनन्द जी सारा कार्य संभाल लेंगे और मुझसे भी ज्यादा योग्यता से कार्य करेंगे। आज के युग में एक आर्य पिता के परिवार में पूर्ण आर्यत्व और उसके बाद भी आर्यत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का दृढ़ विश्वास एक सच्चे आर्य के सार्थक जीवन का इससे बढ़कर उदाहरण क्या होगा?

टाण्डा आर्यसमाज की शताब्दी की सम्यक् सफलता से स्वर्गीय बाबू जी की दिवंगत आत्मा को प्रसन्नता होगी। बाबू जी के परिवार के सभी सदस्यों तथा टाण्डा आर्य समाज के सभी अधिकारियों, सदस्यों एवं विशेषकर विद्वान् मन्त्री मेरे मित्र श्री विज्ञमित्र शास्त्री के हृदय में बाबू जी की अशेष स्मृति और आर्य समाज के प्रति तड़प और समर्पण बना रहे प्रभु से यही प्रार्थना है।

स्व. श्री मिश्रीलाल जी

पद्मश्री डा. कपिलदेव द्विवेदी
ज्ञानपुर, वाराणसी

आदरणीय श्री मिश्री लालजी एक महान व्यक्ति थे। उनका सारा जीवन आर्यसमाज और देश की सेवा में व्यतीत हुआ। वे स्वार्थ-त्याग की मूर्ति थे। कर्मठता उनके रग-रग में भरी हुई थी। वे एक स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी थे। आजीवन राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत-प्रोत रहे और जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसे उन्होंने राष्ट्रभक्त बनाया। मुझ पर उनकी विशेष कृपा थी। उनके निधन से मुझे व्यक्तिगत रूप से क्षति पहुँची है।

आर्य समाज के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया हुआ था। उन्होंने अपनी संस्थाओं में आर्यत्व की भावना भर दी थी। इसी का परिणाम था कि आर्यकन्या इण्टर कालेज टाण्डा में चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, सभी वालिकायें उन्हें अपने पिता के तुल्य मान्य समझती थीं। टाण्डा नगर का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपना पथप्रदर्शक मानता था। उनका ही प्रताप था कि टाण्डा नगर में हिन्दू मुसलमान भाई-भाई के तुल्य प्रेमभाव रखते थे।

उनका त्याग और तपस्यामय जीवन सबके लिए अनुकरणीय था। उनके निधन से आर्यजगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे यही प्रार्थना है। परमात्मा आशीर्वाद दे कि उनके पुत्र उनके पद-चिह्नों पर चलते हुए आर्यसमाज और देशसेवा का व्रत लें।

पूज्य बाबूजी को सादर समर्पित

— श्रीमती राजकुमारी गुप्ता

हे तपः पूत, हे वेददूत, हे यज्ञज्ञान ज्योतित् प्रकाश, जिन्हें आपने हाथ में कलम थमा कर लिखना सिखाया, उंगली थाम कर चलना सिखाया उस योग्य कहाँ कि हिमालय जैसे आपके विराट व्यक्तित्व का गौरव गान कर सके .....। लेकिन गर्व है इस बात का कि मैं अकिंचन विराट व्यक्तित्व का एक अणु हूँ ऐसा अणु जिसे आपकी सबसे छोटी पुत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ।

'मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट
मैं ऋचापूत की पुत्री हूँ'

अपने ८ दशकों की अधिक आयु में आपने इस धरित्री को धन्य बना दिया, नहीं तो न जाने कितने लोग इस धरा पर अवतीर्ण होते हैं, असमय काल कवलित हो जाते हैं, और संसार को कुछ दिए बिना ही तिरोहित हो जाते हैं लेकिन हे पूज्य! पिता तुमने संसार से जितना लिया उतना सब्याज वापस कर दिया। महाकाल की सत्ता के पक्षधर! मेरे प्रिय बाबू जी! यह अकिंचन लेख अपकी सेवा में सादर समर्पित है।

मैं अपने पिता की सबसे छोटी पुत्री होने के कारण उनके सानिध्य में अधिक रही अतः इनकी एक-एक क्रिया एक-एक बात मेरे अनुप्रेरणा का कारण बनी। मानव जीवन में शरीर मन और बुद्धि का अपूर्व संगम है। उसका आदर्श उन्होंने स्थापित किया जीवन के प्रारंभिक सफर में उन्हें साधना का पोषक आहार उपलब्ध था संस्कारिता के बीज मूल रूप में विद्यमान थे, अतः उन्होंने संसार में व्याप्त पाखण्ड अन्ध विश्वास, मिथ्याचार को मिटा कर टाण्डा समाज को आध्यात्मिक चेतना देने का व्रत कुछ इस प्रकार धारण किया —

मैं सविता का स्वर्णिम प्रकाश
प्राणों में बहता हुआ श्वास
जन जन, अणु अणु में विद्यमान
चेतनता ही मेरा प्रमाण

उनकी यह चेतना, चेतनता की प्रेरणा किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं सम्पूर्ण समाज के लिए थी यहाँ तक कि मुस्लिम भाई उनका आदर कुछ और ही अधिक करते थे, इसका कारण था तुलसी जैसी परहिताय की भावना, सूर सी भावविमलता और कबीर सा खरापन जो यथार्थ की पथरीली जमीन सा कठोर और चुटीला था वे वही करते थे जो सही था चाहे वह किसी को मन भाता था चाहे नहीं और इसके लिए उन्होंने अपने परिवार को भी कोई महत्व नहीं दिया। कभी कभी उनकी जिद्द कड़वी भी लगती लेकिन उस जिद्द का सुपरिणाम देखकर राहत महसूस होती थी।

पूज्य पिताश्री ने हमेशा दूसरों की भलाई में अपनी भलाई का एहसास किया ये अलग बात है कि कलंक लगाने में लोगों ने महापुरूषों को भी नहीं छोड़ा तो मेरे पिता तो एक समाज सेवी इन्सान थे, सुधार में तो कटुता का विषपान करना ही पड़ता है एक कवि के शब्दों में —

'सुधा बीज बोने से पहले
कालकूट पीना होगा।
पहिन मौत का मुकुट, विश्व हित
मानव को जीना होगा।'

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, प्रधान, शुभेच्छु होने के साथ साथ ऋषि दयानन्द की एक प्रेरणा नारी शिक्षा को उन्होंने मूर्त रूप दिया आर्य कन्या इण्टरमीडियट कालेज की स्थापना करके जिसमें टाण्डा जैसे पिछडी आवादी वाले क्षेत्र की आर्य ललनाओं को सुशिक्षित होने का अवसर मिला।

आर्थिक सम्पन्नता से ओतप्रोत होते हुए भी उन्हें अर्थलोभ छू तक न गया था, उनके पुत्र उनका व्यापार चलाते रहे, दक्षिणभारत के सेलम की फर्म में उन्होंने झांक कर भी नहीं देखा, क्योंकि उनको अपनी जन्मस्थली कर्मस्थली टाण्डा से अगाध लगाव था उसे छोड़ कर वह जाना पंसद नहीं करते थे। कभी-कभी अस्वस्थतावश कलकत्ता जाना पड़ता था तो अकुलाए रहते थे कि कब टाण्डा जाना होगा। आंडम्बरहीन, सरल उच्च जीवन के वे हिमायती थे, मुझे याद है कि एक स्वेटर मेरे छोटे भ्राता ने इंग्लैड से उन्हें भेजा था उसे उन्होंने कभी नहीं पहना और कहा कि मैं फिरंगियों की धरती से आयी कोई विदेशी चीज धारण नहीं करूंगा क्योंकि मैं स्वदेशी आन्दोलन में विदेशी का बहिष्कार करा चुका हूँ। उन्होंने वह स्वेटर नहीं पहनी तो नहीं पहनी ऐसे कट्टर थे वे देशभक्त।

कभी कभी अत्यधिक सादगी का पाठ जब वह पढ़ाते तो मैं छोटी होने के नाते कुछ धृष्टता भी कर बैठती और कुछ ज्यादा जबानदराजी भी कर बैठती थी तो मुझे खूब डांट भी पड़ती थी किन्तु अन्य भाईबहन की अपेक्षा मैं उनसे खुलकर करीब थी और खुलकर बातचीत भी कर लेती थी, वे मेरे बारे में खूब चिन्ता भी करते थे और मेरी नासमझियों पर बुरा भी नहीं मानते थे मुझे भी इतना लगाव था उनसे कि मैं अधिक से अधिक टाण्डा में रहूँ। उन्होंने पुत्र और पुत्रियों में कभी भेदभाव नहीं किया और यही कारण था कि हम सभी में आत्मबल की प्रधानता थी।

उनकी एक मित्र मण्डली थी जिसमें अधिकांश प्रबुद्ध और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, अनेक संस्मरण उनसे सुनने को मिलते थे जो जीवन के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देते थे। इनमें से अधिकांश लोग अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने कार्य किया। दूसरों के काम के लिए हमेशा तत्पर रहे यह अलग बात है कि जो काम उनको सटीक नहीं लगा वह उन्होंने न किया हो लेकिन हमेशा लोग उन्हें घेरे रहते थे। शारीरिक अक्षमता के बावजूद भी वे अपनी दैनिक क्रियाएँ स्वयं करते कभी अक्षमता से लड़खड़ा जाते तो हम लोग भले ही सहारा दे दें किन्तु वे आत्मबल के पुतले थे वे गायत्री संजीवनी को पान करने वाले, आध्यात्मिक नशे में रह कर संसार को महाचेतना से एकाकार कराने का स्वप्न देखते थे।

उनकी इसी भावना के कारण परमपिता ने उनकी हर आकांक्षा पूर्ण की एक कामना उनकी थी आर्य समाज की शताब्दी को शान से सम्पन्न कराने की वही वे नहीं देख पाये किन्तु ईश्वर ने उन्हें सुयोग्य संतानें दी हैं, वे इस लक्ष्य को पूर्ण करने में प्राणपण से कटिबद्ध है। वे अपने भरे पूरे परिवार से संतुष्ट थे लेकिन उस महाप्राण को टाण्डा से विशेष लगाव था जिसको छोड़ना उनकी आत्मा को कभी सह्य नहीं था। अपनी मृत्यु के १० दिन पहले ही डाक्टरों के लाख मना करने पर परिवार वालों से बरजोरी वे टाण्डा वापस चले आये थे शायद उन्हें अपने महाप्रयाण का आभास मिल गया हो।

टाण्डा मोह ने उन्हें अपनी सन्तानों से अंतिम क्षणों में काफी दूर कर दिया परिणामतः उन्हें अपनी चिरनिद्रा में लीन होने के बावजूद भी हम लोगों की प्रतीक्षा दो ढाई दिन करनी पड़ी जिसका हम सभी को बहुत दुख है किन्तु

महाप्राण व्यक्ति किसी के रोके रूके हैं वे तो धरित्री के कल्याण हेतु इस ग्रह की यात्रा करने एक विशिष्ट समय पर आते हैं और अपनी अनवरत् यात्रा में अगणित सखा सहचर बना कर उन्हें पुरुषार्थ सम्पन्न कराकर सतयुगी संभवनाएँ साकार करते हुए आगे चल देते हैं। माँ, मेरी प्रिय मां को भी उनके महाप्रयाण का आभास न हो पाया क्योंकि अन्तिम क्षणों तक वे बोलते रहे थे। . . . .।

अस्फुट वाणी मानों कह रही हो माँ से –

"न एकाकी कभी तुम थीं, न एकाकी अभी हो।" और यद्यपि उनका पार्थिव शरीर हमें अकेला छोड़ गया किन्तु क्या यह मान सकने की बात है कि वे हमें छोड़ गए नहीं उनकी वाणी मानो कह रही है –

नहीं जो बात सबसे कंठ कह पाया कभी जो
परावाणी हमारी बात वह तुमसे कहेगी!

हे पूज्य पिता तुम्हारी परावाणी हम सब सुन सकें ऐसा आशीर्वचन दो –

तुम्हारी यह वसीयत

पड़े न रह जायें मेरे ये ब्रह्म बीज बिन वोये
मैं इन्हें कलेजे में रखा, जीवन भर हैं टोये
मेरे हो तो इन बीजों को तुम बो देना
कुछ तो मेरा भार घटाने को तुम भी ढो लेना
कहीं न ऐसा हो पछताऊँ क्योंकर कमल खिलाया
मैंने जीवन भर त्याग किया तप में सतत् गलाया

यह वसीयत आपकी सुपोषित राजकुमारी को शिरोधार्य है और वह गम्भीर संदेश भी –

साहस है तो मेरे पद चिन्हों पर चलकर देखो
जो जूझ सकें मझधारों से, वे साथ चलें।

बाबूजी - मेरे सर्वस्व

– रामबहोर मौर्य

पूज्य बाबूजी का मेरे पिता जी से अच्छा खासा परिचय था। मेरे बड़े भाई श्री रामकिशोर जी बाबू जी की दूकान में मुनीम थे। मेरे भाई साहब पर हम परिवार के लोगों कां विश्वास था, बाबू जी उन्हें बहुत मानते थे। जुलाई सन् १९५३ में जब मैं टाण्डा पढ़ने आया तो बाबू जी के मकान में जहां मेरे भाई साहब रहते थे रहने लगा और वहीं से मैं उनके सन्निकट आता गया। वर्ष १९५७ में इण्टरमीडिएट पास करने के बाद तुरन्त बाबू जी ने मेरी नियुक्ति अपने विद्यालय आर्यकन्या इण्टर कालेज टाण्डा में पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कर लिया। मैं बड़ी लगन एवं परिश्रम से विद्यालय का कार्य करता रहा। मेरे कार्यों से प्रसन्न होकर बाबू जी ने मेरी पदोन्नति प्रधान लिपिक पद पर वर्ष १६६४ में कर दिया। तब से मैं प्रधान लिपिक पद पर कार्यरत हूँ। बाबू जी की प्रेरणा से मैं शुरू से ही आर्यसमाज जाया करता था। मेरे कार्यों एवं लगन को देखकर मुझे आर्यसमाज टाण्डा का सदस्य बना लिया गया। मै टाण्डा आर्यसमाज में पुस्तकालयअध्यक्ष एवं लेखा परीक्षक के पद पर भी रह चुका हूं। विद्यालय में कार्याधिक्य के कारण मैं आर्यसमाज में कम समय दे पाता था इसलिए पदाधिकारी पद से हट गया। सदस्य अव भी हूं। बाबू जी की कृपा मेरे ऊपर विशेष थी वे मेरे ऊपर पूरा विश्वास करते थे तथा मुझे उनसे हमेशा पिता जैसा प्यार मिला। मेरा सौभाग्य है कि मैं ही ऐसा था जो उनके जीवन के अंतिम क्षण में भी उनके पास था।

पूज्य बावूजी एक सच्चे राष्ट्रप्रेमी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, दृढ़ प्रतिज्ञ, न्यायप्रिय सच्चे एवं ईमानदार व्यक्ति थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' उनके जीवन का ध्येय था वे हमेशा खद्दर की धोती तथा कुर्ता पहनते थे। वे इस विद्यालय आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा जो उनके स्वर्गवासी होने पर अव मिश्रीलाल आर्यकन्या इन्टर कालेज टाण्डा के नाम से जाना जा रहा है, के संस्थापक सदस्य तथा आजीवन निर्विरोध प्रधान रहे।

बाबूजी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ बड़ा सहयोग तथा सहृदयता का व्यवहार करते थे। विद्यालयी कार्यों में विद्यालय की तत्कालीन प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर जी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करके सेवा निवृत्त हुई हैं, बाबूजी का बड़ा सहयोग करती थी। दोनों अधिकारियों के सहयोग से विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करता रहा और फैजाबाद मंडल में अग्रणी रहा। बाबूजी के हृदय में किसी प्रकार का जातीय या धार्मिक भेदभाव नहीं था। टाण्डा के हिन्दू मुसलमान सिक्ख सभी उन्हें समान रूप से मानते थे, वे सर्वप्रिय व्यक्ति थे। वे सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझते थे। सभी उन पर पूरा विश्वास एवं भरोसा रखते थे। आज बाबू जी इस संसार में नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा किये गये कार्य एवं उनकी स्थापित की गई संस्था उनको बराबर स्मरण कराती रहेगी वे आज भी अपने कार्यों से टाण्डा में अमर हैं। मेरी प्रार्थना है कि वे जहां भी हों परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

माता पिता ने मुझे जन्म दिया परन्तु बाबू जी ने जीवन प्रदान किया। उनके द्वारा सौंपे गये उत्तरदायित्व के प्रति मैं उनकी अनुपस्थिति में उतना ही जागरूक हूँ और अपने जीवन पर्यन्त रहूंगा।

— प्रधान लिपिक
मिश्रीलाल आर्यकन्या इन्टर कालेज,
टाण्डा, फैजाबाद

मेरे पिता

— राजेन्द्र कुमार आर्य, सालेम

पूज्य पिताजी के दिवंगत होने का समाचार २८ दिसम्बर को सालेम में मिला। विश्वास नहीं हो रहा था कि अब पिताजी नहीं रहे। दुःखद समाचार सुनकर शीघ्रातिशीघ्र टाण्डा पहुंचने के उपाय में लग गया किन्तु दूरी के कारण उनकी अन्तेष्टि में नहीं पहुंच सका जिसका मुझे तथा मेरे परिवार को बहुत दुःख है।

आर्यसमाज टाण्डा के ९९ वां वार्षिकोत्सव पर मैं टाण्डा गया था उस समय भी वह पूर्ण सक्रिय थे तथा ऐसा कुछ नहीं लगता था कि उनका अन्त इतना निकट है हांलाकि उनके आचार विचार में निराशा के लक्षण दिखलाई पड़ रहे थे।

बाबूजी ने अपना संपूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा में लगाया शिक्षा से उन्हें बहुत प्रेम था। आर्यकन्या इण्टर कॉलेज की स्थापना उन्होंने किया और अन्त तक उसके प्रबन्धक रहे। सामाजिक कार्यों एवं जनसेवा कार्यों में उनकी रूचि थी। टाण्डा नगर में उनके कृत्यों को टाण्डावासी कभी भूल नहीं सकते। स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी होने के नाते अधिक से अधिक लोगों को आर्यसमाजी बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहे और इस कार्य में उन्हें आशातीत सफलता मिली थी। आर्यसमाज को ऐसे कुशल निष्ठावान, कार्यकर्त्ता, नेता पर गर्व है।

आप स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी व देश के सजग प्रहरी थे। टाण्डा में साम्प्रदायिक एकता के सूत्रधार थे और वहाँ की जनता उनसे सश्रद्ध प्रेम करती थी और वह भी सबको पुत्र तुल्य मानते थे। उनमें न्याय सच्चाई जैसे गुण कूट कूट कर भरे थे और उसका पालन वह दृढ़ता से करते थे। आत्मसंयम और दृढ़ प्रतिज्ञा उनके जीवन के मूल आधार थे। वह हमेशा हम लोगो को दैनिक धर्म के अनुसार अपने जीवन को चलाने की उच्चशिक्षा देते थे और पूज्य पिता जी के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि यही होगी कि हम सब परिवार के लोग उनके बताये मार्ग का अनुसरण करते रहें।

पूज्य मामाजी

— मनोहर लाल वर्मा

पूज्य मामा जी स्व. श्री मिश्री लाल जी आर्य के दर्शन पहली बार गोण्डा जेल में जब मेरी आयु १०-११ साल की थी, हुआ था। उनको असहयोग आन्दोलन में सजा हुई थी वह फैजाबाद जेल से बदलकर गोण्डा जेल आ गये थे। लगभग १५ वर्ष की आयु में मैं भी नमक कानून तोड़ने के कारण जेल गया था और मैं भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हो गया।

मामा ने मेरी शादी अपनी भांजी के साथ कर दिया जिससे मुझे उनके विशेष निकट होने के अवसर मिलते रहे। मामा कितने सादा थे वह उनके वेष भूषा से ही अनुमान होता था। बहुत सस्ते और मोटे खादी का इस्तेमाल करते थे ओर मैं वहुत ही बढ़ियाखादी पहनता हूँ। मामा मुझे सदैव खादी मसलिन की ही धोती देते थे। कितना हर बात का ध्यान रखते थे। भोजन बहुत सादा और शुद्धता का ध्यान रखते थे। गौ दुग्ध दही घृत ही का इस्तेमाल करते थे अतिथि सत्कार में जो प्रेम वह सबके साथ करते थे। इसके अलावा उनका जीनन सेवाभाव से परिपूर्ण था। लेखनी द्वारा प्रदर्शित करना असम्भव है।

भाव-चित्र-स्मृति

— शुभ्रा उपाध्याय

व्यक्ति मानस कब अपने अंक में जाने-अनजाने, परिचित अपरिचित चित्रों को अंकित कर लेता है कहना कठिन है। उन चित्रों में तो कुछ उसकी सघन स्मृतियों की धरोहर होते हैं . . . . और कुछ साहचर्य-जन्य स्नेह की अमोल वसीयत!! किन्तु इन सबसे भिन्न भी एक अनोखी छबि मानस पटल पर अंकित हो जाती है जो व्यक्त होकर भी अव्यक्त . . . . कथनीय होकर भी अकथनीय और चिर-परिचित होते हुए भी नितांन्त अपरिचित होती हे। हमारे मानस पृष्ठों में चित्रित अगणित चित्रों में राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर और दयानन्द आदि कुछ चित्र इतने स्पष्ट होते हैं जो अपेक्षाकृत ज्यादा आत्मीय, ज्यादा परिचित और सिर्फ अपने लगने लगते हैं — अपरिचित होते हुए भी!!

महनीय चरित्रों में व्यक्तिगत हिस्सेदारी उस चरित्र विशेष की महत्ता का द्योतक है। जिस तरह पूर्णाहुति के पश्चात् भी हवन-सामग्री की पवित्र-पावन सुगन्धि से सम्पूर्ण वातावरण सुवासित होता रहता है . . . . . मुरझा कर झर गई गुलाब की पखुँडियाँ सोंधी मिट्टी में मिलकर और भी गमकते सुवास को बिखेरा करती हैं . . . . उसी प्रकार महान् आत्मा अपने शरीर का परित्याग करके भी व्यक्ति मानस को सदा-सर्वदा सुवासित करता रहता है। बिल्कुल ब्रह्म की अव्यक्त . . . . अप्रत्यक्ष किन्तु अभिव्यक्त सत्ता की तरह !!

उस दिन पहली बार मैंने उस महान् आत्मा का लौकिक नाम सुना था . . . . आत्मा में मिठास घोल देने वाला . . . . श्री मिश्रीलाल जी। बिल्कुल साधारण मानव चोला में लिपटा यह नाम मेरी सोच की परिधि में तब आया . . . मेरे विचारों का अंग तब बना जब मैं आदरणीय आनन्दजी द्वारा संपादित उनकी 'जीवन-ज्योति' पांडुलिपि को पढ़ा।

वह मानवीय चरित्र 'मैं' से 'हम' की यात्रा थी! .. गृह से विश्व का पावन प्रयाण था। . . . . मानव-मानव को एक स्नेह-सूत्र में बाँध देने के प्रयास में समर्पित एक पूजनीय व्यक्तित्व! और इन्हीं अर्थों में वह महर्षि दयानन्द

के सपनों "बसुधैव कुटुम्बकम्" और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के नींव की ईंट था!

ऐसा व्यक्तित्व जिसमें सबकुछ साधारण का होकर भी कुछ असाधारण था! जिसमें सबकुछ मानवीय होकर भी कुछ अलग-ऊँचा था! क्योंकि यह व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर तिल-तिल बलि हो जाने को . . . . आत्मोत्सर्ग करने को हमेशा उत्सुक था। वही महर्षि दयानन्द जिन्होंने अपनी जीवन ज्योति से न जाने कितने लोगों की जीवन शिखा को आर्यत्व के रंग में रंग कर प्रदीप्त किया। जिन्होंने ब्रह्मा से लेकर जैमिनि ऋषि पर्यन्त विहित और अविहित निर्देशों . . . . वेदानुकूल आचरणों की भाव भूमि पर अवस्थित कर्त्तव्यों का पथ-प्रदर्शन कर अगणित जन मानस को आलोकित किया . . . . उनका जीवन संवारा और तदुपरांत एक 'महान आत्मा' के गौरव भूषण से महिमामंडित होने का दुर्लभ सुअवसर प्रदान किया।

ऐसा मानव जो अपनी आत्मा का देवत्व से ऋंगार करता है . . . और परमात्मा की मानवता से अभ्यर्थना!! सचमुच! स्तुत्य है! प्रातः स्मरणीय है!

स्वाभाविक इच्छा हुई दर्शन की . . . . किन्तु इसे अपना दुर्भाग्य मान . . . . नियति प्रदत्त अभिशाप समझ स्वीकारना पड़ा क्योंकि इस दिव्य ज्योति का अवसान हो चुका था . . वह पुनीत अनल भास्कर की रश्मियों में एकाकार हो चुका था! व्याकुल मन से मैने उन्हें कागज के पन्नों में खोजा . . . लोगों की स्मृतियों में ढूँढ़ा . . . इन सभी प्रक्रियाओं के मध्य मेरे मानस पर उनका एक भाव चित्र उभरा . . . पूज्य . . . . श्रद्धेय . . . . जैसे कि :-

"हवन-अग्नि बुझ चुकी, गन्ध से, वायु अभी पर माती हैं ;
भीनी-भीनी महक प्राण प्राण में, मादकता पहुँचाती है।"

मेरा मन इस सुवासित सुमन के समक्ष नत हुआ। मेरा हृदय अपने अंक में इस भावना का वरण कर कृतार्थ हुआ। मैं अपने इस अपरिचित-परिचित चित्र का प्रत्यक्ष दर्शन न कर पाने की असमर्थता को, श्रद्धा-आभिभूत मन का भावार्पण करती हूँ। आर्य जगत की इस अपूरणीय क्षति और रिक्तता को इन शब्दों में महसूस कर —

'मनुजता का नया नेता उठा है,
जगत से ज्योति का जेता उठा है ॥

मेरे पूज्य दादाजी

– अमिताभ आर्य

आर्यसमाज टाण्डा के प्रधान जी थे। मैंने उनमें एक सफल दादा जी का रूप देखा था। वह मुझे बहुत प्यार करते थे और अगर मैं किसी संकट में होता तो वह मेरे संकट को दूर करने में मेरी अपार सहायता करते थे।

मैं छुट्टियाँ बिताने दादाजी के पास जाता था वे मुझे रोज प्रातःकाल अपने साथ बगीचा ले जाते और हर रविवार को आर्यसमाज भी ले जाते थे। वे हमेशा ध्यान रखते कि मुझे मेरी पंसद का खाना मिले और मेरे लिए सर्वदा बगीचे से फल और सब्जियाँ मँगवाते थे।

दादाजी कलकत्ता कई बार आये थे और उन्होंने अपने अन्तिम दिनों में ज्यादा समय हम लोगों के साथ बिताया था। दादाजी रोजाना शाम को विक्टोरिया टहलने जाते थे और मुझे जरुर ले जाते थे और वे मेरा हाथ पकड़ कर चलते थे। यह सब बातें मुझे याद आती हैं कि मेरे दादाजी कितने प्यारे थे। सोचता हूँ अब मुझे कौन प्यार करेगा? दादाजी जब अस्वस्थ रहने के कारण कलकत्ता अपना इलाज कराने आते थे तो डाक्टर को दिखलाने के बाद तुरन्त ही वापस जाने की बात करने लगते थे क्योंकि उन्हें टाण्डा और अपने महा-विद्यालय से बहुत प्रेम था और सदैव उसके बारे में चिन्ता करते रहते थे।

दादा जी का जीवनान्त टाण्डा में ही हुआ। मेरे लिए यह बहुत दुख की बात थी कि मैं उस समय उनके पास नहीं था। मगर हम वहाँ जल्दी ही पहुँच गये। मैं वास्तव में ईश्वर का बहुत आभारी हूँ कि उसने मुझे अपने दादा जी के मृत शरीर को उठाने का मौका दिया और उनके चिता पर आहुति देने का अवसर दिया। मैं उनकी मृत्यु से बहुत दुःखी हुआ था मगर मैंने सर्वदा उनकी बात याद रखी है कि आदमी को सदैव अपना हृदय मजबूत रखना चाहिये और कभी भी आँसू नहीं बहाना चाहिये।

पूज्य दादाजी की पावन स्मृतियाँ अब हमें प्रेरणा और उत्साह देने के लिए अवशिष्ट हैं। उनकी अनेकानेक बातें मुझे स्मरण हैं जो रह-रह कर मुझे भावविह्वल कर देती हैं किन्तु अब तो वह जीवन ज्योति जा चुकी है और उसको संजोए रखना मात्र ही हमारे वश में है भगवान से प्रार्थना है कि वे हमें अपने श्रद्धेय दादाजी के जीवनदर्शों पर चलने की शक्ति प्रदान करें जिससे हम सब भाई-बहिन अपने प्यारे दादाजी के मनोनुकूल आदर्श आर्य बन सकें। दादाजी के प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

श्रेष्ठिप्रवर, कर्तव्यनिष्ठ, सेवाव्रती

श्री मिश्रीलाल जी आर्य

की सेवा में

* अभिनन्दन-पत्र *

आर्यवर,

आज की इस पावन पुण्य आनन्दमयी वेला में आपको अपने मध्य पाकर हम धन्य हो रहे हैं। आपका जीवन, आपकी कर्तव्यनिष्ठा, समाज-सेवा, महर्षि के प्रति आपकी भक्ति, आपकी उदारता, सूझ-बूझ, हमारा संबल है, हमारा मार्ग दर्शक है।

महर्षि भक्त,

आप ऋषि मुनियों की शिक्षा और संस्कृति भक्त हैं। महर्षि स्वामी दयानन्दजी के सिद्धान्त और आर्यसमाज का मिशन आपके जीवन का लक्ष्य रहे हैं। आर्यसमाज का यह नियम : "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये" आपके जीवन का मार्ग दर्शक रहा है। आर्यसमाज के प्रचार में आपका जीवन सेवामय रहा है।

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी,

स्वतन्त्रता संग्राम के समय आपने अपने व्यवसाय, सम्पत्ति आदि की चिन्ता न करके देश का साथ दिया, पर्याप्त समय तक कारागार का कष्ट झेला। आपकी सरलता, सादगी, स्वदेशी खादी व्रत आदर्शमय है।

शिक्षा प्रेमी,

आपका शिक्षा प्रेम सर्व विदित है। आप "आर्य कन्या महाविद्यालय" टाण्डा (फैजाबाद) के संस्थापक ही नहीं, कुशल संचालक भी हैं। आपके कार्य, आपके व्यवहार, आपकी संचालन क्षमता, सर्वत्र आपकी योग्यता प्रमाणित होती रहती है। हिन्दू, मुसलमान सभी बिना भेदभाव के आपकी उदारता और क्षमता के प्रशंसक हैं।

आदर्श चरित्र,

आप आदर्श हैं, आपका चरित्र आदर्श है, आपकी कट्टर नियमानुवर्तिता सर्वथा आदर्शमय है। आपका निर्लोभ व्यक्तित्व स्वार्थ से सदा ऊपर रहता है।

आप हमारे सम्मान हैं, आप हमारे आदर्श हैं। परम प्रभु जगदीश्वर अपकी स्वस्थ, प्रसन्न एवं चिरायु करें, हम सबका सादर आभिन्दन स्वीकार करें।

रविवार, माघ शुक्ला
१४, २०३८ वि.

हम हैं
आपके आदर्श जीवन मुग्ध

आर्यसमाज कलकत्ता
के संदस्य गण

स्व. मिश्रीलालजी आर्य

श्री मिश्रीलालजी, धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी के साथ
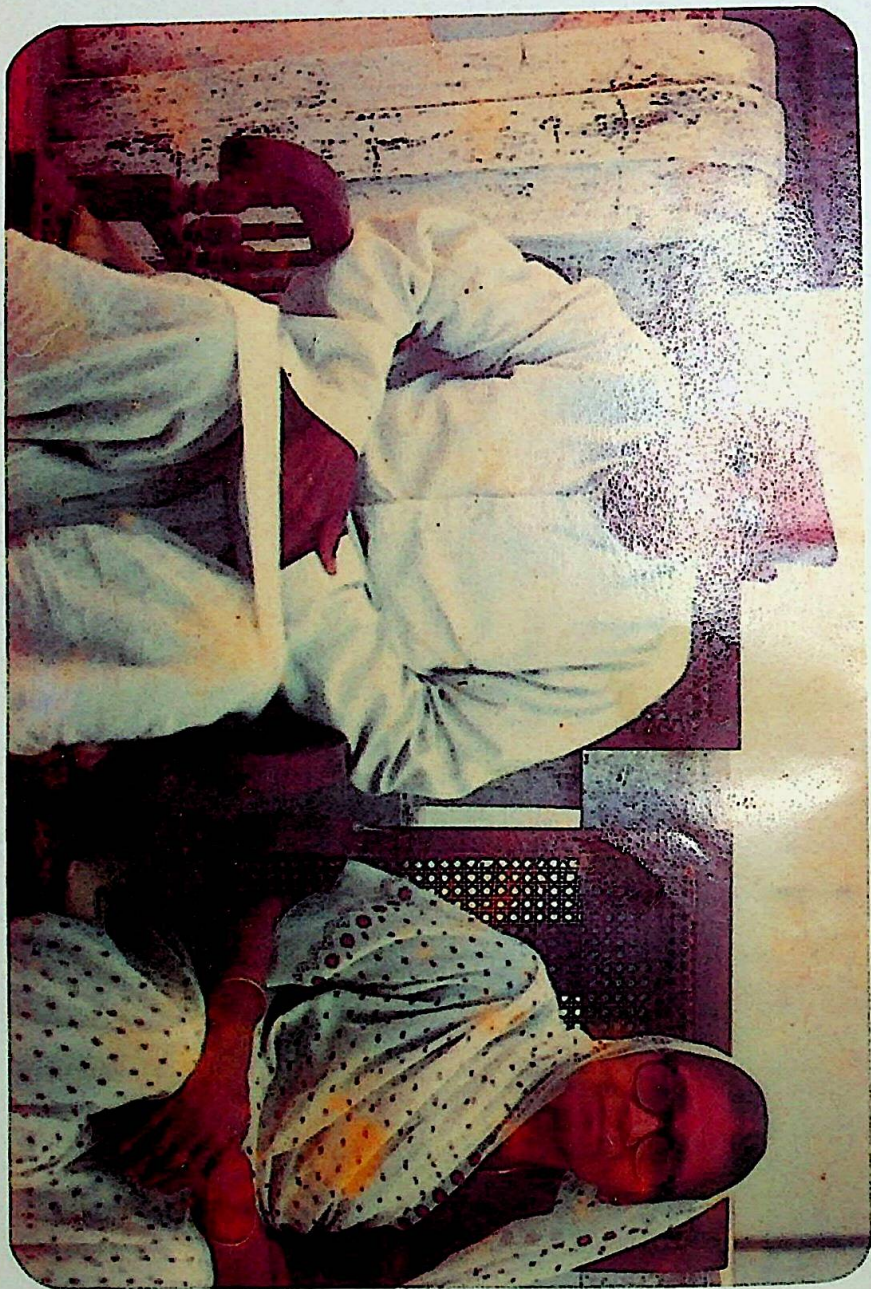
प्रधानजी — प्रसन्नमुद्रा में

ज्येष्ठ भ्राता स्व. जियालालजी आर्य

ज्येष्ठ भ्राता स्व. जियालालजी आर्य
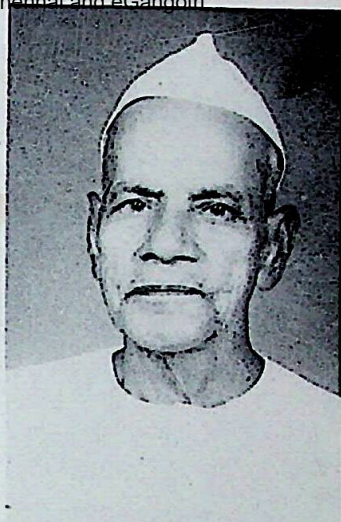
प्रधानजी - प्रसन्नमुद्रा में

बहन — शान्तिदेवीजी (बलिया)

ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्दकुमारजी आर्य, बहुरानी मीना आर्य पौत्री चि. ममता, पौत्र चि. [illegible] एवं चि. अमिताभ
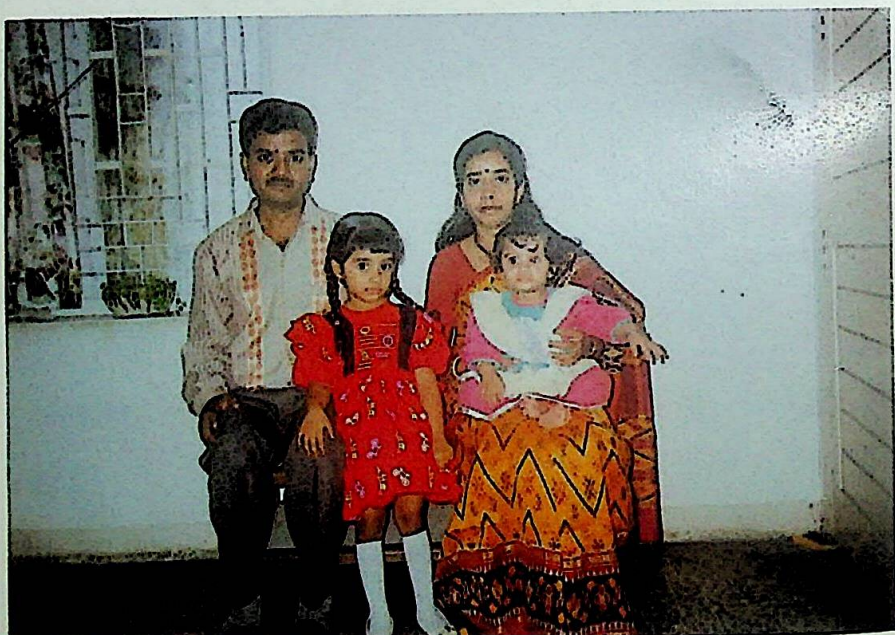
पौत्री चि. मीता (पुत्री श्री आनन्द आर्य), दामाद चि. जयेन्द्र जायसवाल (वड़ौदा) ओर अपने दोनों पुत्रियो के साथ

श्री मिश्रीलालजी एवं पत्नी अपनी समधिन श्रीमती रामादेवी एवं समधी श्री पूरनबाबू (पटना) के साथ

बाबूजी की नतनियां (बेटी चि. मीता), चि. आराधना (खुशबू) एवं चि. करिश्मा (मोहिनी)
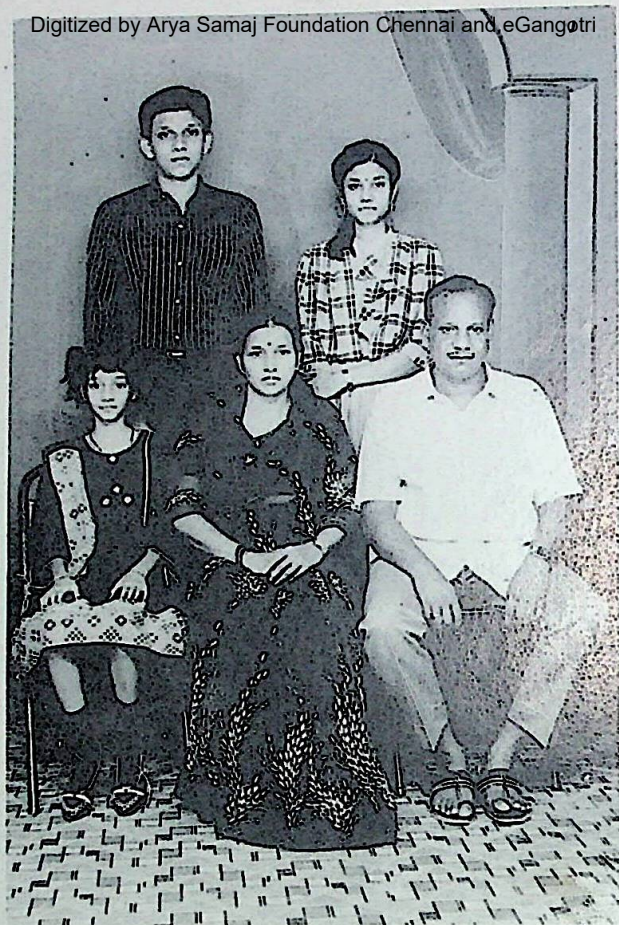
द्वितीय पुत्र श्री राजेन्द्रकुमारजी आर्य, बहुरानी नीला आर्य, पौत्री चि. एकता, पौत्र चि. सतीश एवं पौत्री चि. संगीता

श्री मिश्रीलाल आर्य को कलकत्ता आर्य समाज में सम्मानित करते हुए श्री सीतारामजी आर्य

तृतीय पुत्र डा. नरेन्द्रकुमार, बहूरानी शमा एवं पौत्रियां — चि. प्रियंका, चि. नवीनता एवं चि. श्रद्धा

कनिष्ठ पुत्री — चि. राजकुमारी गुप्ता (जौनपुर)
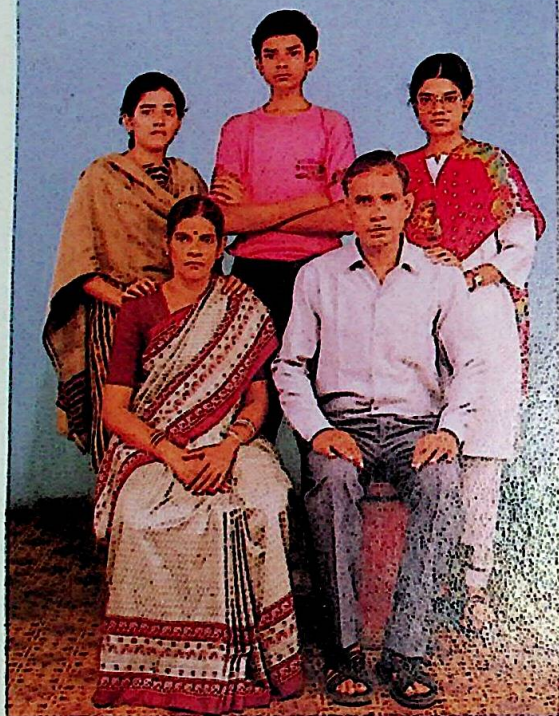
पुत्री चि. विद्योत्तमा देवी, दामाद श्री राजेन्द्रप्रसाद, नतनी चि. रश्मी एवं चि. सोनी एवं नाती चि. सौरभ
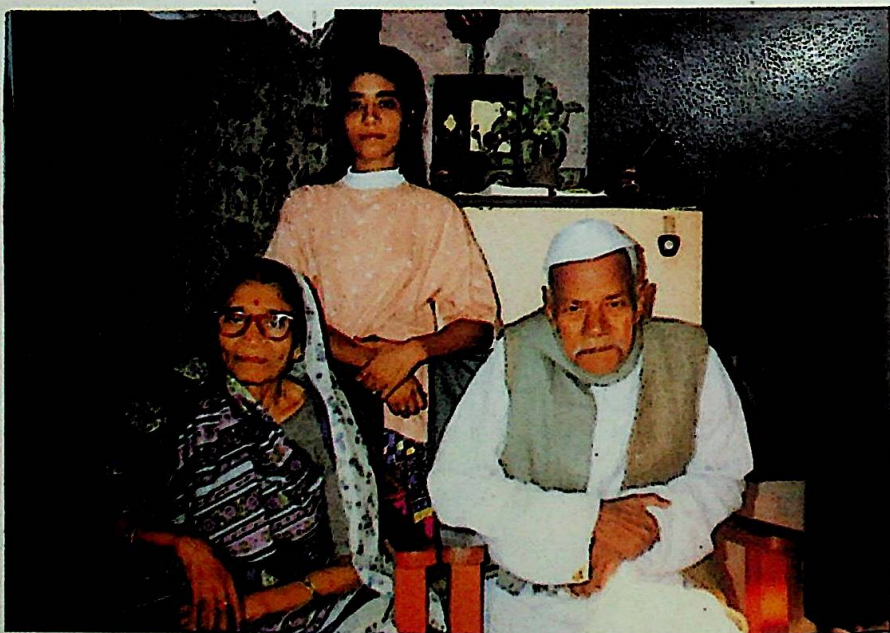
चि. रिनी अपने नानाजी एवं नानीजी के साथ

प्रधानजी की भगिनी श्रीमती सुशीला देवी, पतिदेव श्री मनोहरलाल वर्मा (वहराइच)

आर्यसमाज टाण्डा के वार्षिकोत्सव पर आयोजित शंका समाधान में, प्रधानजी, पं. शान्तिप्रकाशजी, पं
सत्यमित्रशास्त्री एवं पंडिता डा. प्रज्ञादेवी जी (सन् १९७२)
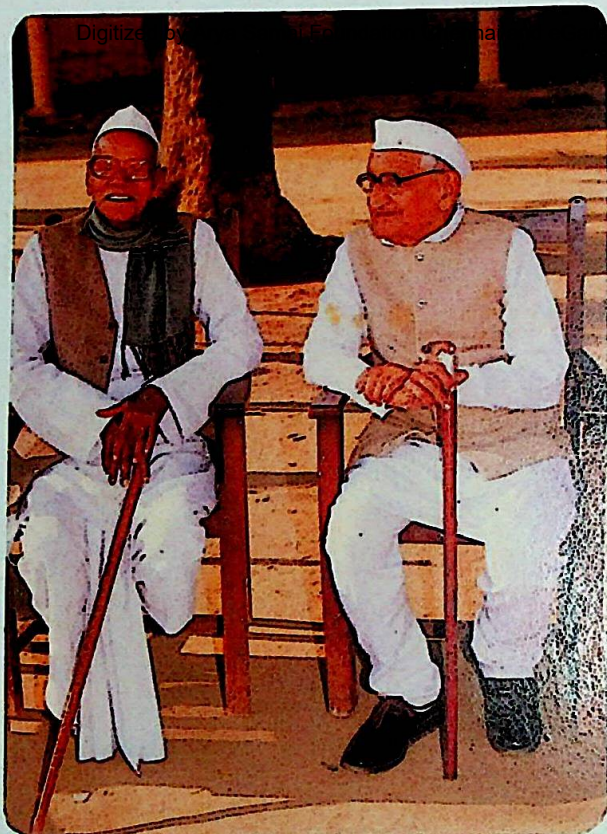
प्रधानजी, श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर (दादू बावू) के साथ प्रसन्न मुद्रा में
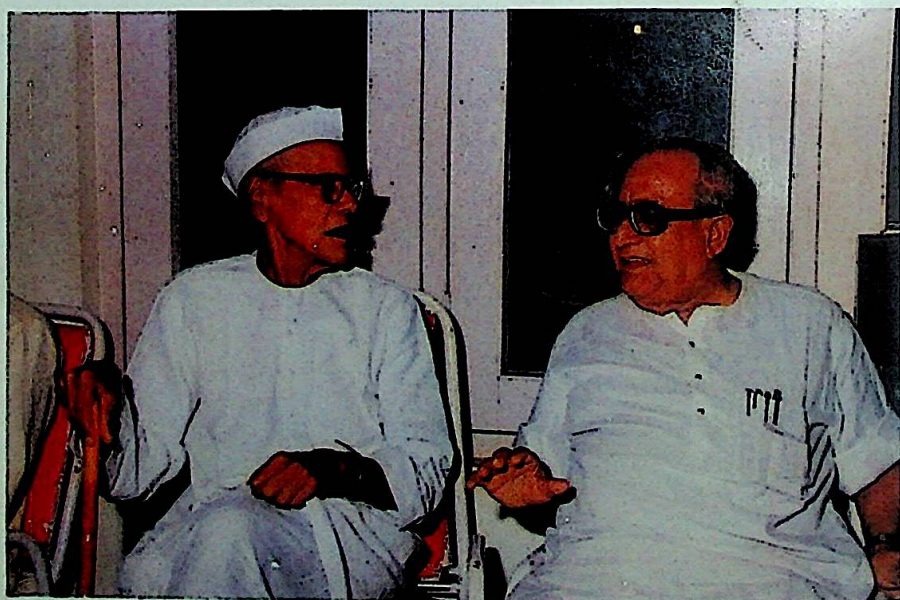
श्री मिश्रीलालजी, श्री यतिन चक्रवर्ती (मन्त्री - पश्चिम बंगाल सन् १९८७ ई.) के साथ

आर्यसमाज कलकत्ता शताब्दी समारोह (सन् १९८५) के अवसर पर प्रदर्शनी में महर्षि दयानन्द सरस्वती के वस्तुओं का निरीक्षण करते हुये
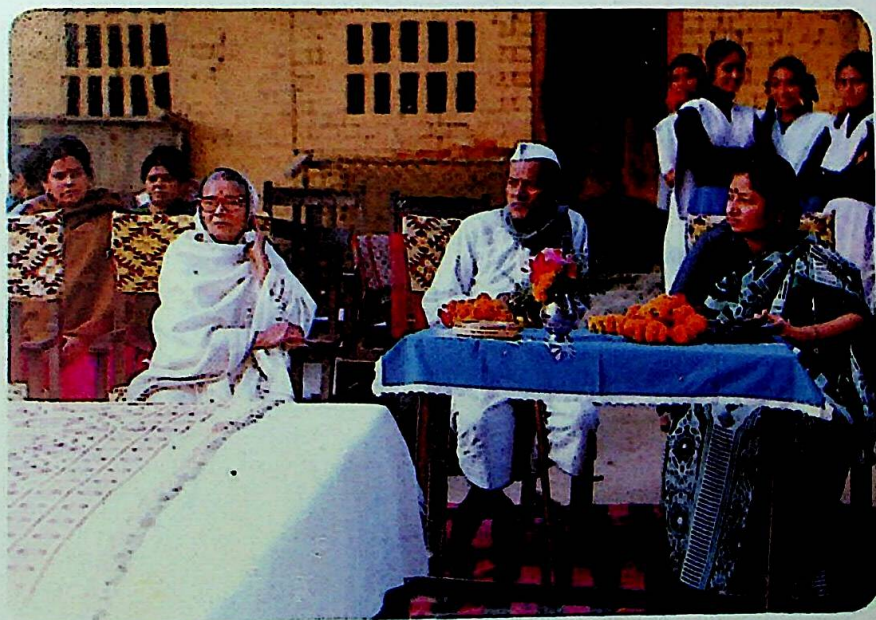
पुरस्कार वितरण के अवसर पर प्रवन्धक, श्री मिश्रीलालजी मण्डलीय बालिका विद्यालय निरीक्षिका के साथ
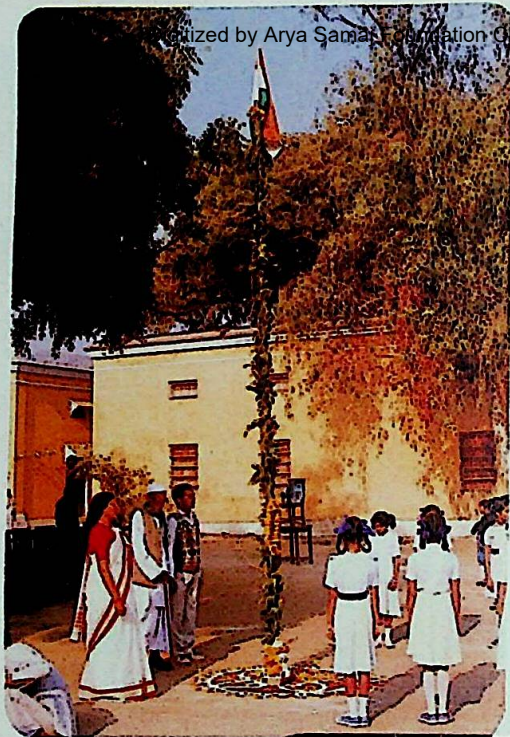
गणतन्त्र-दिवस (२६ जनवरी १९९०) पर
ध्वजारोहण करते हुये प्रबन्धक श्री मिश्रीलालजी आर्य
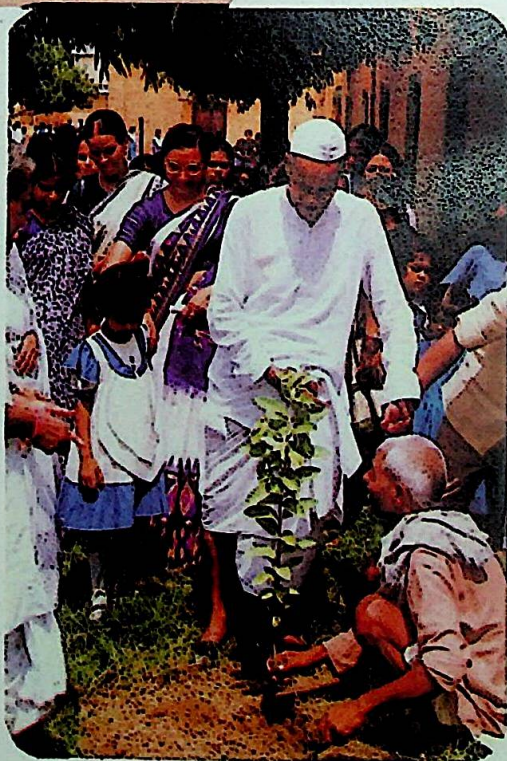
कालेज प्रांगण में प्रबन्धकजी द्वारा बृक्षारोपण का दृश्य

श्रीमती गुणवती ग्रोवर (भूतपूर्व प्राचार्या आर्यकन्या इन्टरकालेज) के साथ बैठी हुई श्रीमती रामप्यारी देवी एवं प्रबन्धकजी तथा श्रीरामबहोर मौर्य, पं. त्रियुगीनारायणलालजी पाठक एवं श्रीरामसूरत मौर्य श्री मिश्रीलालजी, धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी के साथ
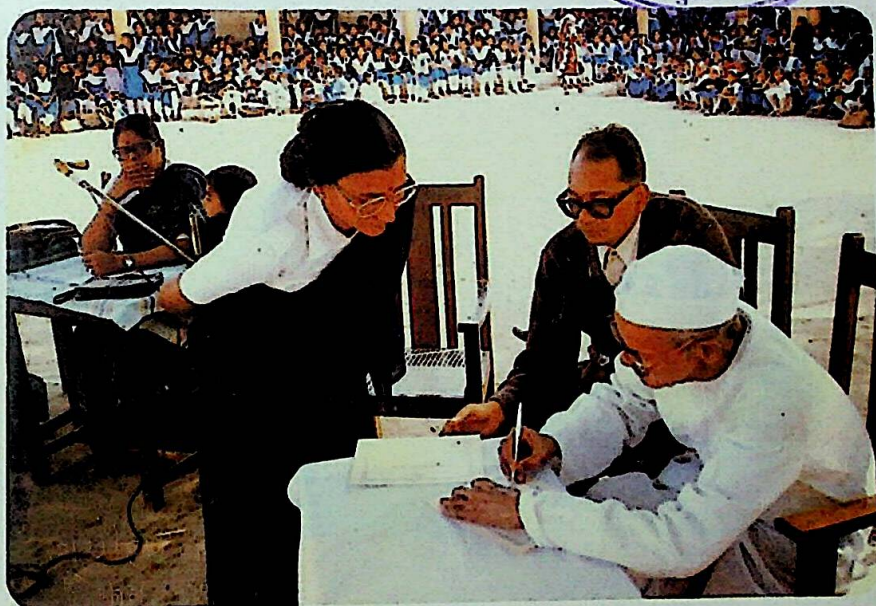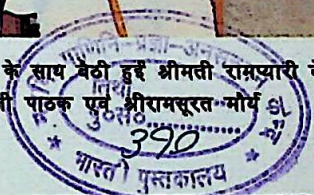
विद्यालय में आयोजित गाइड-शिविर के प्रमाण-पत्रों पर हस्ताक्षर करती हुई प्राचार्या कु. बीना वर्माजी। साथ में विद्यालय कमेटी के प्रतिष्ठित सदस्य श्री पुरुषोत्तम दास खेमानी परिलक्षित हैं।

टाण्डा नगर के मसीहा श्री मिश्रीलालजी आर्य नागरिकों की जनसभा में समस्त हिन्दू-मुस्लिम बन्धुओं को भाई-चारे का बोध कराते हुये
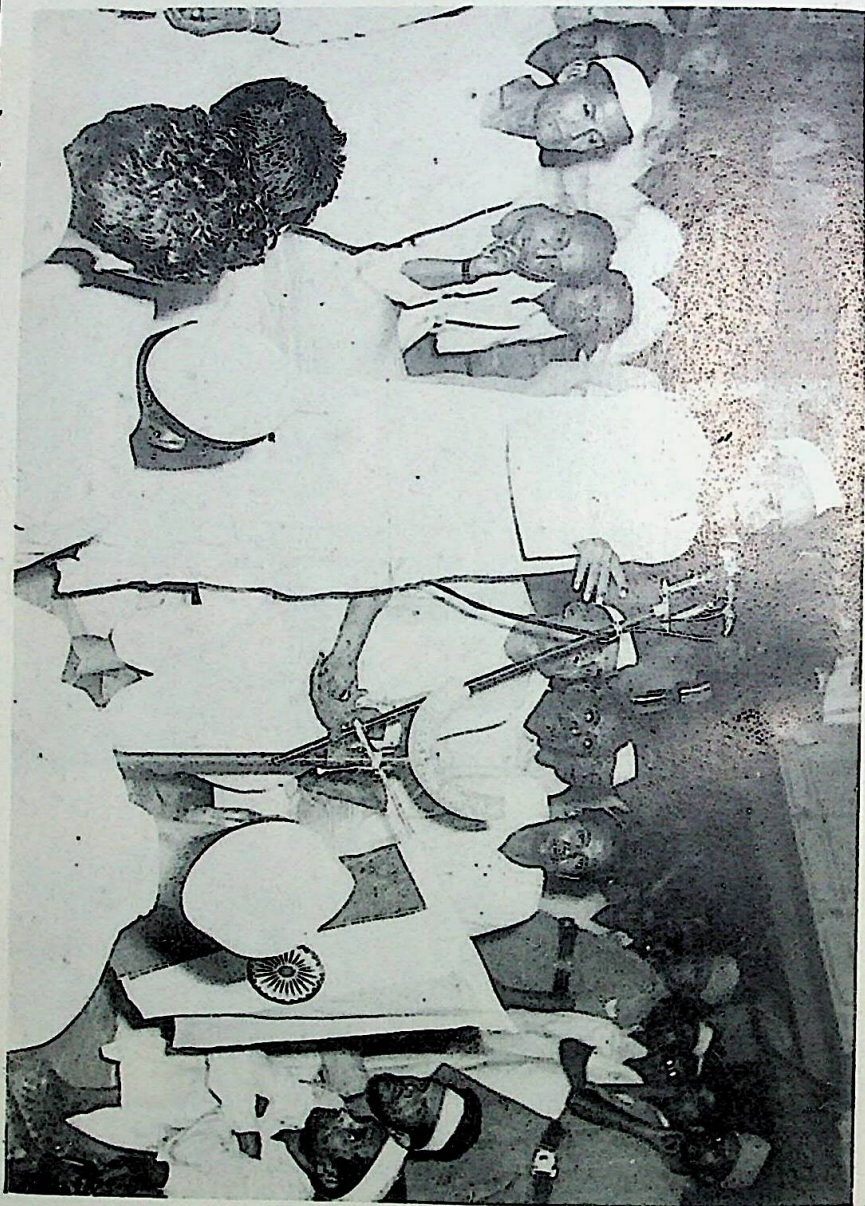
कनिष्ठ पुत्र डा. नरेन्द्रकुमार से विवाहोपलक्ष पर बाबू मिश्रीलालजी के साथ परिलक्षित हैं सर्वश्री पी.पी. लहड़ी (एडवोकेट), श्री जगन्नाथ प्रसाद चौधरी (टापाधारी), श्री रामचन्द्र आजाद (एम.एल.ए.), श्री निसार अहमद, श्री युनुस अहमद, श्री सीताराम आर्य, श्री हरिकिशोर एवं डा. नरेन्द्रकुमारजी (सन् १९७३)

भाव-भीनी विदाई
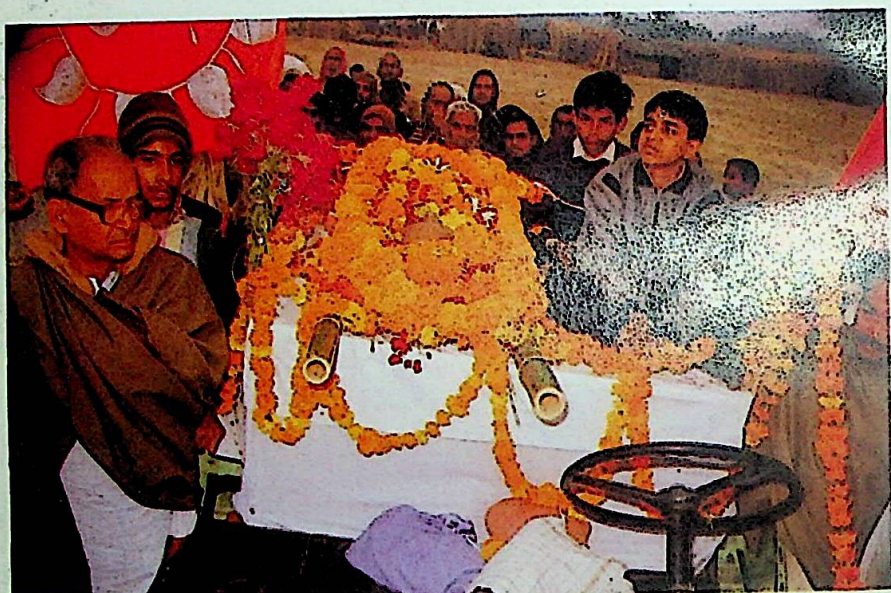
अंतिम यात्रा

वैदिक आदर्शों पर आधारित सम्पूर्ण जीवन जीने वाले महापुरुष श्री मिश्रीलालजी आर्य, ऋषि के अनन्य भक्त, सादा-जीवन, उच्च-विचार के पोषक, कर्त्तव्य निष्ठ, कर्मवीर की दिनांक २८ दिसम्बर १९९० के प्रातः ११ बजे प्रभु-भक्ति में लीन कष्टरहित जीवनलीला अकस्मात् समाप्त हुई और परमपिता परमेश्वर की गोद में चले गये। ऐसे मनीषी के चरणों में सश्रद्ध श्रद्धान्जली।